

परिम्रहण सं । १२३६०

प्रम्थालय, के व ति रि। संस्थान

सारमाम, बारामसी



TO

HIS HOLINLSS SRI JAGADOURU SRI SACHCHIDANANDA SIVABHINAVA

NRISIMHA BHARATI SWAMI

WHO ADORNS THE THRONE OF THE SRINGERI MUTT

15 THE WORTH: RI PRESENLATIVE OF THE

(RFAI SANKARACH IRI A

AND

THAN WHOM IT IS IMPOSSIBLE

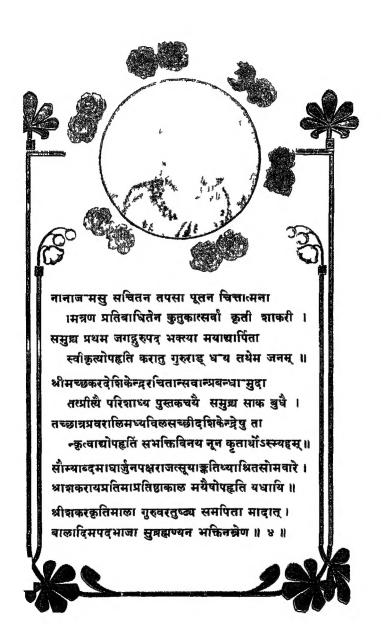
TO COMP ACROSS A HOLIER PERSONAGE
A TRUER MAHATMA A NOBLER SAINT
AND A WORF RICOROUS ASCITIC

THIS PRITION IS MOST RESPECTIVELY INSCRIBED
AS A TOKEN OF UNBOUNDED ADMIRATION
BY THE HUMPLEST OF ALL HIS DISCIPLES

T K BALASUBRAHMANYAM

1

3





	Page
Vishnu Ştotras	1
MISCELLANEOUS STOTRAS	70
LALITA TRISATISTOTRA BHASHYA	161

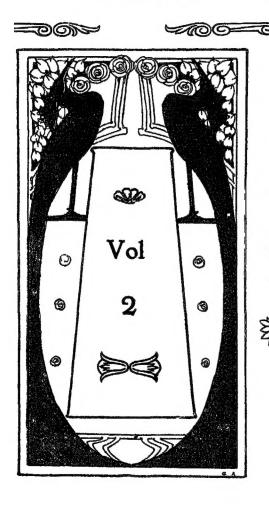




	वृष्ठम्
विष्णुस्तोत्राणि	8
सकीर्णस्तोत्राणि	৩০
ललितात्रिशतीस ्तो त्रभाष्यम्	१६१







॥श्री ॥

॥ विषयानुकमणिका ॥ —→→≫**∞+>>-



	पृष्ठम्
ह नुमत्प ञ्चरत्नम्	٤
श्रीरामभुजगप्रयातस्तोत्रम्	ą
लक्ष्मीनृसिंहपञ्चरत्नम्	११
ल्रह्मीनृसिंहकरुणारसस्तोत्रम्	१३
श्रीविष्णुभुजगप्रयातस्तोत्रम्	१८
विष्णुपादादिकेशान्तस्तोत्रम्	२२
पाण्डुरङ्गाष्ट्रकम्	३६
अच्युताष्ट्रकम्	३९
कृष्णाष्ट्रकम्	४२
हरिस्तुति	84
गोविन्दाष्टकम्	५६
भगवन्मानसपूजा	५९
मोह्मुद्रर	६२
कनकथारास्तोत्रम्	90
अञ्जपूर्णीष्टकम्	હ ધ

[२]

मीनाक्षीप चरत्नम्	७९
मीनाक्षीस्तोत्रम्	८१
दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्	78
कालभैरवाष्ट्रकम्	८९
नर्मदाष्टकम्	९२
यमुनाष्ट्रकम्	९५
यमुनाष्ट्रकम्	९८
गङ्गाष्ट्रकम्	१०१
मणिकर्णिकाष्टकम्	१०४
निर्गुणमानसपूजा	१०७
प्रात सारणस्तोत्रम्	११२
जगन्नाथाष्ट्रकम्	११४
षद्पदीस्तोत्रम्	११७
भ्रमराम्बाष्टकम्	११९
शिवप ऋाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम्	१२२
द्वादशिक्कस्तोत्रम्	१३०
अर्धनारीश्वरस्तोत्रम्	१३४
शारदाभुजगप्रयाताष्ट्रकम्	१३७
गुर्वष्टकम्	१४०
काशीप ख कम्	१४३





॥ श्रीमहाविष्णुः ॥

॥ हनुमत्पञ्चरत्नम् ।

Sourishunker Sanerivala

वीताखिलविषयेच्छ

जातानन्दाश्रुपुलकमलक्छम् ।

सीतापतिदूताद्य

वांतात्मजमद्य भावये हृश्यम् ॥ १ ॥

तरुणारुणमुखकमल करुणारसपूरपूरिसापाक्रम् । सजीवनमाशासे

मजुलमहिमानमजनाभाग्यम् ॥ २

शम्बरवैरिशरातिगसम्बुजद्छविपुछछोचनोदारम् ।
कम्बुगलमनिछदिष्ट
विम्बज्बिछितोष्ठमेकमवछम्वे ॥ ३ ॥
९ ९ ॥ 1

द्रीकृतसीताति
पकटीकृतरामवैभवस्फूर्ति ।
दारितदशमुखकीर्ति
पुरतो मम भातु इनुमतो मृर्ति ।। १ ॥

वानरनिकराध्यक्ष दानवकुळकुमुदरविकरसदृक्षम् । दीनजनावनदीक्ष पवनतप पाकपुष्जमद्राक्षम् ॥ ५ ॥

एतत्पवनसुतस्य स्तोत्र य पठित पश्चरत्नाख्यम्। चिरमिह निखिळान्भोगा न्सुङ्क्तवा श्रीरामभक्तिभाग्भवति॥ ६॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ हनुमत्पञ्चरत्न सपूर्णम् ॥

॥ श्री ॥

॥ श्रीरामभृष्टंप्रध्यातस्तोलम् ॥

विशुद्ध पर सिषदानन्दरूप
गुणाधारमाधारहीन वरेण्यम् ।
महान्त विभान्त गुहान्त गुणान्त
मुखान्त स्वय धाम राम प्रपणे ॥ १ ॥

शिव नित्यमक विभु तारकाख्य

सुखाकारमाकारशून्य सुमान्यम् ।

महेश कलेश सुरेश परेश

नरेश निरीश महीश प्रपर्थे ॥ २ ॥

यदावर्णयत्कर्णमूळेऽन्तकाले शिवो राम रामेति रामेति काश्याम् । तदेक पर तारकबद्धारूप भजेऽह भजेऽह भजेऽह भजेऽहम् ॥ ३ ॥ महारत्नपीठे शुभे कल्पमूछे सुखासीनमादित्यकोटिप्रकाशम् । सदा जानकीलक्ष्मणोपेतमेक सदा रामचन्द्र भजेऽह भजेऽहम् ॥ ४ ॥

कणद्रत्नमः जीरपादारिवन्दः

लसन्मेखलाचारुपीताम्बराह्यम् ।

महारत्नहारोहसस्कौरतुभाङ्गः

नदम्बन्धरीमः जरीलोलमालम् ॥ ५ ॥

खसचित्रकारमेरकोणाघराभ समुद्यत्पतङ्गेन्दुकोदिप्रकाशम् । नमद्रवारद्रादिकोटीररक्न स्फुरत्कान्तिनीराजनाराधिताङ्घिम् ॥ ६ ॥

पुर प्राष्ठिनाष्ठनेद्यादिभक्ताः

न्खिचिन्मुद्रया भद्रया बोधयन्तम् ।

भजेऽह भजेऽह सदा रामचन्द्र

त्वदन्य न मन्ये न मन्ये न मन्ये ॥ ७॥

यदा मत्समीप क्रतान्त समेख प्रचण्डप्रकोपैभेटैर्भीषयेन्माम् । तदाविष्करोषि त्वदीय स्वरूप सदापत्प्रणाश सकोदण्डवाणम् ॥ ८ ॥

निजे मानसे मन्दिरे सनिधेहि

प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ।

ससौमित्रिणा कैकयीनन्दनेन

स्वज्ञक्यानुभक्या च समेव्यमान ॥ ९ ॥

स्वभक्ताश्रगण्ये कपीशैर्महीशैरनीकैरनकैश्च राम प्रसीद ।
नमस्ते नमोऽस्त्वीश राम प्रसीद
प्रशाधि प्रशाधि प्रकाश प्रभो माम् ॥ १०॥

त्वमेवासि दैव पर मे यदेक

सुचैतन्यमेतत्त्वदन्य न मन्ये ।

यतोऽभूदमेय वियद्वायुतेजो

जलोट्यीदिकार्य चर चाचर च ॥ ११॥

नम सिवदानन्दरूपाय तस्मै नमो देवदेवाय रामाय तुभ्यम् । नमो जानकीजीवितेशाय तुभ्य नम पुण्डरीकायताक्षाय तुभ्यम् ॥ १२ ॥

नमो भक्तियुक्तानुरक्ताय तुभ्य नम पुण्यपुक्षैकलभ्याय तुभ्यम् । नमो वेदवेद्याय चाद्याय पुसे नम सुन्दरायेन्दिरावल्लभाय ॥ १३ ॥

नमो विश्वकर्त्रे नमो विश्वहर्त्रे नमो विश्वभोक्ते नमो विश्वमात्रे । नमो विश्वनेत्रे नमो विश्वजेत्रे नमो विश्वपित्रे नमो विश्वमात्र ॥ १४ ॥

नमस्ते नमस्त समस्तप्रपञ्च प्रभागप्रयोगप्रमाणप्रवीण । मदीय मनस्त्वत्पद्द्वन्द्वसेवा विधातु प्रवृत्त सुचैतन्यसिद्धये ॥ १५ ॥ शिस्तापि त्वदङ्घिश्वमासङ्गिरेणु प्रसादाद्धि चैतन्यमाधत्त राम । नरस्त्वत्पदद्वनद्वसेवाविधाना-त्सुचैतन्यमेतीति किं चित्रमत्त्व ॥ १६ ॥

पवित्र चरित्र विचित्र त्वदीय

नरा ये स्मरन्त्यन्वह रामचन्द्र ।

भवन्त भवान्त भरन्त भजन्तो

लभन्ते कृतान्त न पश्यन्यतोऽन्ते ॥ १७ ॥

स पुण्य स गण्य शरण्यो ममाय

नरो वेद यो देवचूडामणि त्वाम् ।

सदाकारमेक चिदानन्दरूप

मनोवागगम्य पर धाम राम ॥ १८ ॥

प्रचण्डप्रतापप्रभावाभिभूत
प्रभूतारिवीर प्रभो रामचन्द्र ।
बद्ध ते कथ वर्ण्यतेऽतीव बाल्ये
यतोऽखण्डि चण्डीशकोदण्डदण्डम् ॥ १९ ॥

दशग्रीवसुम सपुत्र समित्र
सिरद्वर्गमध्यस्थरक्षोगणेशम् ।
भवन्त विना राम वीरो नरो वा
सुरो वामरो वा जयेत्कक्षिकोक्याम् ॥ २०॥

सदा राम रामेति रामामृत ते
सदारामभानन्दिनिष्यन्दकन्दम् ।
पिबन्त नमन्त सुदन्त हसन्त
हनूमन्तमन्तभेजे त नितान्तम् ॥ २१॥

सदा राम रामेति रामामृत ते
सदाराममानन्दनिष्यन्दकन्दम् ।
पिचन्नन्वह नन्वह नैव मृत्यो
विभेमि प्रसादादसादात्त्वैव ॥ २२ ॥

असीतासमेतेरकोदण्डमूषे
रसौमित्रिवन्दौरचण्डप्रतापे ।
अल्ड्रेशकालैरसुमीविमेत्रैररामाभिधेयैरल दैवतेर्न ॥ २३ ॥

अवीरासनस्थैरचिनमुद्रिकाढ्यै
रभक्ताश्वनेयादितस्वप्रकाशै ।
अमन्दारमुळैरमन्दारमाळै
। ररामाभिधेयैरळ दैवतैर्न ॥ २४ ॥

असिन्धुप्रकोपैरवन्यप्रतापै रवन्धुप्रयाणैरमन्दस्मिताह्यै । अदण्डप्रवासैरखण्डप्रवोधै ररामाभिधेयैरल दैवतैन ॥ २५॥

हरे राम सीतापते रावणारे खरारे मुरारेऽसुरार परेति । खपन्त नयन्त सदाकालमेव समालोकयालोकयाशेषबन्धो ॥ २६ ॥

नमस्ते सुमित्रासुपुत्राभिवन्य नमस्ते सदा कैकयीनन्दनेड्य । नमस्ते सदा वानराधीशवन्य नमस्ते नमस्ते सदा रामचन्द्र ॥ २७॥ प्रसीद प्रसीद प्रचण्डप्रताप
प्रसीद प्रसीद प्रचण्डारिकालः ।
प्रसीद प्रसीद प्रपन्नानुकम्पिन्
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचनद्र ॥ २८ ॥

भुजङ्गप्रयात पर वेदसार

मुदा रामचन्द्रस्य भक्त्या च नित्यम् ।

पठन्सन्तत चिन्तयन्स्वान्तरङ्ग

स एव स्वय रामचन्द्र स धन्य ॥ २९ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत क्रतौ श्रीरामभुजक्कप्रयातस्तोत्रम् सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ लक्ष्मीनृसिंहपञ्चरत्नम् ॥

त्वत्प्रभुजीविष्ठयमिच्छिसि चेन्नरहिरिपूजा कुरु सतत प्रतिविम्बाङकृतिधृतिकुशङो विम्बाङकृतिमातनुते। चेतोभृङ्ग भ्रमसि वृथा भवमरुभूमौ विरसाया भज भज छक्ष्मीनरिसहानघपदसरिसजमकरन्दम्।।

युक्ती रजतप्रतिभा जाता कटकाद्यर्थसमर्थी चें दु खमयी ते सस्तिरेषा निर्वृतिदाने निपुणा स्यात् । चेतो युक्क भ्रमसि वृथा भवमरुभूमौ विरसाया भज भज लक्ष्मीनरसिंहानचपदसरसिजमकरन्दम् ॥

आकृतिसाम्याच्छास्मिलिकुसुमे स्थलनिलन्त्वभ्रममकरो गन्धरसाविह किमु विद्येते विफल भ्राम्यसि भृशविरसेऽस्मिन्। चेतोभृक्क भ्रमसि वृथा भवमरुभूमौ विरसाया भज भज लक्ष्मीनरसिंहानघपदसरसिजमकरन्दम् ॥ ३ ॥ स्रक्चन्द्नवनितादीन्विषयान् सुखदान्मत्वा तत्र विहरसे गन्धफळीसदृशा नतु तेऽमी भोगानन्तरदु खद्यत स्यु । चेतोभुङ्ग भ्रमसि वृथा भवमकभूमौ विरसाया भज भज छद्दमीनरसिंहानघषदसरसिजमकरन्दम् ॥४॥

तव हितमेक वचन वक्ष्ये शृणु सुखकामो यि सतत स्वप्ने दृष्ट सकल हि सृषा जामित च सार तद्वदिति । चेतोशृङ्ग भ्रमसि वृथा भवमरुभूमौ विरसाया भज भज लक्ष्मीनरसिंहानधपदसरसिजमकरन्दम् ॥५॥

> इति श्रीमत्परमहसपरित्राजकाचायस्य श्रीगोवि दमगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरमगवत कृतौ लक्ष्मीनृसिंहपश्चरत्न सपूर्णम् ॥



॥ लक्ष्मीनृसिंहकरुणारसस्तोत्रम् ॥

श्रीमत्पयोनिधिनिकेतनचक्रपाण भोगीन्द्रभोगमणिराजितपुण्यमूर्ते । योगीश शाश्वतः शरण्य भवाब्धिपोत स्थानुसिंह मम देहि करावस्त्रम्बम् ॥ १ ॥

महोन्द्रसद्रमसदके किरीटकोटि सघट्टिताङ्घिकमछामछकान्तिकान्त । छक्ष्मीछसत्कुचसरोसहराजहस छक्ष्मीनृसिंह मम दहि करावछम्बम् ॥ २ ॥

ससारदावदहताकरभीकरोकज्वालावलीभिरतिदग्धतन्त्रहस्य ।
त्वत्पादपदासरसीकहमागतस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ३ ॥

ससारजारूपिततस्य जगिन्नवास ् सर्वेन्द्रियार्थविद्याग्रम्भवेषपमस्य । प्रोत्कम्पितप्रचुरतालुकमस्तकस्य लक्ष्मीनृसिंह् मम दृष्टि करावलम्बम् ॥ ४ ॥

ससारकूपमितघोरमागधमूल सप्राप्य दु खशतसपैसमाकुलस्य । दीनस्य देव कृपया पदमागतस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ५ ॥

ससारभीकरकरीन्द्रकराभिघात निष्पीड्यमानवपुष सकलार्तिनाश । प्राणप्रयाणभवभीतिसमाकुलस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ६ ॥

ससारसपेविषदिग्धमहोप्रतीत्र
दृष्ट्राप्रकोटिपरिदृष्टविनष्टमूर्ते ।
नागारिवाहन सुधाव्धिनिवास शौरे
स्ट्रहमीनृसिंह मम देहि करावस्तम् ॥ ७ ॥

ससारवृक्षमघबीजमनन्तकर्म-

शास्त्रायुत करणपत्रमनक्रपुष्पम् । ।
आरुद्य दृ सफलित चिकत दयाली
लक्ष्मीनृतिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ८॥

ससारसागरविशालकरालकाल नकप्रहमसितनिप्रह्विप्रहस्य । ज्यमस्य रागनिचयोमिनिपीडितस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ९ ॥

ससारसागरितमज्जनसुद्धमान दीन विलोकय विभी करुणानिधे माम् । प्रह्वादखेदपरिहारपरावतार लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १०॥

ससारघोरगहने चरतो सुरारे मारोप्रभीकरमृगप्रचुर्रावितस्य । भार्तस्य मत्सरनिदाघसुदु खितस्य छक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावछम्बम् ॥ ११ ॥ बद्धा गर्छे यमभटा बहु तर्जयन्त कर्षन्ति यत्र भवपाशशतैर्थुत माम् । एकाकिन परवश चिकत दयाछो स्क्रमीनृसिंह मम देहि करावस्त्रम्बम् ॥ १२ ॥

लक्ष्मीपते कमलनाभ सुरेश विष्णो यज्ञेश यज्ञ मधुसूदन विश्वरूप। ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव लक्ष्मीनृसिह मम देहि करावलम्बम् ॥ १३॥

एकेन चक्रमपरेण करेण शङ्खमन्येन सिन्धुतनयामवलम्ब्य तिष्ठन् ।
वामेतरेण वरदाभयपद्मचिह्न
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १४ ॥

अन्धस्य मे हृतविवेकमहाधनस्य चोरैर्महाबिल्डिभिरिन्द्रियनामधेये । मोहान्धकारकुहरे विनिपातितस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावल्लम्बम् ॥ १५॥ प्रह्वादनारदपराशरपुण्डरीक-व्यासादिभागवतपुगवहित्रवाम । भक्तानुरुक्तपरिपालनपारिजात लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १६ ॥

लक्ष्मीनृसिंहचरणाञ्जमधुत्रतेन स्तोत्र कृत शुभकर भुवि शकरेण। ये तत्पठनित मनुजा हरिमक्तियुक्ता स्ते यान्ति तत्पदसरोजमखण्डरूपम् ॥ १७ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचायस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमञ्जकरभगवत कृतौ स्वस्मीनृसिंहकक्णारसस्तोत्र सपूर्णम् ॥



॥ श्रीविष्णुभुजंगप्रयातस्तोत्रम् ॥

चिद्दश विभु निर्मेल निर्विकल्प निरीह निराकारमोंकारगम्यम । गुणातीतमन्यक्तमेक तुरीय पर ब्रह्म य वेद तस्मै नमस्ते ॥ १ ॥

विशुद्ध शिव शान्तमाद्यन्तशून्य
जगजीवन ज्योतिरानन्दरूपम् ।
अदिग्दशकालव्यवच्छदनीय
श्रेयी वक्ति य वेद तस्मै नमस्तै ॥ २ ॥

महायागपीठे परिश्वाजमाने
धरण्यादितत्त्वात्मके शक्तियुक्त ।
गुणाहस्करे बह्विबिम्बार्धमध्ये
समामीनमोंकणिकेऽष्टाक्षराञ्जे ॥ ३ ॥

समानोदितानेकसूर्येन्दुकोटि-प्रभापूरतुल्यद्युर्ति दुर्निरीक्षम् । न शीत न चाष्ण सुवर्णावदात-प्रसन्न सदानन्दसविस्लक्ष्यम् ॥ ४ ॥

सुनासापुट सुन्दरभ्रू छलाट किरीटो चिताकु व्यवतिस्वग्धकेशम् । स्फुरत्युण्डरीकाभिरामायताक्ष समुत्फुक्करत्नप्रसूनावतसम् ॥ ४॥

लसत्कुण्डलामृष्टगण्डस्थलान्त जपारागचोराघर चारुहासम् । अलिच्याकुलामोदिमन्दारमाल महोरस्कुरत्कौस्तुभोदारहारम् ॥ ६ ॥

सुरत्नाङ्गदैरन्वित बाहुदण्डै-श्रद्धाभिश्रस्तकङ्कणास्कृतामे । उदारीदरास्कृत पीत्रवस्र पद्दहन्द्वनिर्भृतपद्माभिरामम् ॥ ७ ॥ स्वभक्तेषु सर्वाधिताकारमेव सदा भावयन्सनिरुद्धेन्द्रियाश्व । दुराप नरो याति ससारपार परस्मै परेभ्योऽपि तस्मै नमस्ते ॥ ८॥

श्रिया शातकुम्भद्युतिस्त्रिग्धकान्त्या धरण्या च दूर्वोद्छश्यामळाङ्ग्या । कलत्रद्वयेनामुना तोषिताय विळोकीगृहस्थाय विष्णो नमस्ते ॥ ९ ॥

श्रारीर कलत्र सुत बन्धुवर्गे वयस्य धन सद्मा भृत्य सुव च । समस्त परित्रज्य हा कष्टमेको ागिम्ह्यामि दु खेन दूर किलाइम् ॥ १०॥

जरेय पिशाचीव हा जीवतो में वसामत्ति रक्त च मास बळ च । अहो देव सीदामि दीनानुकम्पि निक्रमद्यापि हन्त त्वयोदासितन्यम् ॥ ११ ॥ कफड्याह्तोष्णोत्बणश्वासवेग व्यथाविष्फुरत्सर्वमर्मास्थिवन्धाम् । विचिन्त्याहमन्त्यामसख्यामवस्था विभोमि प्रभो किं करोमि प्रसीद् ॥ १२ ॥

स्रपद्मच्युतानन्त गोविन्द विष्णो सुरारे हरे नाथ नारायणेति । यथानुसारिष्यामि भक्त्या भवन्त तथा मे दयाशील देव प्रसीद ॥ १३ ॥

भुजगप्रयात पठेशस्तु भक्त्या समाधाय चित्ते भवन्त मुरारे। स मोह विहायाशु युष्मत्प्रसादा त्समाश्रित्य योग व्रजलच्युत त्वाम्॥ १४॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभग वत्पूज्यपादिशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ श्रीविष्णुभुजगप्रयातस्तोत्र सपूर्णम् ॥

॥ विष्णुपादादिकेशान्तस्तोत्रम् ॥

लक्ष्मीभर्तुर्भुजामे कृतवसित सित यस्य रूप विशाल नीलाद्रेस्तुङ्गशङ्गस्थितमिव रजनीनाथविम्ब विभाति । पायान पाञ्चजन्य स दितिसुतकुलत्रासनै पूरयन्स्वै निश्वानैनीरदौषध्वनिपरिभवदैरम्बर कम्बुराज ॥ १ ॥

आहुर्यस्य स्वरूप क्षणमुखमिखल सूरय कालमेत ध्वान्तस्यैकान्तमन्त यदिप च परम सर्वधाम्ना च धाम । चक्र तक्षक्रपाणेर्दितिज्ञतनुगलद्रक्तधाराक्तधार श्रमको विश्ववन्द्य वितरतु विपुल शर्म धर्मीशुशोभम् ॥

भव्यानिर्घातघोरो हरिसुजपवनामर्शनाध्मातमूर्ते
रस्मान्त्रिस्मेरनेत्रत्रिदशतुतिवच साधुकारै सुतार ।
सर्वे सहर्तुमिच्छोररिकुछसुवन स्फारविष्फारनाद
सयत्कल्पान्तसिन्धौ शरसिछछघटावार्सुच कार्सुकस्य ॥

जीमूतश्यामभासा सुहुरिप भगवद्वाहुना मोहयन्ती
युद्धेष्द्व्यमाना झिटिति तटिदिवालक्ष्यते यस्य मूर्ति ।
सोऽसिखासाकुलाक्षत्रिदशरिपुवपु शोणितास्वादतृप्तो
नित्यानन्दाय भूयान्मधुमथनमनोनन्दनो नन्दको न ॥

कम्राकारा मुरारे करकमलतलेनानुरागाहृहीता सम्यग्वृत्ता स्थिताम सपिद न सहते दर्शन या परेषाम् । राजन्ती दैस्यजीवासवमद्मुदिता लोहितालेपनार्द्रा काम दीप्राशुकान्ता प्रदिशतु दियतेवास्य कौमोदकी न ॥

यो विश्वप्राणमृतस्तनुरिप च हरेर्यानकेतुस्वरूपो य सचिन्त्यैव सद्य स्वयमुरगवधूवर्गगर्भा पतन्ति । चश्चचण्डोरुतुण्डत्रुटितफणिवसारकपङ्काङ्कितास्य वन्दे छन्दोमय त स्वगपतिममस्रस्वर्णवर्ण सुप्णम् ॥ ६॥

विष्णोर्विश्वेश्वरस्य प्रवरशयनक्रत्सर्वलोकैकधर्ता सोऽनन्त सर्वभूत पृथुविमलयशा सर्ववेदैश्च वेदा । पाता विश्वस्य शश्वत्सकलसुररिपुध्वसन पापहन्ता सर्वज्ञ सर्वसाक्षी सकलविषभयात्पातु भोगीश्वरो न ॥ वाग्भूगौर्यादिभेदैविदुरिह मुनयो या यदीयेश्च पुसा कारुण्यार्द्रे कटाक्षे सक्तदिप पतिते सपद स्यु सममा । कुन्देन्दुस्वच्छमन्दस्मितमधुरमुखान्भोरुहा सुन्दराङ्गी वन्दे वन्द्यामशेषैरिप मुरभिदुरोमन्दिरामिन्दिरा ताम् ॥

या सूते सत्त्वजाल सकलमि सदा सिनधानेन पुसो धत्ते या तत्त्वयोगाश्चरमचरिमद भूतये भूतजातम् । धात्रीं स्थात्रीं जनित्रीं प्रकृतिमिवक्कितिं विश्वशक्तिं विधासीं विष्णोविश्वात्मनस्ता विपुलगुणमर्यी प्राणनाथा प्रणौिम ॥

येभ्योऽसूयद्भिष्यै सपिद पदमुक त्यव्यते दैत्यवर्गै-र्येभ्यो धर्तु च मूर्प्रो स्प्रह्यित सतत सर्वगीर्वाणवर्ग । नित्य निर्मूळयेयुर्निचिततरममी भक्तिनिच्चात्मना न पद्माक्षस्याङ्घिपद्मद्वयतळनिळ्या पासव पापपद्भम् ॥

रेखा छेखादिवन्याश्चरणतल्याताश्चक्रमत्स्यादिक्तपा

हिनग्धा सूक्ष्मा सुजाता मृदुल्लिततरक्षोमसूत्रायमाणा ।

दशुनी मङ्गलानि भ्रमरभरजुषा कोमलेनाव्धिजाया

कभ्रेणाम्नेड्यमाना किसल्यमृदुना पाणिना चक्रपाणे ॥

यस्मादाकामतो चा गरुडमणिशिलाकेतुदण्डायमाना दाइच्योतन्ती बभासे सुरसरिदमला वैजयन्तीव कान्ता । भूमिष्ठो यस्तथान्यो सुवनगृहबृहत्स्तम्भशोभा दधौ न पातामेतौ पयोजोदरलिलतलौ पङ्कजाक्षस्य पादौ ॥

आक्रामद्भया त्रिलोकीमसुरसुरपती तत्क्षणादेव नीतौ याभ्या वैरोचनीन्द्रौ युगपद्पि विपत्सपदोरेकधाम । ताभ्या ताम्रोदराभ्या सुहुरहमजितस्याश्विताभ्यासुभाभ्या प्राज्येश्वर्यप्रदाभ्या प्रणतिसुपगत पादपङ्केरहाभ्याम् ॥

येभ्यो वर्णश्चतुर्थश्चरमत उद्भूदादिसग प्रजाना साहस्री चापि सरया प्रकटमभिहिता मर्ववेदेषु येषाम् । प्राप्ता विश्वभरा यैरतिवितततनोर्विश्वमूर्तेर्विराजो विष्णोस्तेभ्यो महत्त्व सततमपि नमोऽस्त्विङ्कपङ्केरहेभ्य ॥

विष्णो पादद्वयात्रे विसल्जनखमणिश्चाजिता राजते या राजीवस्येव रम्या हिमजलकणिकालकृतामा दलाली । अस्माक विस्मयाहीण्यखिलजनमन प्रार्थनीया हि सेय द्यादाद्यानवद्या ततिरतिकचिरा मङ्गलान्यङ्गुलीनाम् ॥ यस्या द्रष्ट्वामलाया प्रतिकृतिममरा सभवन्त्यानमन्त सेन्द्रा सान्द्रीकृतेर्व्यास्त्वपरसुरकुलाशक्क्ष्यातक्कवन्त । सा सद्य सातिरेका सकलसुलकरी सपद साधयेन अञ्चलावैश्चका चरणनलिनयोश्रक्कपाणेनेखाली ॥

पादाम्भोजन्मसेवासमवनतसुरब्रातभास्वित्करीट-प्रत्युप्तोचावचादमप्रवरकरगणैश्चित्रित यद्विभाति । नम्राङ्गाना हरेनों हरिदुपल्लमहाकूर्मसौन्दर्यहारि-च्छाय श्रेय प्रदायि प्रपद्युगसिद प्राप्तस्पापमन्तम् ॥

श्रीमस्मै चारुवृत्ते करपरिमल्जानन्दहृष्टे रमाया सौन्दर्भाक्कोन्द्रनीलोपलरिचतमहादण्डयो कान्तिचोरे। सूरीन्द्रे स्तूयमाने सुरकुलसुखदे सूदितारातिसघे जङ्को नारायणीये सुहुरपि जयत्तामस्मदहो हरन्स्मै।।

सम्यक्साह्य विधातु समित्र सतत जङ्खयो खिन्नयोर्थे भारीभूतोत्रदण्डद्वयभरणकृतोत्तम्भभाव भजेते। चित्तावर्शे निधातु महितमिव सता ते समुद्रायमान वृत्ताकारे विधता हृदि मुद्मजितस्थानिश जानुनी न ॥ देवो भीति विधातु सपिद विद्धतौ कैटभाष्य मधु चा प्यारोप्यारूढगर्वाविधजल्लिध ययोरादिदेखौ जघान । वृत्तावन्योन्यतुल्यौ चतुरमुपचय विभ्रतावभ्रनीला वृक्त चाक्त हरेस्तौ मुदमतिशयिनीं मानस नो विधन्ताम्॥

पीतेन ग्रोतते यञ्चतुरपिरिहतेनाम्बरेणात्युद्रार जातालकारयोग जल्लीव जल्लघेबीडवाग्निप्रभाभि । एतत्पातित्यदान्नो जघनमतिघनाटेनसो माननीय सातत्येनैव चेतोविषयमवतरत्पातु पीताम्बरस्य ॥ २१ ॥

यस्या दाम्ना त्रिधामो जघनकालितया भ्राजतेऽङ्ग यथाब्धे-मेध्यस्थो मन्दराद्रिभुजगपतिमहाभागसनद्धमध्य । काश्वी सा काश्वनाभा मणिवरिकरणैरुक्कसद्भि प्रदीप्ता कल्या कल्याणदात्री मम मतिमनिश कम्रह्रपा करोतु ॥

उन्नम्न कन्नमुचैरुपचितमुद्दभूदात्र पत्नैर्तिचित्रै
पूर्व गीर्वाणपूज्य कमळजमधुपस्यास्पद् तत्पयोजम् ।
यस्मिन्नीलाइमनीलैस्तरलक्चिजलै पूरिते केलिबुद्धवा
नालीकाक्षस्य नाभीसरसि वसतु नश्चित्तहसक्षिराय ॥

पाताल यस्य नाल वलयमि दिशा पत्रपङ्किनिगेन्द्रा-न्विद्वास केसरालीविंदुरिह विपुला कर्णिका स्वर्णशैलम् । भूयाद्रायत्स्वयभूमधुकरभवन भूमय कामद नो नालीक नाभिपद्माकरभवसुरु तन्नागशय्यस्य शौरे ॥

भादौ कल्पस्य यस्मात्त्रभवति वितत विश्वमेतद्विकल्पै कल्पान्ते यस्य चान्त प्रविश्वति सकल स्थावर जङ्गम च । भारान्ताचिन्त्यमूर्तेश्चिरतरमजितस्यान्तिस्थिस्वरूपे तस्मिश्रस्माकमन्त करणमतिमुदा क्रीडतात्कोडभागे ॥

कान्त्यम्भ पूरपूर्णे लसदिसतवलीभङ्गभास्वत्तरङ्गे गम्भीराकारनाभीचतुरतरमहावर्तशोभिन्युदारे । क्रीडत्वानद्वहेमोदरनहनमहाबाडवाग्निप्रभाक्ये काम दामोदरीयोदरसलिलनिधौ चित्तमत्स्यश्चिर न ॥

नाभीनालीकमूलादधिकपरिमलोनमोहितानामलीना माला नीलेव यान्ती स्फुरति रुचिमती वक्त्रपद्मोन्मुखी या। रम्या सा रोमराजिमहितरुचिकरी मध्यभागस्य विष्णो-श्चित्तस्था मा विरसीचिरतरमुचिता साधयन्ती श्रीय न ॥ सस्तीर्ण कौस्तुभाशुप्रसरिकसल्यैर्भुग्धमुक्ताफलाड्य श्रीवत्सोल्लासि फुल्लप्रतिनववनमालाङ्कि राजद्भुजान्तम् । वक्ष श्रीवृक्षकान्त मधुकरिनकरश्यामल शार्ङ्गपाणे ससाराध्वश्रमार्तैरुपवनिमव यत्सेवित तत्प्रपर्ये ॥ २८ ॥

कान्त वक्षो नितान्त विद्धिदिव गळ काळिमा काळशत्रो रिन्दोविम्ब यथाङ्को मधुप इव तरोर्म अर्री राजत य । श्रीमान्नित्य विधेयादाविर छमिळित कौस्तुभश्रीप्रताने श्रीवत्स श्रीपत स श्रिय इव द्यितो वत्स उसे श्रिय न ॥

सभूयाम्भोधिमध्यात्सपिद महजया य श्रिया सिनधत्ते नीले नारायणोर स्थलगगनतले हारतारोपसेन्ये। भाशा सर्वा प्रकाशा विद्धद्विद्धात्मभासान्यतेजा स्याश्चर्यस्याकरो नो धुमणिरिव मणि कौरतुभ सोऽस्तुभूत्ये॥

या वायावानुकूल्यात्सरित मणिरुचा भासमाना समाना साक साकम्पमसे वसित विद्धती वासुभद्र सुभद्रम् । सार सारङ्गसचैमुंखरितकुसुमा मेचकान्ता च कान्ता माला मालालितास्मान्न विरमतु सुखैर्योजयन्ती जयन्ती॥ हारस्योरुप्रभामि प्रतिनवननमालाशुभि प्राशुरूपै
श्रीभिश्चाप्यक्षदाना कबलितरुचि यक्षिष्कभाभिश्च माति।
बाहुस्येनैन बद्धाः अलिपुटमजितस्याभियाचामहे त
द्वन्धार्ति बाधता नो बहुविहतिकरीं बन्धुर बाहुमूलम्।।

विश्वत्राणैकदीक्षास्तदनुगुणगुणक्षत्रनिर्माणदक्षा कर्तारो दुनिरूपस्फुटगुणयशसा कर्मणामद्भुतानाम् । शाङ्गे बाण कृपाण फलकमरिगदे पद्मशङ्कौ सहस्र विश्राणा शस्त्रजाल मम दघतु हरवाहवो मोहहानिम् ॥

कण्ठाकरपोद्गतैर्य कनकमयलसःकुण्डलोत्थेवदारे रुद्योते कौरतुभस्याप्युक्तिकपचितश्चित्रवर्णो विभाति । कण्ठाऋषे रमाया करवलयपदैर्मुद्रिते भद्रक्षपे वैकुण्ठीयेऽत्र कण्ठे वसतु मम मति कुण्ठभाव विहाय ॥

पद्मानन्दप्रदाता परिलसद्रुणश्रीपरीताप्रभाग काले काले च कम्बुप्रवरश्शधरापूरणे य प्रवीण । वक्काकाशान्तरस्थास्तिरयति नितरा दन्ततारौषशोभा श्रीभर्तुदेन्तवासोसुमणिरघतमोनाशनायास्त्वसौ न ॥ नित्य स्तेहातिरेकाञ्चिककमितुरल विप्रयोगाक्षमा या वक्त्रेन्दोरन्तराले कृतवसतिरिवाभाति नक्षत्रराजि । लक्ष्मीकान्तस्य कान्ताकृतिरतिविल्लसन्मुग्धमुक्तावलिशी-र्वन्ताली सतत सा नतिनुतिनिरतानक्षतान्रक्षतात्र ॥

त्रह्मन्त्रह्मण्यिज्ञह्मा मितमिप कुरुषे देव सभावये त्वा शभो शक त्रिलोकीमविस किममेरैर्नारदाचा सुख व । इत्थ सेवावनम्र सुरसुनिनिकर वीक्ष्य विष्णो प्रसन्न स्यास्येन्दोरास्रवन्ती वरवचनसुधाह्वाद्येन्मानस न ॥

कर्णस्थलणेकम्रोज्ज्वलमकरमहाकुण्डलमोतदीयय नमाणिक्यश्रीप्रताने परिमिलितमलिदयामल कोमल यत्। प्रोद्यत्सूर्यीशुराजन्मरकतमुकुराकारचोर मुरारे गाँदामागामिनीं न शमयतु विपद गण्डयोर्मण्डल तत्॥

वक्साम्भोजे छसन्त मुहुरधरमणि पक्कविम्बाभिराम
दृष्ट्वा दृष्टु शुकस्य स्फुटमवतरतस्तुण्डदण्डायते य ।
घोण शोणीकृतात्मा श्रवणयुग्गछसत्कुण्डछोस्रीर्भुरारै
प्राणाक्ष्यस्यानिष्ठस्य प्रसरणसर्णि प्राणदानाय न स्यात् ॥

दिकालौ नेदयन्तौ जगित मुहुरिमौ मचरन्तौ रवीन्दू त्रैलोक्यालोकदीपावभिद्यति ययोरेव रूप मुनीन्द्रा । अस्मानब्जप्रभे ते प्रचुरतरक्रपानिर्भर प्रेक्षमाणे पातामाताम्रशुक्तासितरुचिरचिरे पद्मनेत्रस्य नेत्रे ॥४०॥

पातात्पातालपातात्पतगपतिगतेर्भूयुग सुप्तमध्य येनेपचालितेन स्वपदानियमिता सासुरा देवसमा । नृत्यक्षालाटरङ्गे रजनिकरतनारर्धसण्डावदाते कालव्यालद्वय वा विलमति समया वालिकामातर न ॥

ळक्ष्माकारालकालिस्फुरदिलकशशाङ्कार्धसदर्शमील-त्रेत्राम्भोजप्रवोधोत्सुकिनभृततरालीनभृज्ञच्छटाभ । ळक्ष्मीनाथस्य लक्ष्यीकृतविद्युधगणापाङ्गवाणासनार्ध-च्छाये नो भूरिभूतिप्रसवकुशलते भ्रूलते पालयेताम् ॥

रूश्वसारश्चचापच्युतशरितकरश्चीणलक्ष्मीकटाश्च-प्रोत्फुल्लत्यसमलाविलसितमहितस्फाटिकेशानलिक्कम । भूयाद्भूयो विभूत्ये सम सुवनपतेभ्रूलताह्वन्द्वसध्या दुत्थ तत्पुण्ड्रसूर्ध्वे जनिमरणतम खण्डन सण्डन च ॥ पीठीभूतालकान्त कृतमकुटमहादेवलिङ्गप्रतिष्ठे लालाटे नाट्यरङ्गे विकटतरतटे कैटभारेश्चिराय। प्रोद्धाट्यैवात्मतन्द्रीप्रकटपटकुटीं प्रस्फुरन्ती स्फुटाङ्ग पट्टीय भावनारया चटुलमितनटी नाटिका नाटयेत्र॥

मालालीवालिधाम कुवलयकिता श्रीपते कुन्तलाली कालिन्दारुख मूर्झो गलित हराशिर स्वर्धुनीस्पर्धया नु । राहुवी याति वक्त्र सकलशशिकलाभ्रान्तिलोलान्तरात्मा लोकैरालोक्यते या प्रदिशतु मतत साखिल मङ्गल न ॥

सुप्ताकारा प्रसुप्ते भगवति विज्ञुधैरप्यदृष्टस्वरूपा व्याप्तव्योमान्तरालास्तरलमणिकचा रिक्तिता स्पष्टभास । देहच्छायोद्गमाभा रिपुवपुरगक्प्पोषरोषाग्निधूम्या केशा केशिद्विषो नो विद्धतु विपुलक्ष्टेशपाशप्रणाशम् ॥

यत्र प्रत्युप्तरत्नप्रवरपरिलसद्भूरिरोचिष्प्रतानस्फूर्त्यी मूर्तिर्भुरारेर्श्वमणिशतचितन्योमवद्गुर्निरीक्ष्या ।
कुर्वत्पारेपयोधि ज्वलदक्षशशिखामास्वदौर्वाग्निशक्का
शश्वत्र शर्म दिश्यात्कलिकलुषतम पाटन तिकरीटम् ॥
8 8 11 3

श्रान्त्वा श्रान्त्वा यदन्तिश्चिष्ठवनगुरुरायब्दकोटीरनेका गन्तु नान्त समर्थो श्रमर इव पुननीभिनालीकनालात्। उन्मज्जन्नूर्जितश्रीश्चिभुवनमपर निममे तत्सदृश्च देहाम्भोधि म देयान्निरवधिरमृत दैत्यविद्वेषिणो न ॥

मत्स्य कूर्मो वराहो नरहरिणपतिवामनो जामदग्न्य काकुत्स्थ कसघाती मनसिजविजयी यश्च कल्किभैविष्यन्। विष्णोरज्ञावतारा सुवनहितकरा धर्मसस्थापनाथा पायासुमी त एते गुरुतरकरुणाभारिकक्राज्ञया ये ॥४९॥

यस्माद्वाचो निवृत्ता सममपि मनसा छक्षणामीक्षमाणा म्वार्थाछाभात्परार्थव्यपगमकथनऋाधिनो वेदवादा । नित्यानन्द स्वसविश्रिरवधिविमछस्वान्तसक्रान्तिबम्ब च्छायापत्यापि नित्य सुरायित यमिनो यत्तद्व्यान्महो न ॥

आपादादा च शीर्षाद्वपुरिदमनघ वैष्णव य खचित्ते धत्ते नित्य निरस्ताखिलकलिकलुष सततान्त प्रमोदम् । जुह्बिज्जह्वाक्रशानौ हरिचरितहवि स्तोत्रमत्रानुपाठै न्तत्पादाम्भोकहाभ्या सततमपि नमस्कुर्महे निर्मलाभ्याम् ॥ मोदात्पादादिकेशस्तुतिमितिरचिता किर्तियत्वा त्रिधाम्न पादाञ्जद्व-द्वसेवासमयनतमित्रमेस्तकेनानमेख । उन्मुच्यैवात्मनैनोनिचयकवचक पश्चतामेत्य मानो-विम्वान्तर्गोचर स प्रविशति परमानन्दमात्मस्वरूपम् ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ विष्णुपादादिकेशान्तस्तोत्र सपूर्णम् ॥



॥ पाण्डुरङ्गाष्टकम् ॥

महायोगपीठे तटे भीमरथ्या वर पुण्डरीकाय दातु मुनीन्द्रे । समागत्य तिष्ठन्तमानन्दकन्द परत्रहालिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ १ ॥

तिटद्वासस नीलमेघावभास रमामन्दिर सुन्दर चित्प्रकाशम् । वर त्विष्टकाया समन्यस्तपाद परब्रह्मालिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ २ ॥

प्रमाण भवान्धेरिद मामकाना नितम्ब कराभ्या घृतो यन तस्मात्। विधातुर्वसत्यै घृतो नाभिकोश परब्रह्माळिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ३॥ स्फुरत्कीस्तुभालकृत कण्ठदेशे श्रिया जुष्टकेयूरक श्रीनिवासम् । शिव शन्तमीड्य वर लोकपाल परमहालिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ४ ॥

शरबन्द्रविम्बानन चारुहास
लक्षत्कुण्डलाकान्तगण्डस्थलान्तम् ।
जपारागविम्बाधर कश्वनेत्र
परत्रह्मलिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ५ ॥

किरीटोज्ज्वलस्पर्वदिक्प्रान्तभाग सुरैरचित दिञ्यरत्नैरनचे । त्रिभङ्गाकृतिं वर्हमाल्यावतस परत्रद्वालेङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ६ ॥

विभु वेणुनाद चरन्त दुरन्त स्वय छीलया गोपवेष द्धानम् । गवा बृन्दकानन्दद चारुहास परत्रह्मालिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ७ ॥ अज रुक्मिणीप्राणसजीवन त
पर धाम कैवल्यमेक तुरीयम्।
प्रसन्न प्रपन्नार्तिह देवदेव
परब्रह्मालिङ्ग भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ८ ॥

स्तव पाण्डुरङ्गस्य वै पुण्यद् ये पठन्त्येकचित्तेन भक्त्या च नित्यम् । भवाम्भोनिधि ते वितीर्त्वान्तकाळे हरेरालय शाश्वत प्राप्तुवन्ति ॥ ९ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रामच्छकरभगवत कृतौ पाण्डुरङ्गाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ अच्युताष्ट्रकम् ॥

अन्युत केशव रामनारायण कृष्णदामोदर वासुदेत हरिम् । श्रीधर माधव गोपिकावछभ जानकीनायक रामचन्द्र भजे ॥ १ ॥

भच्युत केशव सत्यभामाधव माधव श्रीधर राधिकाराधितम् । इन्दिरामन्दिर चेतसा सुन्दर देवकीनन्दन नन्दज सदधे ॥ २ ॥

विष्णवे जिष्णवे शिक्किने चिक्किणे रुक्मणीरागिणे जानकीजानये । वस्त्रवीवस्त्रभायार्चितायात्मने कसविष्यसिने विश्वने ते तम ॥ ३ ॥ कुष्ण गोविन्द हे राम नारायण श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे। अन्युतानन्त हे माधवाधोक्षज द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक॥ १॥॥

राक्षसक्षोभित सीतया शोभितो दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणम् । छक्ष्मणेनान्वितो वानरै सेवितो ऽगस्यसपूजितो राघव पातु माम् ॥ ५ ॥

धेतुकारिष्टहानिष्टकहेविणा केशिहा कसहद्वशिकावादक । पूतनाकापक सूरजाखलनो बालगोपालक पातु मा सर्वदा॥ ६॥

विद्युद्धचोतवत्त्रस्फुरद्वासस प्रावृद्धम्भोदवत्त्रोल्लसद्विग्रहम् । वन्यया मालया शोभितोर स्थल लोहिताड्बिद्वय वारिजाक्ष भजे ॥ ७ ॥ कु चिते कुन्तलैश्रांजमानानन रक्षमौलिं लसत्कुण्डल गण्डयो । हारकेयूरक कङ्कणशोड्यल किंकिणीमञ्जल स्थामल त भने ॥ ८॥

भच्युतस्याष्ट्रक य पठेदिष्टद प्रेमत प्रत्यह पूरुष सस्प्रहम्। वृत्तत सुन्दर वेद्यविश्वभर तस्य वश्यो हरिजीयते सत्वरम् ॥ ९ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरित्रजकाचायस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ अच्युताष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ कृष्णाष्ट्रकम् ॥

श्रियाश्रिष्टो विष्णु स्थिरचरगुक्वेंदविषयो धिया साक्षी शुद्धो हरिरसुरहन्ताब्जनयन । गदी शङ्खी चक्री विमलवनमाली स्थिरक्वि शरण्यो लोकेशो मम मवतु कृष्णोऽश्चिविषय ॥१॥

यत सर्व जात वियदानिलमुख्य जगदिद स्थितौ नि शेष योऽवित निजमुखाशेन मधुहा । लये सर्व स्वस्मिन्हरति कलया यस्तु स विभु शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥२॥

असूनायम्यादौ यमनियमसुरयै सुकरणै निरुद्धधेद चित्त हृदि विखयमानीय सकलम् । यमीड्य पश्यन्ति प्रवरमतयो मायिनमसौ श्ररण्यो छोकेशो मम भवतु कृष्णोऽश्विविषय ॥ पृथिव्या तिष्ठन्यो यमयित महीं वेद न धरा यमित्यादी वेदो वदित जगतामीशममलम् । नियन्तार ध्येय मुनिसुरनृणा मोक्षदमसी , शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽश्विविषय ॥

महेन्द्रादिर्देवो जयित दितिजान्यस्य बळतो न कस्य स्वातन्त्र्य कचिदिप कृतौ यत्कृतिमृते । बळारातेर्गर्वे परिहरित योऽसौ विजयिन श्ररण्यो छोकेशो मम भवतु कृष्णोऽश्चिविषय ॥

विना यस्य ध्यान त्रजित पशुता सूकरमुखा विना यस्य ज्ञान जिनमृतिभय याति जनता । विना यस्य स्मृत्या कृमिशतजिन याति स विभु शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥६॥

नरातङ्कोदृङ्क शरणशरणो भ्रान्तिहरणो घनदयामो वामो व्रजशिशुवयस्योऽर्जुनसख । स्वयभूर्भूताना जनक उचिताचारसुखद शरण्यो छोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय ॥७॥ यदा धर्मग्छानिर्भवति जगता श्लोभकरणी
तदा छोकस्वामी प्रकटितवपु सेतुधृदज ।
सता धाता स्वन्छो निगमगणगीतो व्रजपति
शरण्यो छोकेशो मम भवतु कृष्णोऽश्लिविषय ॥८॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यंश्वादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ कृष्णाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ हरिस्तुतिः॥

स्तोष्ये भक्त्या विष्णुमनादिं जगदादिं यसिन्नेतत्ससृतिचक भ्रमतीत्थम् । यसिन्दष्टे नश्यति तत्ससृतिचक त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १ ॥

यस्यैकाशादित्थमशेष जगदेतत्प्रादुर्भूत येन पिनद्ध पुनरित्थम् ।
येन व्याप्त येन विबुद्ध सुखदु स्तै
स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २ ॥

सर्वज्ञो यो यश्च हि सर्व सक्त यो यश्चानन्दोऽनन्तगुणो यो गुणधामा। यश्चान्यक्तो न्यस्तसमस्त सदसद्य स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे॥३॥

यस्मादन्यन्नास्त्यपि नैव परमार्थ हत्र्यादन्यो निर्विषयज्ञानमयत्वात् । झातृज्ञानज्ञेयविहीनाऽपि सदा ज्ञ स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ४ ॥

आचार्येभ्यो लब्धसुसूक्ष्मान्युततत्त्वा वैराग्येणाभ्यासवलाचैव द्रिटिन्ना । भक्त्यैकाग्र्यभ्यानपरा य विदुरीश त समारभ्वान्तविनाज हरिमीडे ॥ ५ ॥

प्राणानायम्योमिति चित्त हिद् रुध्वा नान्यत्समृत्वा तत्पुनरत्रैव विलाप्य । श्लीणे चित्त भारशिरस्मीति विदुर्थ त ससारध्वानतविनाश हरिमीडे ॥ ६॥

य ब्रह्माख्य देवमनन्य परिपूर्ण हत्स्थ भक्तैर्लभ्यमज सूक्ष्ममतक्येम् । ध्यात्वात्मस्थ ब्रह्मविदो य विदुरीश त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ७ ॥ मालातीत स्वात्मविकासात्मविबोध
श्रेयातीत ज्ञानमय हृद्युपलभ्य।
भावप्राह्यानन्दमनन्य च विदुर्य
त ससारभ्वाननविनाश हरिमीडे ॥ ८ ॥

यसद्वेश वस्तुसतस्व विषयाख्य तत्तद्वद्वौवेति विदित्वा तदह च । ध्यायन्त्येव य सनकाद्या मुनयोऽज त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ९ ॥

यद्यद्वेद्य तत्तद्ह नेति विहाय
स्वात्मज्योतिर्ज्ञानमयानन्द्मवाप्य ।
तस्मिन्नस्मीत्यात्मविदो य विदुरीश
त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १० ॥

हित्वाहित्वा दृश्यमशेष सविकरप मत्वा शिष्ट भादृशिमात्र गगनाभम् । त्यक्त्वा देह य प्रविशन्त्यच्युतभक्ता-स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ११ ॥ सर्वत्रास्त सर्वशरीरी न च सर्व सर्व वेन्येवेह न य वेत्ति च सव । सर्वत्रान्तर्यामितयेत्थ यमयन्य-म्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १२ ॥

सर्व दृष्ट्वा स्वात्मिन युक्त्या जगदेतदृष्ट्वात्मान चैवमज सर्वजनेषु ।
सर्वात्मैकोऽस्मीति विदुर्य जनहत्स्थ
त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १३ ॥

सर्वत्रैक पश्यित जिघ्यथ सुङ्के स्प्रष्टा श्रोता बुध्यित चेत्याहुरिम यम । साक्षी चास्ते कर्तृषु पश्यित्राति चान्ये त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १४ ॥

पश्यक्रशृण्वन्नत्न विजानन्यसयन्स जिल्लद्भिन्नदेहमिम जीवतयेत्थम् । इत्यात्मान य विदुरीश विषयज्ञ त ससारभ्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १५ ॥ जाप्रदृष्ट्वा स्थूलपदार्थानथ माया
दृष्ट्वा स्वप्नेऽथापि सुषुप्तौ सुखनिद्राम् ।
इत्यात्मान वीक्ष्य सुदास्त च तुरीये
त ममारध्वान्तविनाज हरिमीडे ॥ १६ ॥

पश्यञ्जुद्धोऽप्यक्षर एका गुणभेदा न्नानाकारान्स्फाटिकवद्भाति विचित्र । भिन्नरिछन्नश्चायमज कर्मफलैर्य स्त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १७॥

ब्रह्मा विष्णू रुद्रहुताशौ रिवचन्द्रा विन्द्रो वायुर्थेझ इतीत्थ परिकल्प्य । एक मन्त य बहुधाहुर्मेतिभेदा त्त समाग्ध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १८ ॥

सत्य ज्ञान शुद्धमनन्त व्यतिरिक्त शान्त गूढ निष्कलमानन्दमनन्यम् । इत्याहादौ य वरुणोऽसौ भ्रुगवेऽज त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १९॥ ५५॥ 4 कोशानेतान्यश्व रसादीनतिहाय ब्रह्मास्मीति स्वात्मिन निश्चित्य रिशस्थम् । पित्रा शिष्टो वेद सुगुर्य यजुरन्ते त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २०॥

येनाविष्टो यस्य च शक्त्या यदधीन क्षेत्रज्ञोऽय कारियता जन्तुषु कर्तु । कर्तो मोक्तात्मात्र हि यन्छक्त्यधिरूढ स्त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २१ ॥

सृष्ट्वा सर्वे स्वात्मतयैवत्यमतक्यें व्याप्याथान्त कृत्स्नमिद् सृष्टमशेषम् । सम्बत्यवाभूत्परमात्मा स य एक स्त समारध्वान्तविनाश हरिमीहे ॥ २२ ॥

वेदान्तेश्चाध्यात्मिकशास्त्रेश्च पुराणे शास्त्रेश्चान्ये सात्त्वततन्त्रेश्च यमीशम् । र्ष्ट्यायान्तञ्चेतिस बुद्धा विविशुर्ये त ससार्थ्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २३ ॥ श्रद्धाभिक्तध्यानशमाधैर्यतमानै-श्रीतु शक्यो देव इहैवाशु य ईश । दुविश्चेयो जन्मशतैश्चापि विना तै-स्त मसारध्यान्तविनाश हरिमीडे ॥ २४ ॥

यम्यातक्ये खात्मविभूत परमार्थे
सर्वे खल्वित्यत्र निरुक्त श्रुतिविद्धि ।
तज्जातित्वादिधतरङ्गाभमभिन्न
त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २५ ॥

हन्ना गीतास्त्रक्षरतस्त्र विधिनाज मक्त्या गुर्ग्या छभ्य हृदिस्य हिशमात्रम् । ध्यात्वा तस्मित्रस्म्यहमित्यत्र विदुर्ये त मसारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २६ ॥

क्षेत्रज्ञत्व प्राप्य विसु पश्चसुखैयों सुद्धेऽजस्म भोग्यपदार्थोन्त्रकृतिस्य । क्षेत्रे क्षेत्रेऽप्स्विन्दुवदेको बहुधास्ते त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ २७॥ युक्तालोक्य व्यामवचाम्यत्र हि लभ्य श्रमक्षत्रज्ञान्तरावद्धि पुरुषारय । याऽह् माऽमौ माऽम्म्यहमवात विदुर्य त ममारम्वान्तविनाग हिम्मीड ॥ २८ ॥

एकाक्रत्यानकशरीरम्थामम ज्ञ य विज्ञायहैव म एयाशु भवन्ति । यिम्मलॅलीना नह पुनजन्म लभन्त त ममारध्वान्तावनाश हरिमीड ॥ २९॥

द्वन्द्वैकत्व यच मधुव्राह्मणवार्म्य क्रत्वा शकापासनमासाय विभ्त्या । योऽमी मोऽह माऽम्म्यहमेवेति निदुर्य त समारभ्वान्तविनाश हिरमीडे ॥ ३० ॥

याऽय दह चेष्टियतान्त करणस्थ मूर्ये चासौ तापायता सोऽम्म्यहमेव । इत्यात्मेक्यापामनया य विदुरीश त समारध्वान्तावनाश हरिमीडे ॥ ३१ ॥ विज्ञानाशो यस्य सत शक्त्यधिरूढा
बुद्धिर्बुध्यत्यत्र बाहर्बोध्यपदार्थान ।
नैवान्त स्थ बुध्यति य बोधियतार
त समारध्वान्तविनाश हिरमीडे ॥ ३२ ॥

कोऽय देह देव इतात्थ सुविचार्य ज्ञाता श्राता मन्तियता चैष हि देव । इत्यालोच्य ज्ञाश इहास्मीति विदुर्य त मसारध्वान्तिवनाश हिस्मिष्टि ॥ ३३ ॥

का ह्यवान्यादात्मिन न म्यादयमष
ह्यवानन्द प्राणिति चाषानिति चेति ।
इत्यस्तित्व वक्त्युपपत्त्या श्रुतिरषा
त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३४ ॥

प्राणो वाह वाक्छ्वणादीनि मना वा बुद्धिवीह व्यस्त उताहोऽपि समस्त । इत्याछोच्य ब्राप्तिरिहास्मीति विदुर्ये त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ३५॥ नाह प्राणो नैव शरीर न मनोऽह
नाह बुद्धिर्नाहमहकारिधयौ च ।
योऽत्र ज्ञाश मोऽस्म्यहमेवेति विदुर्थ
त ससारभ्वान्तविनाश हरिमीड ॥ ३६॥

सत्तामात्र कवलिक्षानमज मत्सूक्ष्म नित्य तत्त्वमसीत्यात्मसुताय ।
साम्रामन्ते प्राह पिता य विभुमाद्य
त समारध्वान्तविनाञ हरिमीड ॥ ३७ ॥

मूर्तामूर्ते पूर्वमपाद्याथ समाधौ

हश्य सर्वे नेति च नतीति विहाय ।
चैतन्याशे म्वात्मिन सन्त च विदुर्ये

त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ १८ ॥

भोत प्रोत यत्न च मर्व गगनान्त योऽस्थूलानण्वादिषु सिद्धोऽक्षरसङ्ग । ज्ञातातोऽन्यो नेत्युपलभ्यो न च वेद्य स्त ससारध्वान्तविनाञ्च हरिमीढे ॥ ३९ ॥ तावत्सर्व सत्यमिवाभाति यदेत-यावत्सोऽस्मीत्यात्मानि यो क्षो न हि दृष्ट । दृष्टे यस्मिन्सर्वमसत्य भवतीद् त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ४० ॥

रागामुक्त लोह्युत हेम यथाग्री योगाष्टाक्केषण्डवितकानमयाग्री। द्ग्ध्वात्मान ज्ञ परिशिष्ट च विदुर्य त ससारध्वान्तविनाश हरिमीडे॥ ४१॥

य विज्ञानज्योतिषमाद्य सुविभानत
हृद्यकेन्द्रग्न्योकसमीड्य तटिदामम् ।
भक्त्याराध्येहैव विशन्त्यात्मनि मन्त
त समारध्यान्तविनाश हरिमीड ॥ ४२ ॥

पायाद्भक्त स्वात्मिन सन्त पुरुष या
भक्त्या स्तौतीत्याङ्गिरम विष्णुरिम माम ।
इत्यात्मान स्वात्मिन महत्य सदैक
स्त समारध्वान्तविनाश हरिमीडे ॥ ४३ ॥
इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचायस्य श्रीगोवि दमगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमञ्छकरमगवत कृतौ
हरिस्तुति सपूर्णा ॥

॥ श्री ॥

॥ गोविन्दाष्टकम् ॥

88

सत्य ज्ञानमनन्त नित्यमनाकाश परमाकाश
गोष्ठशङ्गणरिह्वणलालमनायाम परमायामम् ।
भाषाकित्पतनानाकारमनाकार सुवनाकार
क्मामानाथमनाथ प्रणमत गोविन्त परमानन्दम् ॥ १॥

मृत्स्नामत्सीहे।त यशोदाताडनशैशवमत्राम
व्यादितवन्नालाकितलाकालोकचतुदशलोकालिम् ।
लोकत्रयपुरमूलसम्भ लोकालाकमनालोक
लोकेश परमेश प्रणमत गोविन्द परमानन्तम् ॥ २ ॥

त्रैविष्टपरिपुर्वीरत्र क्षितिभाग्त्र भवगगन्न केवल्य नवनीताहारमनाहार भुवनाहारम् । वैमल्यस्फुटचेतोवृत्तिविशेषाभासमनाभाम श्रीव केवल्रद्यान्त प्रणमत गोविन्द परमानन्दम् ॥ ३ ॥ गोपाल प्रभुलीलाविमहगोपाल कुलगोपाल गोपीखेलनगोवधनधृतिलीलालालितगोपालम् । गोभिर्निगदितगोविन्दस्फुटनामान बहुनामान गोधीगोचरदूर प्रणमत गोविन्ट परमानन्दम् ॥ ४ ॥

गोपीमण्डलगोष्ठीभेद भदावस्थमभेदाभ श्रम्बद्गोखुरनिर्धूतोद्गतधूलीधूसरसौभाग्यम् । श्रद्धाभक्तिगृहीतानन्दमचिन्त्य चिन्तितसद्भाव चिन्तामणिमहिमान प्रणमत गोविन्द परमानन्दम् ॥

स्नानव्याकुलयोषिद्वस्त्रमुपादायागमुपारूढ व्यादित्सन्तीरथ दिग्वस्ता दातुमुपाकर्षन्त ता । निर्धूतद्वयशोकविमोह बुद्ध बुद्धेरन्त स्थ सत्तामात्रशरीर प्रणमत गोविन्द परमानन्दम् ॥ ६ ॥

कान्त कारणकारणमादिमनादि कालघनामास कालिन्दीगतकालियशिरामि सुनृत्यन्त मुहुरस्रन्तम् । काल कालकलातीत कलिताशष कलिदोषन्न कालत्रयगतिहेतु प्रणमत गोविन्द परमानन्दम् ॥ ७ ॥ बुन्दावनभुवि बुन्दारकगणबुन्दाराधितवन्द्याया कुन्दाभामलभन्दस्मेरसुधानन्द सुमहानन्दम् । बन्दाशेषमहामुनिमानसवन्द्यानन्दपदद्वनद्व नन्द्याशेषगुणार्विध प्रणमन गोविन्द परमानन्दम् ॥८॥

गोविन्दाष्टकमेतद्धीत गोविन्दार्पितत्वता या गोविन्दाच्युत माधव विष्णा गोकुळनायक कृष्णेति । गोविन्दाङ्किसरोजध्यानसुधाजळघौतसमस्ताघा गोविन्द परमानन्दासृतमन्तम्थ स तमभ्येति ॥ ९ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृती गाविन्दाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्रीः ॥

॥ भगवन्मानसपूजा ॥

हृदम्भोजे कृष्ण सजळजळदश्यामलततु सरोजाश्च स्नग्वी मकुटकटकाद्यामरणवान् । श्चरद्राकानाथप्रतिमवदन श्रीमुरिकका वहन्ध्येयो गोपीगणपरिवृत कुङ्कमिचत ॥ १ ॥

पयोम्भोधेद्वीपान्मम हृद्यमायाहि भगव नमणित्रातभ्राजत्कनकवरपीठ भज हरे। सुचिद्गौ ते पादौ यदुकुळज ननेजिम सुजलै ग्रेहाणेद दूर्वाफळजळवदम्य सुरिपो ॥ २ ॥

त्वमाचामोपेन्द्र त्रिदशसरिदम्भोऽतिशिशिर
भजस्वेम पश्चामृतफलरसाष्ट्रावमघहन ।
युनवा कालिन्या अपि कनककुम्भाश्चितमिद
जल तेन स्नान कुरु कुरु वाचमनकम् ॥ ३ ॥

तिहरूणें वस्त्र भज विजयकान्तााधहरण प्रस्नवारिश्रातमृदुस्तमुपवीत कुरु गस्त । स्रसाट पाटीर मृगमन्युन धारय हरे गहाणेद मास्य अतदस्तुस्यादिराचितम् ॥ ४॥

दशाङ्ग धूप सद्घरद चरणाम्रऽपितामद

मुख दीपनेन्दुप्रभविरज्ञस तव कलय ।

इमी पाणी वाणीपतिनुत सकपूररज्ञसा

विशोध्यामे तत्त सलिलमिदमाचाम नृहरे ॥ ५ ॥

सदा तृप्तात्र षड्सवदिक्षित्रव्यश्वनयुत सुवर्णामत्रे गोषृतचषकयुक्त म्थतिमदम् । यशादासूना तत्परमदययाशान सिस्तिभ प्रमाद वाव्छाद्वि सह तद्नु नार ापवं विभा ॥ ६ ॥

मचूर्ण ताम्बूल मुख्युचिकर भक्षय हर फल स्वादु प्रीत्या पारमलवदास्वादय ाचरम् । सपर्योपर्यास्यै कनकमणिजात स्थितमिद प्रदीपैरारार्ति जलधितनयाऋष्ट रचये ॥ ७ ॥ विजातीयै पुष्पैरितसुरिभिभिवित्वतुलर्मा

युतैश्चेम पुष्पाश्वालमिजित त मूर्गित्र निन्ध ।

तव प्रादक्षिण्यक्रमणमधिवध्विम रिचित

चतुर्वार विष्णा जिनपथगतश्चान्तिवदुषा ॥ ८ ॥

नमन्कारोऽष्टाङ्क सकलदुारतध्वसनपटु कृत नृत्य गीत म्तुानगि रमाकान्त त इयम् । तव प्रीत्यै भूयादहमिप च नामस्तव विभा कृत छिद्र पूर्ण कुरु कुरु नमन्तऽस्तु भगवन ॥ ९॥

सदा मेट्य कृष्ण सजलघननील करतले दधाना दध्यन्न तदनु नवनीत मुरलिकाम । कदाचित्कान्ताना कुचकलकापत्रालिरचना समासक्क स्निग्धै सह शिशुविहार विरचयन् ॥१०॥

> इात श्रीमत्परमहसपारवाजका चार्यस्य श्रीगोवि दमगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरमगवत कर्तो भगवन्मानसपूजा सपूर्णा ॥

॥ मोहमुद्धरः ॥

भज गाविन्द भज गोविन्द भज गोविन्द मूढमते । सप्राप्ते सनिहिते काले न हि न हि गक्षति जुकुळकरण ॥ १ ॥

मूढ जहीहि धनागमतृष्णा

कुरु सहुद्धि मनसि वितृष्णाम् ।

यह्यभस निजकर्मीपात्त

वित्त तेन विनोदय चित्तम् ॥ २ ॥

नारीस्तनभरनाभीदेश
दृष्ट्वा मा गा माहावशम् ।
एतन्मासवसादिविकार
मनसि विचिन्तय वार वारम् ॥ ३ ॥

निस्निद्धगतज्ञस्य स्वत्य स्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य

यावद्वित्तोपार्जनसक्त स्तावश्रिजपरिवारो रकः। पश्चाज्जीवति जर्जरदेह वार्त्ती कोऽपि न प्रच्छिति गेहे॥ ५॥

यावत्पवनो निवसति देहे तावत्प्रच्छति कुश्चल गेहे। गतवति वायौ दहापाये भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये॥ ६॥

वाळस्तावत्क्रीडासक्त
म्तरुणस्तावत्तरुणीसकः ।
वृद्धस्ताविबन्तासकः
परे ब्रह्माणे कोऽपि न सक्तः ॥ ७ ॥

का ते कान्ता कम्त पुत्र
मसारोऽयमतीव । य। च य
कस्य त्व क कुत आयात
स्तत्त्व चिन्तय यिन्द भ्रान्त ॥ ४ ॥

मत्सङ्गत्वे नि सङ्गत्व नि सङ्गत्व निर्मोहत्वम् । निर्मोहत्व निश्चित्वतत्व निश्चित्वतत्व जीय मुक्ति ॥ ९॥

वयिस गते क कामावकार शुष्क नीर क कासार । श्लीणे वित्त क परिवारो ज्ञात तस्वे क समार ॥ १०॥

मा कुरु धनजनयीवनगर्व हरति निमेषात्काल सर्वम् । मायामयमिद्मखिल हित्वा ब्रह्मपद त्व प्रविश विद्तिवा ॥ ११ ॥ दिनयामिन्यौ साय प्रात
शिशिरवसन्तौ पुनरायात ।
काल कीडित गन्छत्यायु
स्तदपि न सुश्चत्याञ्चावायु ॥ १२ ॥

का ते कान्ताधनगतिचन्ता वातुल किं तव नास्ति नियन्ता । त्रिजगति सज्जनसगतिरेका भवति भवार्णवतरणे नौका ॥ १३॥

जिटिली मुण्डी लुश्चितकेश काषायाम्बरबहुकृतवेष । पश्यम्रपि च न पश्यति मृदो सुदरनिमित्त बहुकृतवेष ॥ १४ ॥

अङ्ग गिलत पिलत मुण्ड दशनविहीन जात तुण्डम् । वृद्धो याति गृहीत्वा दण्ड तद्पि न मुख्यत्याशापिण्डम् ॥ १५ ॥ ८ ६ ॥ 5 भमे विद्व पृष्ठे भानू रात्री चुबुकसमर्पितजानु । करतलभिक्षस्तकतलवास स्तव्पि न मुचलाशापाश ॥ १६॥

सुरमन्दिरतरुमूळनिवास शय्या भूतळमजिन वास । सर्वेपरिग्रहभोगत्याग कस्य सुख न करोति विराग ॥ १८॥

योगरतो वा भोगरतो वा सगरतो वा सगविहीन । यस्य ब्रह्माण रमते चित्त नन्दति नन्दति नन्दस्येव ॥ १९॥ भगवद्गीता किंचिदधीता
गङ्गाजळळवकणिका पीता।
सक्रदपि येन गुरारिसमर्चा
कियते तस्य यमेन न चर्चा।। २०॥

पुनरिप जनन पुनरिप मरण पुनरिप जननीजठरे शयनम् । इह ससारे बहुदुसारे कृपयापारे पाहि सुरारे ॥ २१ ॥

रध्याकर्पटविरचितकन्थ पुण्यापुण्यविवर्जितपन्थ । योगी योगनियोजितचित्तो रमते बास्रोन्मत्तवदेव ॥ २२ ॥

कस्तव को Sह कुत आयात का मे जननी को मे तात । इति परिभावय सर्वमसार विश्व त्यक्त्वा स्वप्नविचारम् ॥ २३ ॥ त्विय मिथ चान्यत्रैको विष्णु व्यर्थे कुप्यसि मन्यसिहण्णु । सर्वस्मित्रपि पश्यात्मान सर्वत्रोत्सृज भेदाज्ञानम् ॥ २४ ॥

शत्री भिन्ने पुत्रे बन्धी

मा कुरु यत्न विमहसन्धी।
भव समचित्त सर्वत्र त्व

वाञ्कस्यचिराद्यदि विष्णुत्वम् ॥ २५ ॥

काम क्रोध लोभ मोह त्यक्त्वात्मान भावय काऽहम । आत्मज्ञानविहीना मूढा स्ते पच्यन्ते नरकानिगृद्धा ॥ २६॥

गेय गीतानामसहस्र ध्यय श्रीपतिरूपमजस्त्रम् । नेय सज्जनसङ्गे चित्त देय दीनजनाय च वित्तम् ॥ २७ ॥ सुखत कियते रामाभोग पश्चाद्धन्त शरीरे रेगा । यद्यपि छोके मरण शरण तद्दपि न सुश्वति पापाचरणम् ॥ २८॥

अर्थमनर्थ भावय नित्य नास्ति तत सुखलेश सत्यम् । पुत्रादिप धनभाजा भीति सर्वत्रेषा विहिता रीति ॥ २९॥

प्राणायाम प्रसाहार नित्यानित्यविवेकविचारम् । जाप्यसमेतसमाधिविधान कुर्वेवधान महदवधानम् ॥ ३०॥

गुरुचरणाम्बुजानिर्भरभक्त
ससारादिचराद्भव मुक्त ।
सेन्द्रियमानसनियमादेव
द्रस्यिस निजहृदयस्थ देवम् ॥ ३१ ॥

इति मोहसुद्गर सपूर्ण ॥

॥श्री॥

॥ कनकधारास्तोत्रम् ॥

भक्त हरे पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भक्ताक्तनेव गुकुलाभरण तमालम् ।
भक्तीकृताखिलविभृतिरपाक्तलीला
माक्तल्यदाम्तु मम मक्तलदवताया ॥ १॥

मुग्धा मुहुर्विद्धती वदने मुरारे प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि । मालाहशोमधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रिय दिशतु सागरसभवाया ॥ २ ॥

विश्वामरन्द्रपद्विश्वमद्गनद्क्ष

मानन्द्रहेतुर्धिक सुरविद्विषोऽपि ।
ईषित्रिषीद्तु मिय क्षणमीक्षणार्द्वे

मिन्दीवरोद्दसहाद्दमिन्द्रिया ॥ ३ ॥

श्रामीलिताश्चमधिगम्य सुदा सुकुन्द मानन्दकन्दमिनमेषमनङ्गतन्त्रम् । श्राकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्र भूस्यै भवेनमम सुजगज्ञयाङ्गनाया ॥ ४॥

बाह्यन्तरे मधुजित श्रितकौस्तुभेया हारावळीव हरिनीलमयी विभाति। कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कस्याणमावहतु मे कमलालयाया ॥ ५॥

कालाम्बुदालिललितारिस कैटभार-धौराधरे स्फुरति यत्तिटिद्क्कनेव । मातु समस्तजगता महनीयमृति भेद्राणि मे दिशतु भागवन दनाया ॥ ६ ॥

प्राप्त पद प्रथमत खळु यत्त्रभावा-माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन ।
मध्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्थं
मन्दाळस च मकराळयकन्यकाया ॥ ७ ॥

दशाह्यानुपवनो द्रविणाम्बुधारा
मिसन्न किंचन विह्गिशिशौ विषण्णे।
दुष्कर्मधर्ममपनीय चिराय दूर
नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाह ॥ ८॥

इष्टाविशिष्टमतयोऽपि यया दयाई-इष्ट्या त्रिविष्टपपद सुलभ लभन्ते । दृष्टि प्रदृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टा पुष्टि कृषीष्ट मम पुष्करविष्टराया ॥ ९ ॥

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति शाकभरीति शशिशेखरवछभेति । सृष्टिस्थितिप्रळयकिषु सस्थितायै तस्यै नमिक्ससुवनैकगुरोस्तरुण्ये ॥ १० ॥

श्रुत्ये नमोऽस्तु श्रुमकर्मफछप्रस्त्ये रत्ये नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवाये । शक्त्ये नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनाये पुष्ट्ये नमोऽस्तु पुक्रवोत्तमवस्रभाये ॥ ११ ॥ नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै नमोऽस्तु दुग्धोद्धिजन्मभूम्यै । नमोऽस्तु सोमामृतसोद्दायै नमोऽस्तु नारायणवङ्गभायै ॥ १२ ॥

सपत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानिभवानि सरोक्हाश्चि । त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मातरिनश कलयन्तु मान्ये ॥ १३ ॥

यत्कटाश्वसमुपासनाविधि
सेवकस्य सकछार्थसपद ।
सतनोति वचनाङ्गमानसै
सत्वा मुरारिहृद्येश्वरी भजे ॥ १४ ॥

सरसिजनिख्ये सरोजहस्ते धवलतमाशुकगन्धमाल्यशोभे । भगवति हरिवल्लभे मनोहो त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्मम् ॥ १५॥ दिघ्यस्तिभि कनककुम्भमुखावसृष्ट स्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्रुताङ्गीम् । प्रातनेमामि जगता जननीमश्रष लोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥ १६ ॥

कमल कमलाक्षवस्य त्व करुणापूरतरिक्कतैरपाङ्गे । अवलोकय मामिकचनाना प्रथम पात्रमकृत्रिम दयाया ॥ १७॥

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमीभिरन्वह् त्रयीभर्यी त्रिभुवनमातर रमाम् । गुणाधिका गुरुतरभाग्यभाजिनो भवन्ति त भुवि बुधभाविताशया ॥ १८॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचायस्य श्रीगोवि दभग-वत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ कनकथारास्तोत्र सपूर्णम् ॥

॥ श्री ॥

॥ अन्नपूर्णाष्ट्रकम् ॥

निद्धानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी निर्भूतास्त्रिल्दोषपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी । प्रालयाचलवशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षा दिह कुपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ १ ॥

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी

मुक्ताहारविडम्बमानविलमद्वश्चोजकुम्भान्तरी ।
काश्मीरागकवासिताङ्गरुचिर काशीपुराधीश्वरी
भिश्चा दाह कुपावलम्बनकरी माताञ्चपूर्णेश्वरी ॥ २ ॥

योगानन्दकरी रिपुश्रयकरी धर्मैकनिष्ठाकरी चन्द्राकीनलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी। सर्वैश्वर्यकरी तप फलकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षा देहि कुपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥ ३॥ कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी ह्युमाशाकरी कौमारी निगमार्थगोचरकरी ह्योंकारबीजाक्षरी । मोश्रद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षा देहि कुपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ ४ ॥

दृश्यादृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोद्री ळीळानाटकसूत्रखेळनकरी विज्ञानदीपाङ्क्रुरी। श्रीविश्वेशमन प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षा देहि कृपावळम्बनकरी मातात्रपूर्णेश्वरी॥ ५॥

आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी श्रभुत्रिया शाकरी कादमीरत्रिपुरेश्वरी त्रिनयनी विश्वेश्वरी शर्वेरी । स्वर्गद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षा देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ ६ ॥

वर्वीसर्वजनेश्वरी जयकरी माता कुपासागरी ।
नारीनीलसमानकुन्तलघरी नित्याश्रदानेश्वरी
साक्षानमोक्षकरी सदा श्रुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षा देहि कुपावलम्बनकरी मातात्रपूर्णेश्वरी ॥ ७ ॥

देवी सर्वेविचित्ररह्मरचिता दाश्वायणी सुन्दरी वामा खादुपयाधरा प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी । भक्ताभीष्टकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी भिश्वा देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।। ८ ॥

चन्द्राकीनलकोटिकोटिसहशी चन्द्राशुविम्बाधरी चन्द्राकीग्रिसमानकुण्डलधरी चन्द्राकेवर्णेश्वरी। मालापुस्तकपाशसाङ्कराधरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षा देहि कुपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥ ९॥

श्चन्नाणकरी महाभयहरी माता कुपासागरी
सर्वानन्दकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी।
दक्षाकन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिश्चा देहि कुपावलम्बनकरी माताझपूर्णेश्वरी॥ १० ॥

भश्रपूर्णे सद्गपूर्णे शकरप्राणवस्त्रमे । झानवैराग्यसिद्धर्थे भिक्षा देहि च पार्वति ॥ ११ ॥ माता च पार्वतीदेवी
पिता दवा महेश्वर ।
बान्धवा शिवभक्ताश्च
स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥ १२ ॥

इति श्रीमत्परमहसपरित्राजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ अञ्चपूर्णाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्रीः ॥

॥ मीनाक्षीपञ्चरत्नम् ॥

चयद्भानुसहस्रकोटिसद्दशा केयूरहारोज्ज्वला विम्बोष्ठीं स्मितदन्तपङ्किरुचिरा पीताम्बरालकृताम् । विष्णुत्रह्मसुरेन्द्रसेवितपदा तत्त्वस्तरूपा शिवा मीनाश्चीं प्रणतोऽस्मि सत्तमह कारुण्यवारानिधिम् ॥

मुक्ताहारलस्रिकरीटक्चिरा पूर्णेन्दुवक्रप्रभा शिञ्जनूपुरकिंकिणीमणिघरा पद्मप्रभाभासुराम् । सर्वाभीष्ठफलप्रदा गिरिसुता वाणीरमासेविता मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सततसह कारुण्यवारानिधिम् ॥

श्रीविद्या शिववामभागनिख्या ह्वींकारमन्त्रोज्ज्वखा श्रीचक्राङ्कितविन्दुमध्यवसर्ति श्रीमत्सभानायकीम् । श्रीमत्षणमुखविष्नराजजननीं श्रीमज्जगन्मोहिनीं मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सततमह कारुण्यवारानिधिम् ॥ श्रीमत्सुन्दरनायकीं भयहरा ज्ञानपदा निर्मेखा रयामाभा कमलासनार्चितपदा नारायणस्यानुजाम् । वीणावेणुमृदङ्गवाद्यरसिका नानाविधाङम्बिका मीनाक्षी प्रणतोऽस्मि सततमह कारुण्यवारानिधिम् ॥

मानायोगिमुनीन्द्रहृक्तिवसर्तां नानार्थसिद्धिप्रदा नानापुष्पविराजिताङ्कियुगळा नारायणेनार्चिताम् । नाद्मक्षमयीं परात्परतरा नानार्थतत्त्वात्मिका मीनाक्षां प्रणतोऽस्मि सततमह कारुण्यवारानिधिम् ॥

> इति श्रीमत्परमइसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ मीनाक्षीपभ्यरस्र सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ मीनाक्षीस्तोत्रम् ॥

श्रीविद्ये शिववामभागिविछये श्रीराजराजािविते श्रीनाथादिगुरुखरूपविभवे चिन्तामणीपीठिके । श्रीवाणीगिगिजानुतािङ्ककमळे श्रीशाभवि श्रीशिवे मध्योह्ने मळयध्वजािधपसुते मा पाहि मीनािम्बके ॥१॥

चक्रस्थेऽचपछे चराचरजगन्नाथे जगत्पृजिते आर्ताळीवरदे नताभयकर वक्षोजभारान्विते । विद्ये वेदकळापमौळिविदिते विद्युद्धताविम्रहे मात पूर्णसुधारसार्द्रहृदये मा पाहि मीनाम्बिके ॥ २ ॥

कोटीराङ्गदरलकुण्डलधरे कादण्डवाणािकते कोकाकारकुचद्वय।परिलसत्प्रालम्बहारािकते । शिराष्ट्रपुरपादसारसमणीश्रीपादुकालकृते महारिद्यसुजगगारुडखगे मा पाहि मीनाम्बिके ॥ ३ ॥

8 S II 6

ब्रह्मेशान्युतगीयमानचिते प्रतासनान्तस्थिते
पाशोदङ्कशचापबाणकित बालनदुचूडाञ्चित ।
बाले बालकुरङ्गलालनयन बालाककाटचुक्वलल
मुद्राराधितदैवते मुनिसुत मा पाहि मीनाम्बिके ॥ ४ ॥

गन्धर्वामरयश्चपत्रगनुत गङ्गाधरालिङ्गित गायत्रीगरुडासन कमलजे सुत्रयामले सुन्धित । खातीते खलदारुपावकशिखे खद्यातकोटचुड्डवले मन्त्राराधितदैवते सुनिसुते मा पाहि मीनान्बिके ॥ ५ ॥

नादे नारदतुम्बुराद्यविनुते नादान्तनादात्मिक नित्ये नीललतात्मिके निरुपम नीवारशुकोपम । कान्त कामकल कदम्बनिलय कामश्वराङ्कस्थित माद्विषा मदभीष्टकल्पलिके मा पाहि मीनाम्बिके ॥६॥

वीणानाद् निमीलिताधनयन विस्नस्तचू लीभर ताम्चू लागपल्लवाधरयुते तादङ्कहारान्त्रित । इयामे चन्द्रकलावतसकलित कस्तूरिकाफालिक पूर्णे पूर्णकलाभिरामवदने मा पाहि मीनाम्बिक ॥ ७ ॥ शब्द श्रह्मसयी चराचरमयी ज्योतिर्मयी वाड्यायी नित्यानन्दमयी निरश्वनमयी तत्त्वमयी चिन्मयी। तत्त्वातीतमयी परात्परमयी मायामयी श्रीमयी सर्वेश्वयमयी सदाशिवमयी मा पाहि मीनान्विके॥८॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचायस्य श्रीगोवि दभग वत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ मीनाक्षीस्तोत्र सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् ॥

83 -----

चपासकाना यदुपासनीय गुपात्तवास वटशास्त्रिमूळे । तद्धाम दाक्षिण्यजुषा स्वमूर्या जागर्तु चित्ते मम बोधरूपम् ॥ १ ॥

अद्राक्षमक्षीणव्यानिधान-माचार्यमाद्य वटमूलभागे । मौनेन मन्दस्मितभूषितन महापलोकस्य तमो नुदन्तम् ॥ २ ॥

विद्राविताशषतमोगणन

मुद्राविशेषण मुद्रुमुनीनाम् ।

निरस्य माया द्यया विषक्ते

देवो महास्तक्त्वससीति बोधम् ॥ ३ ॥

भपारकारण्यसुषातरक्षे
रपाक्षपातैरवलोकयन्तम् ।
कठोरससारनिदाघतप्ता
नसुनीनह नौमि गुरु गुरूणाम् ॥ ४ ॥

ममाचदेवो वटमूळवासी
कुपाविशेषात्कृतसनिषान ।
ओंकाररूपामुपदिश्य विद्या
माविद्यकथ्वान्तमपाकरोतु ॥ ५ ॥

कलाभिरिन्दोरिव कल्पिताङ्ग मुक्ताकलापैरिव बद्धमूर्तिम् । भालोकये देशिकमप्रमेय मनाधविद्यातिमिरप्रभातम् ॥ ६ ॥

स्वदश्वजानुस्थितवामपाद पादोदरालकृतयोगपट्टम् । अपस्मृतेराहितपादमक्के प्रणौमि देव प्रणिघानवन्तम् ॥ ७ ॥ तस्वार्थमन्तेवसतामृषीणा
युवापि य सन्नुपदेष्टुमीष्टे ।
प्रणौमि त प्राक्तनपुण्यजालै
राचार्थमाश्चर्यगुणाधिवासम् ॥ ८ ॥

एकेन सुद्रा परशु करेण करेण चान्येन मृग दधान । स्वजातुविन्यस्तकर पुरस्ता दाश्वायचूडामणिराविरस्तु ॥ ९ ॥

भालेपवन्त मदनाङ्गभूत्या शार्दूळकुत्त्या परिधानवन्तम् । भालोकये कचन देशिकेन्द्र मञ्चानवाराकरवाडवाग्निम् ॥ १०॥

चारुश्यित सोमकछावतस वीणाधर व्यक्तजटाकछापम् । उपासते केचन योगिनस्त्व मुपात्तनादानुभवप्रमोदम् ॥ ११ ॥ चपासते य सुनय शुकाद्या निराणिषो निर्ममताधिवासा । त दक्षिणामृर्तिततु महेश सुपास्मह मोहमहातिशान्सै ॥ १२ ॥

कान्या निन्दितकुन्दकदळवपुनर्थभोधमूळे वस न्काकण्यामृतवारिभिमुनिजन सभावयन्वीक्षिते । मोहण्वान्तविभेदन विरचयन्बोधेन तत्ताहका देवस्तत्त्वमसीति बोधयतु मा मुद्रावता पाणिना ॥ १३॥

भगौरनेत्रैरळळाटनेत्रै
रज्ञान्तवेषैरभुजगभूषै ।
भवोधसुद्रैरनपास्तनिद्रै
रपूरकामैरमरैरळ न ॥ १४ ।

देवतानि कति सन्ति चावनी नैव तानि मनसो मतानि मे । दीक्षित जडधियामनुष्रहे दक्षिणाभिमुखमव दैवतम् ॥ १५ ॥ मुदिताय मुग्धशिशनावतिसने
भितावलेपरमणीयमूर्तये ।
जगदिन्द्रजालरचनापटीयसे
महसे नमोऽस्तु वटमूळवासिने ॥ १६ ॥

व्यास्त्रिमि परितो जटाभि कलावश्रषेण कलाधरेण । पश्यक्लस्त्रोटेन मुखेन्दुना च प्रकाशसे चेतसि निर्मलानाम् ॥ १७ ॥

उपासकाना त्वमुमासहाय पूर्णेन्दुभाव प्रकटीकरोषि । यद्य ते दर्शनमात्रता मे द्रवत्यहो मानसचन्द्रकान्त ॥ १८॥

यस्त प्रसन्तामनुसद्धानो

मूर्ति सुदा सुग्धशशाङ्कमौछे ।

ऐश्वर्थमायुलभत च विद्या

मन्त च वेदान्तमहारहस्यम् ॥ १९ ॥

इति दक्षिणामृर्तिस्तोल संपूर्णम् ॥

॥ श्री ॥

॥ कालभैरवाष्ट्रकम् ॥

देवराजसेन्यमानपावनाङ्किपङ्कज न्यालयज्ञसूत्रविन्दुशेखर कृपाकरम् । नारदादियोगिवृन्दवन्दित दिगम्बर काशिकापुराधिनाथकालभैरव भजे ॥ १ ॥

भानुकोटिभाखर भवाव्धितारक पर नीलकण्ठमीप्सिताथदायक त्रिलोचनम् । कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षर काशिकापुराधिनाथकालमैरव भजे ॥ २ ॥

श्रूलटक्कपाशदण्डपाणिमादिकारण श्यामकायमादिदेवमक्षर निरामयम् । भीमविक्रम प्रभु विचित्रताण्डवप्रिय काशिकापुराधिनाथकालभैरव मजे ॥ ३ ॥ सुक्तिसुक्तिदायक प्रशस्त्रचारुविष्मह्

भक्तवत्स्रस्त स्थिर समस्तलाकाविष्महम् ।

निकणन्मनोङ्गहेमिकिङ्किणीलस्तकिटं

काशिकापुराधिनाथकालभैरव भज ॥ ४ ॥

धर्मसेतुपालक त्वधममागनाशक कर्मपाशमोचक सुशर्मदायक विसुम् । स्वर्णवर्णकशपाशशोभिताङ्गानर्मल काशिकापुराधिनाथकालभैरव भने ॥ ५ ॥

रत्नपादुकाप्रभाभिरामपाद्युग्मक नित्यमद्वितीयभिष्टदैवत निरञ्जनम् । मृत्युद्पनाशन करालदृष्ट्रभूषण काशिकापुराधिनाथकालभैरव भज ॥ ६ ॥

अट्टहासिमन्नपद्मजाण्डकोशसततिं दृष्टिपातनष्ट्रपापजालमुप्रशासनम् । अष्टिसिद्धदायक कपालमालिकाधर काशिकापुराधिनाथकालभैरव भजे ॥ ७॥ मूतसङ्घनायक विशास्त्रकीर्तिदायक काशिवासिस्त्रोकपुण्यपापशोधक विभुम् । नीतिमार्गकोविद पुरातन जगत्पतिं काशिकापुराधिनाथकास्त्रभैरव मजे ॥ ८ ॥

कालभैरवाष्ट्रक पठिन्त ये मनोहर ज्ञानमुक्तिसाधक विचित्रपुण्यवर्धनम् । शोकमोहलोभदैन्यकोपतापनाशन ते प्रयान्ति कालभैरवाङ्गिसनिधि ध्रुवम् ॥ ९ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ कालभैरवाष्ट्रक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ नर्मदाष्टकम् ॥

सिनन्दुसिन्धुसुस्बलत्तरङ्गभङ्गरिकत द्विषत्सु पापजातजातकादिवारिसयुतम् । इतान्तदूतकालभूतभीतिहारिवर्मदे त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मदे ॥ १ ॥

त्वदम्बुळीनदीनमीनदिन्यसप्रदायक
कळौ मळीघभारहारिमवतीर्थनायकम् ।
सुमच्छकच्छनऋचकवाकचक्रशमेदे
त्वदीयपादपङ्कल नमामि दवि नमेदे ॥ २ ॥

महागभीरनीरपूरपापधृतभूतल
ध्वनत्समस्तपातकारिदारितापदाचलम् ।
जगक्कये महाभये मृकण्डुसूनुहम्यदे
त्वदीयपादपङ्कुज नमामि देवि नमेदे ॥ ३ ॥

गत तदैव मे भय त्वदम्बु विश्वित यदा

मृकण्डुसूजुशौनकासुरारिसेवित सदा।

पुनर्भवाब्धिजन्मज भवाब्धिदु खवर्मदे

त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मदे॥ ४॥

अलक्ष्यलक्षिक्षरामरासुरादिपूजित सुलक्षनीरतीरधीरपश्चिलक्षकृजितम् । विसष्ठिशिष्टपिष्पलादिकर्दमादिक्षमेद त्वदीयपादपङ्कज नमामि दवि नर्मदे ॥ ५॥

सनत्कुमारनाचिकेतकश्यपात्रिषट्पदै

र्धृत स्वकीयमानसेषु नारदादिषट्पदै ।

रवीन्दुरन्तिदेवदेवराजकर्मशर्मेदे

त्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्मद ॥ ६ ॥

अब्धाब्धाब्धापायब्धासायुध ततस्तु जीवजन्तुतन्तुभुक्तिमुक्तिदायकम् । विरिश्विविष्णुशकरस्त्रकीयधामवर्भदे स्वदीयपादपङ्कज नमामि देवि नर्भदे ॥ ७ ॥ भहो धृत स्वन श्रुत महेशिकेशजानट किरातसूत्तवाडवेषु पण्डित शठ नटे। दुरन्तपापतापहारि सर्वजन्तुशर्मद त्वदीयपादपङ्कुज नमामि देवि नमद्॥ ८॥

इद तु नर्भदाष्ठक त्रिकालमेव ये सदा
पठिन्त ते निरन्तर न यन्ति दुगिति कदा।
सुलभ्यदेहदुर्लभ महश्रधामगौरव
पुनर्भवा नरा न वै विलोकयन्ति रौरवम्॥ ९॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत क्रतौ नर्भदाष्टक सपूर्णम् ॥



॥श्री ॥

॥ यमुनाष्ट्रकम् ॥

सुरारिकायकालिमाललामनारिधारिणी तृणीकृतत्रिविष्ठपा त्रिलोकशोकहारिणी। मनोतुकूलकूलकुलपुश्वधूतदुर्भदा धुनोतु नो मनामल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ १ ॥

मळापहारिचारिपूरिभूरिमण्डितामृता

भृशः प्रवातकप्रपञ्चनातिपण्डितानिशा ।

सुनन्दनन्दिनाङ्गसङ्गरागरिङ्गता हिता

धुनोतु ने मनोमळ कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ २ ॥

लसत्तरङ्गसङ्गधूतभूतजातपातका नवीनमाधुरीधुरीणभक्तिजातचातका। तटान्तवासदासहससवृताहिकामदा धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा॥ ३॥ विहाररासखेदभद्धीरतीरमाहता

गता गिरामगोचरे यदीयनीरचाहता।

प्रवाहसाहचर्यपूतमेदिनीनदीनदा

धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ४॥

तरङ्गसङ्गसैकतान्तरातित सदासिता शरिक्रशाकराशुमञ्जुमञ्जरी सभाजिता । भवार्चनाप्रचारुणाम्बुनाधुना विशारदा धुनातु नो मनोमळ किलन्दनन्दिनी सदा ॥ ५ ॥

जलान्तकेलिकारिचाकराधिकाक्करागिणी स्वभर्तुरन्यदुल्लभाक्कताक्कताकभागिनी स्वदत्तसुप्तसप्तसिन्धुभेदिनाातकोविदा धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ६ ॥

जलच्युताच्युताङ्गरागलम्पटालिशालिनी विलोलराधिकाकचान्तचम्पकालिमालिनी । सदावगाहनावतीर्णभर्तृभृत्यनारदा धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ७ ॥ सदैव निद्नन्दकेलिशालिकु समञ्जूला तटोत्थफुलमिलकाकदम्बरेणुसू ज्वला । जलावगाहिना नृणा भवाविधसिन्धुपारदा धुनोतु नो मनोमल कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ८ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ यमुनाष्ट्रक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ यमुनाष्ट्रकम् ॥

कुपापारावारा तपनतनया तापशमना

गुरारिप्रेयस्या भवभयदवा भक्तिवरदाम् ।
वियज्ज्वालोन्युका श्रियमपि सुखाप्ते परिदिन

सदा धीरो नून भजित यमुना निल्यफलदाम् ॥ १ ॥

मधुवनचारिणि भारकरवाहिनि जाह्नविसिङ्गिनि सिन्धुसुते मधुरिपुभूषणि माधवतोषिणि गोकुछभीतिविनाशकृते । जगद्यमोचिनि मानसदायिनि केशवकिछिनिदानगते जय यसुने जय भीतिनिवारिणि सफटनाशिनि पावय माम् ॥

अयि मधुरे मधुमोदिविछासिनि शैलिविदारिणि वेगपरे परिजनपालिनि दुष्टनिषूदिनि वाकिछतकामविछासधरे। व्रजपुरवासिजनार्जितपातकहारिणि विश्वजनोद्धरिके जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम्।। अतिविपदाम्बुधिमग्नजन भवतापशताकुळमानसक
गातिमतिहीनमशेषभयाकुळमागतपादसरोजयुगम् ।
ऋणभयभीतिमानिष्कृतिपातककोटिशतायुतपुश्जतर
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम् ॥

नवजलद्युतिकोटिलसत्ततुहेमभयाभररिकतके
तिहद्वहेलिपदाञ्चलचञ्चलशोभितपीतसुचेलघर ।
मणिमयभूषणिचत्रपटासनरिकतगिकतभानुकरे
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम्॥

शुभपुलिने मधुमत्तयदूद्भवरासमहोत्सवकेलिभरे चचकुलाचलराजितमौक्तिकहारमयाभररोदिसिके । नवमणिकोटिकभास्करकञ्जाकिकोभिततारकहारयुते जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम् ॥

करिवरमौक्तिकनासिकभूषणवातचमत्कृतचश्वलके
मुखकमलामलसौरभचश्वलमत्तमधुव्रतलोचनिक ।
मणिगणकुण्डललोलपरिस्फुरदाकुलगण्डयुगामलके
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम्॥

कळरवन् पुरहेममयाचितपादसरोहहसाहिणके धिमिधिमिधिमिधिमितालविनोदितमानसमञ्जूलपादगते । तव पदपङ्कजमाश्रितमानविच्तसदाखिळतापहर जय यसुने जय भीतिनिवारिणि सकटनाशिनि पावय माम्।।

भवोत्तापाम्भोधौ निपतितज्ञनो दुर्गतियुता यदि स्तौति प्रात प्रतिदिनमनन्याश्रयतया । इयाहेषै काम करकुसुमपु औ रविसुता सदा भोका भोगान्मरणसमये याति हरिताम् ॥ ९॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचायस्य श्रागोवि दमगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ यसुनाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ गङ्गाष्ट्रकम् ॥

भगवित भवलीलामौलिमाल तवाम्भ
कणमणुपरिमाण प्राणिनो य स्पृशन्ति ।
अमरनगरनारीचामरप्राहिणीना
विगतकलिकलक्कातक्कमक्के लुठन्ति ॥ १ ॥

ब्रह्माण्ड खण्डयन्ती हरशिरसि जटाविष्ठमुद्धासयन्ती स्वर्शेकादापतन्ती कनकगिरिगुहागण्डशैलात्स्खलन्ती। श्लोणीपृष्टे लुठन्ती दुरितचयचमूनिभेर भत्संयन्ती पाथोधि पूरयन्ती सुरनगरसरित्पावनी न पुनातु॥२॥

मजन्मातङ्गकुम्भन्युतमद्मदिरामाद्मत्ताछिजाछ स्नाने सिद्धाङ्गनाना कुचयुगविगछःकुङ्कुमासङ्गपिङ्गम् । साय प्रातर्भुनीना कुगकुसुमचयैदिछन्नतीरस्थनीर पायान्नो गाङ्गमम्भ करिकरमकराकान्तरहस्तरङ्गम् ॥

> पार (हण स । १० उद्गेर प्रम्थालय, क च ति शि संस्थाय सार नाथ, बारानसी

भादावादिपितामहस्य नियमध्यापारपाते जल पश्चात्पन्नगञ्चायिनो भगवत पादोदक पावनम् । भूय शभुजटाविभूषणमणिर्जेहोर्भहर्षेरिय कन्या कल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी पातु माम् ॥

शैलन्द्राद्वतारिणी निजजल मजजनोत्तारिणी पारावारिवहारिणी भवभयश्रणीसमुत्सारिणी । श्रावाङ्गरनुकारिणी हरिशरोवल्लीव्लाकारिणी काशीशान्तविहारिणी विजयत गङ्गा मनोहारिणी ॥५॥

कुतो वीची वीचिस्तव यदि गता छोचनपथ त्वमापीता पीताम्बरपुरानिवास वितरिस । त्वदुत्सक्के गङ्को पतित यदि कायस्तनुभृता तदा मात शान्तकतवपदछाभाऽप्यतिछ्छ् ॥ ६ ॥

> भगवति तव तीरे नीरमात्राशनोऽह विगतविषयतृष्ण कृष्णमाराधयामि । सकळकळुषभक्के स्वर्गसोपानसक्के तरळतरतरक्के देवि गक्के प्रसीद् ॥ ७ ॥

मातर्जाहृति शभुसङ्गामिलिते मौलौ निधायाश्वर्षि त्वतीरे वपुषोऽवमानसमये नारायणाङ्किद्वयम् । सानन्द् स्मरतो भविष्यति मम प्राणप्रयाणोत्सवे भूयाद्वत्किरविच्युता हरिहराद्वैतात्मिका शाश्वती ॥ ८॥

गङ्गाष्टकमिद पुण्य य पठेत्प्रयतो नर । सर्वपापविनिर्मुको विष्णुलोक स गन्छति ॥ ९ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रामच्छकरभगवत कृतौ गङ्गाष्टक सपूर्णम् ॥



॥श्री॥

॥ मणिकर्णिकाष्ट्रकम् ॥

त्वत्तीरे मणिकणिके हरिहरी सायुज्यमुक्तिप्रदी
वादन्ती कुरुत परस्परमुभी जन्ती प्रयाणोत्सवे।
मद्रूपो मनुजोऽयमस्तु हरिणा प्रोक्त शिवस्तत्क्षणा
त्तन्मध्याद्रगुळाञ्ळनो गरुडग पीताम्बरो निगत ॥

इन्द्राद्यास्त्रिदशा पतन्ति नियत भोगक्षये ये पुन जीयन्त मनुजास्ततोपि पशव कीटा पतङ्गादय । ये मातर्मणिकणिके तव जले मज्जन्ति निष्कल्मषा सायुज्यऽपि किरीटकौस्तुभधरा नारायणा स्युनरा ॥

काशी धन्यतमा विमुक्तनगरी सालकृता गङ्गया तत्रेय माणिकणिका सुखकरी मुक्तिहिं तर्तिकरी। स्वलोंकस्तुलित सहैव विद्युधै काश्या सम ब्रह्मणा काशी श्लोणितल स्थिता गुरुतरा स्वर्गो लघुत्व गत ॥ गङ्गातीरमनुत्तम हि सक्छ तत्रापि काश्युत्तमा तस्या सा मणिकणिकोत्तमतमा यत्रेश्वरो मुक्किद । देवानामपि दुर्छभ खळमिद पापौघनाशक्षम पूर्वोपाजितपुण्यपुत्तगमक पुण्यैर्जनै प्राप्यते ॥ ४॥

दु खाम्भोधिगतो हि जन्तुनिवहस्तेषा कथ निष्कृति ज्ञात्वा तद्धि विरिश्चिना विरचिता वाराणसी शर्मदा। लोका स्वगसुखास्ततोऽपि लघवो भोगान्तपातप्रदा काशी सुक्तिपुरी सदा शिवकरी धर्माथमोक्षप्रदा॥ ५॥

एको वेणुघरो धराधरधर श्रीवत्सभूषाधर योऽप्येक किल शकरो विषधरो गङ्गाधरो माधव । ये मातर्मणिकर्णिके तव जले मज्जन्ति ते मानवा कद्रा वा हरयो भवन्ति बहवस्तेषा बहुत्व कथम् ॥ ६॥

त्वत्तीरे मरण तु मङ्गलकर देवैरिप श्लाघ्यते शकस्त मनुज सहस्रनयनैद्रष्टु सदा तत्पर । आयान्त सविता सहस्रकिरणै प्रत्युद्रतोऽभूत्सदा पुण्योऽसौ वृषगोऽथवा गरुडग किं मदिर यास्पति ॥ मध्याद्वे मणिकर्णिकास्तपनज पुण्य न वक्तु क्षम
स्वीयैरब्धशतैश्चतुर्मुखधरो वेदाथदीक्षागुरु ।
योगाभ्यासबळेन चन्द्रशिखरस्तत्पुण्यपारगत
स्वत्तीरे प्रकराति सुप्तपुरुष नारायण वा शिवम् ॥ ८॥

कुच्छ्रे कोटिशते खपापनिधन यचाश्वमेधे फल तत्सर्व मणिकणिकास्त्रपन जे पुण्ये प्रविष्ट भवेत् । स्नात्वा स्तोत्रमिद् नर पठित चेत्ससारपाथोनिधि तीर्त्वो परुवलवत्प्रयाति सद्न तेजोमय ब्रह्मण ॥ ९ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचायस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ मणिकाणिकाष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ निर्गुणमानसपूजा ॥

शिष्य खबाच---

अखण्डे सचिदानन्दे निर्विकल्पैकरूपिणि । स्थितेऽद्वितीयभावेऽपि कथ पूजा विधीयते ॥ १ ॥ पूर्णस्यावाहन कुत्र सर्वोधारस्य चासनम् । स्वच्छस्य पाद्यमध्ये च शुद्धस्याचमन कुत ॥ २ ॥ निर्मेलस्य कुत स्नान वासो विश्वोदरस्य च। अगोत्रस्य त्ववर्णस्य कुतस्तस्योपनीतकम् ॥ ३ ॥ निर्लेपस्य कुता गन्ध पुष्प निर्वासनस्य च । निर्विशेषस्य का भूषा कोऽछकारो निराकृते ॥ ४ ॥ निरञ्जनस्य किं धूपैदीपैर्वा सर्वसाक्षिण निजानन्दैकतृप्तस्य नैवेद्य किं भवेदिह ॥ ५ ॥ विश्वानन्द्यितुस्तस्य किं ताम्बूल प्रकल्पते । स्वयप्रकाशिचद्रपा योऽसावकीदिभासक ॥ ६॥

गीयते श्रुतिभिस्तस्य नीराजनविधि कुत । प्रदक्षिणमनन्तस्य प्रमाणोऽद्वयवस्तुन ॥ ७॥

वेदवाचामवेद्यस्य किं वा स्तोत्र विधीयते । अन्तर्वेहि सस्थितस्योद्वासनविधि कुत ॥ ८॥

श्रीगुरुरुवाच----

आराधयामि मणिसनिभमात्मिलङ्ग मायापुरीहृद्यपङ्कजसनिविष्टम् । श्रद्धानदीविमल्जिचत्रजलाभिषेकै नित्य समाधिकुसुमैरपुनर्भवाय ॥ ९ ॥

भयमेकोऽवशिष्टोऽस्मीत्येवमावाह्येच्छिवम् । आसन कल्पयेत्पश्चात्स्वप्रतिष्ठात्मचिन्तनम् ॥ १० ॥

पुण्यपापरज सङ्को मम नास्तीति वेदनम् । पाद्य समर्पेयेद्विद्वान्सवकलमधनाशनम् ॥ ११ ॥

अनादिकरुपविधृतमूळाज्ञानजळा अछिम् । विसृजेदात्मळिङ्गस्य तदेवार्घ्यसमर्पणम् ॥ १२ ॥

ब्रह्मानन्दाव्धिकञ्जोलकणकोट्यशलेशकम् । पिबन्तीन्द्रादय इति भ्यानमाचमन मतम् ॥ १३ ॥ ब्रह्मानन्द्जलेनैव लोका सर्वे परिप्रुता । अच्छेद्योऽयमिति ध्यानमभिषचनमात्मन ॥ १४॥

निरावरणचैतन्य प्रकाशाऽस्मीति चिन्तनम् । आत्मलिङ्गस्य सद्वस्त्रमित्येव चिन्तयेनमुनि ॥ १५॥

त्रिगुणात्माशेषळोकमाळिकासूत्रमस्म्यहम् । इति निश्चयमेवात्र द्युपनीत पर मतम् ॥ १६ ॥

भनेकवासनामिश्रप्रपश्चोऽय घृतो मया । नान्येनेत्यनुसंघानमात्मनश्चन्दन भवेत् ॥ १७ ॥

रज सत्त्वतमोवृत्तित्यागरूपैस्तिलाक्षते । आत्मालिङ्ग यजेन्नित्य जीवनमुक्तिप्रसिद्धये ॥ १८॥

ईश्वरो गुरुरात्मेति भेदत्रयविवर्जिते । विल्वपत्रैरद्वितीयैरात्मलिङ्ग यजेच्छिनम् ॥ १९॥

समस्तवासनात्माग धूप तस्य विचिन्तयेत्। ज्योतिर्मयात्मविज्ञान दीप सदर्शयेद्वुध ॥ २०॥

नैवेद्यमात्मिळिङ्गस्य ब्रह्माण्डारय महोदनम् । पिवानन्दरस स्वादु मृत्युरस्यापसचनम् ॥ २१ ॥

अज्ञानोन्छिष्टकरस्य भ्राछन ज्ञानवारिणा । विश्रद्धस्यात्मलिङ्गस्य इस्तप्रश्वालन म्मरेत् ॥ २२ ॥ रागादिगुणशून्यस्य शिवस्य परमात्मन । सरागविषयाभ्यासत्यागस्ताम्बृळचवणम् ॥ २३ ॥ अज्ञानध्वान्तविध्वसप्रचण्डमतिभास्करम् । आत्मनो ब्रह्मताज्ञान नीराजनमिहात्मन ॥ २४ ॥ विविधनद्वासदृष्टिमी लिकाभिरलकृतम् । पूर्णान-दात्मतादृष्टि पुष्पाश्चालिमनुसारेत् ॥ २५ ॥ परिश्रमन्ति ब्रह्माण्डसहस्राणि मयीश्वरे । कूटस्थाचलरूपोऽहमिति ध्यान प्रदक्षिणम् ॥ २६ ॥ विश्ववन्द्योऽहमेवास्मि नास्ति वन्धो मदन्यत । इयालोचनमेवात्र स्वात्मलिङ्गस्य वन्दनम् ॥ २७॥ आत्मन सिक्रया शोक्ता कर्तव्याभावभावना । नामरूपव्यतीतात्मचिन्तन नामकीर्तनम् ॥ २८ ॥ श्रवण तस्य द्वस्य श्रोतव्याभावचिन्तनम् ।

मनन त्वात्मिळिङ्गस्य मन्तव्याभावचिन्तनम् ॥ २९ ॥

ध्यातव्याभावविज्ञान निद्धियासनमात्मन । समस्तभ्रान्तिविश्चेपराहित्येनात्मनिष्ठता ॥ ३० ॥ समाधिरात्मनो नाम नान्यिचित्तस्य विश्वम । तन्नैव ब्रह्मणि सदा चित्तविश्रान्तिरिष्यते ॥ ३१ ॥ एव वेदान्तकस्पोक्तस्यात्मिळङ्गप्रपूजनम् । कुर्वन्ना मरण वापि क्षण वा सुसमाहित ॥ ३२ ॥ सर्वेदुर्वासनाजाळ पदपासुमिव त्यजेत् । विध्याङ्गानदु स्वौष मोक्षानन्द समस्तुते ॥ ३३ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचायस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमञ्छकरभगवत कृतौ निगुणमानसपूजा सपूणो ॥



॥ श्री ॥

॥ प्रातःस्मरणस्तोत्रम् ॥

प्रात स्मरामि हृदि सस्फुरदात्मतत्त्व सिचत्सुख परमहसगितं तुरीयम् । यस्तु प्रजागरसुषुप्तमवैति नित्य तद्वस्य निष्कलमह न च भूतसञ्ज ॥ १ ॥

श्रातभजामि मनसा वससामगम्य वाचो विभान्ति निखिला यद्तुप्रहेण। यश्रेति नेति वसनैर्निगमा अवोस स्त देवदेवमजमच्युतमाहुरस्यम्॥ २॥

शातनेमामि तमस परमर्कवर्णे
पूर्णं सनातनपद पुरुषोत्तमारयम् ।
यस्मिश्रिद जगद्शेषमशेषमूतौं
रङ्बा भुजगम इव प्रतिभासित वै ॥ ३ ॥

ऋोकत्रयमिद् पुण्य छोकत्रयविभूषणम् । प्रात काळे पठेद्यस्तु स गन्छेत्परम पदम् ॥ ४ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ प्रात स्मरणस्तोल सपूर्णम् ॥



॥ आः ॥

॥ जगन्नाथाष्ट्रकम् ॥

कदाचित्कालिन्दीतटविपिनसगीतकवरो गुदा गापीनारीवदनकमलास्वादमधुप । रमाञ्चभुब्रह्मामरपतिगणशाचितपदो जगभाथ स्वामी नयनपथगामा भवतु मे ॥ १ ॥

मुजे सन्ये वेणु शिरसि शिखिपिव्छ कटितटे

दुकूछ नेत्रान्त सहचरकटाक्ष विदधत्।

सदा श्रीमद्भृन्दावनवस्रतिलीलापरिचयो

जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ २ ॥

महाम्मोधेस्तीरे कनकक्षिर नीलाशिखरे वसन्त्रासादान्त सह्जवल्लभद्रेण बल्लिना । सुभद्रामध्यस्य सकलसुरसेवावसरदो जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ३ ॥ कुपापारावार सजळजळदश्रेणिकिचरो रमावाणीसोमस्फुरदमळपद्मोद्भवमुखे । सुरेन्द्रैराराध्य श्रुतिगणशिखागीतचरितो जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ४ ॥

रथारूढो गच्छन्पथि मिलितभूदेवपटलै स्तुतिप्रादुर्भाव प्रतिपद्मुपाकण्यं सद्य । द्यासिन्धुर्वन्धु सकलजगता सिन्धुसुत्रया जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ५ ॥

परब्रह्मापीड कुवलयदलोत्फुल्लनयनो निवासी नीलाद्रौ निहितचरणोऽनन्तिश्चि। रसानन्दो राधासरसवपुरालिङ्गनसुखो जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ६ ॥

न वै प्रार्थ्य राज्य न च कनकता भोगविभवे न याचेऽह रम्या निखिलजनकाम्या वरवधूम्। सदा काले काले प्रमथपतिना गीतचरितो जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ७॥ हर त्व ससार द्वुततरमसार सुरपते

हर त्व पापाना विततिमपरा यादवपते ।

अहो दीनानाथ निहितमचळ पातुमनिश

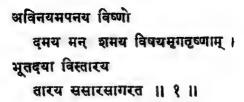
जगन्नाथ स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ८॥

इति श्रीमत्परमहसपरित्राजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ जगन्नाथाष्ट्रक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ षट्पदीस्तोत्रम् ॥



दिव्यधुनीमकरन्दे
परिमलपरिभोगसिदानन्द ।
श्रीपतिपदारिवन्दे
भवभयखेदिन्छदे वन्दे ॥ २ ॥

सत्यपि भेदापगमे

नाथ तवाह न मामकीनस्त्वम् ।
सामुद्रो हि तर्ङ्ग
कचन समुद्रो न तारङ्ग ॥ ३ ॥

चढ्ढ्वनग नगभिद्तुज द्तुजकुछामित्र मित्रशशिद्दष्टे । दृष्टे भवति प्रभवति न भवति किं भवतिरस्कार ॥ ४॥

मत्स्यादिभिरवतारै-रवतारवतावता सदा वसुधाम् । परमेश्वर परिपाल्यो भवता भवतापभीतोऽहम् ॥ ५ ॥

दामोदर गुणमन्दिर
सुन्दरवदनारविन्द गोविन्द ।
भवजलिधमथनमन्दर
परम दरमपनय त्व मे ॥ ६ ॥

नारायण करुणामय श्वरण करवाणि तावकौ चरणौ। इति षट्पदी मदीये वदनसरोजे सदा वसतु॥ ७॥

इति षद्पदीस्तोत्र सपूर्णम् ॥

॥श्री॥

॥ भ्रमराम्बाष्टकम् ॥

चाश्वस्यारुणलोचनाश्वितक्रुपाचन्द्राकचूडामणि
चारुस्मेरमुखा चराचरजगत्सरक्षणीं तत्पदाम् ।
चश्वचम्पकनासिकाप्रविल्यसम्मुक्तामणीरिकता
श्रीशैल्खलवासिनीं भगवतीं श्रीमात्तर भावये ॥ १ ॥

कस्तूरीतिलकाि चतेन्दुविलसःश्रोद्धासिफालस्थली कपूरद्रविमश्रचूर्णखिदरामोदोलसद्दीटिकाम् । लोलापाङ्गतरङ्गितैरिषक्ठपासारैनेतानिदनीं श्रीशैलस्थलवासिनी भगवर्ती श्रीमातर भावये ॥ २ ॥

राजन्मत्तमरालमन्दगमना राजीवपत्रेक्षणा राजीवप्रभवादिदेवमकुटै राजत्पदान्भोष्ठहाम् । राजीवायतमन्दमण्डितकुचा राजाधिराजेश्वरीं श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमात्तर भावये ॥ ३ ॥ षट्तारा गणदीपिका शिवसती षड्वैरिवर्गापहा षट्चक्रान्तरसस्थिता वरसुधा षड्योगिनीवेष्टिताम् । षट्चक्राश्चितपादुकाश्चितपदा षड्भावगा घोडशीं श्रीशैठस्थळवासिनी भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ४ ॥

श्रीनाथादतपालितत्रिभुवना श्रीचक्रसचारिणीं द्वानासक्तमनोजयौवनलसद्ग्नधर्वकन्यादताम् । दीनानामतिवेलभाग्यजननीं दिच्याम्बरालक्कृता श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवती श्रीमातर भावये ॥ ५॥

लावण्याधिकभूषिताङ्गलतिका लाक्षालसद्रागिणीं सेवायातसमस्तदेववनिता सीमन्तभूषान्विताम् । भावोद्धासवशीकृतप्रियतमा मण्डासुरच्छेदिनी श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ६ ॥

धन्या सोमविभावनीयचरिता धाराधरश्यामला

गुन्याराधनमेधिनीं सुमवता मुक्तिप्रदानव्रताम् ।

कन्यापूजनसुप्रसन्नहृद्या काश्वीलसन्मध्यमा

श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ७ ॥

कर्पूरागरुकुङ्कुमाङ्कितकुचा कर्पूरवर्णस्थिता कृष्टोत्कृष्टसुकृष्टकमदहना कामेश्वरीं कामिनीम् । कामाश्चीं करुणारसार्द्रहृद्या कल्पान्तरस्थायिनीं श्रीशैखस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ८ ॥

गायत्रीं गरुडध्वजा गगनगा गान्धर्वगानित्रया गम्भीरा गजगामिनीं गिरिसुता गन्धाक्षतालकृताम् । गङ्गागौतमगर्गसनुतपदा गा गौतमीं गोमतीं श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं श्रीमातर भावये ॥ ९ ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रागोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ भ्रमराम्बाष्टकं सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम् ॥

श्रीमदात्मने गुणैकसिन्धवे नम शिवाय धामछेशधूतकोकबन्धवे नम शिवाय। नामशेषितानमद्भवान्धवे नम शिवाय पामरेतरप्रधानबन्धवे नम शिवाय॥ १॥

कालभीतविप्रवालपाल ते नम शिवाय शूलिमबदुष्टदश्वफाल ते नम शिवाय। मूलकारणाय कालकाल ते नम शिवाय पालयाधुना दयालवाल ते नम शिवाय॥ २॥

इष्टवस्तुमुख्यदानहेतवे नम शिवाय दुष्टदैत्यवशधूमकेतवे नम शिवाय । सृष्टिरक्षणाय धर्मसेतवे नम शिवाय अष्टमूर्तये वृषेन्द्रकेतवे नम शिवाय ॥ ३ ॥ आपदद्रिभेदटक्कहस्त ते नम शिवाय पापहारिदिव्यसिन्धुमस्त ते नम शिवाय। पापदारिणे उसम्रमस्तते नम शिवाय शापदोषखण्डनप्रशस्त ते नम शिवाय।। ४॥

व्योमकेश दिव्यभव्यक्षप ते नम शिवाय हेममेदिनीघरेन्द्रचाप ते नम शिवाय। नाममात्रदग्धसर्वपाप ते नम शिवाय कामनैकतानहृहुराप ते नम शिवाय॥ ५॥

ब्रह्ममस्तकावलीनिबद्ध ते नम शिवाय जिह्मगेन्द्रकुण्डलप्रसिद्ध ते नम शिवाय । ब्रह्मणे प्रणीतवेद्पद्धते नम शिवाय जिह्नकालदेहद्त्तपद्धते नम शिवाय ॥ ६ ॥

कामनाशनाय शुद्धकर्मणे नम शिवाय सामगानजायमानशर्मणे नम शिवाय । हेमकान्तिचाकचक्यवर्मणे नम शिवाय सामजासुराङ्गलब्धचर्मणे नम शिवाय ॥ ७ ॥ जन्ममृत्युघोरदु खहारिणे नम शिवाय ।
चिन्मयैकरूपदेहधारिणे नम शिवाय ।
मन्मनोरथावपूर्तिकारिणे नम शिवाय
सन्मनोगताय कामपैरिणे नम शिवाय ॥ ८ ॥

यक्षराजनन्थवे दयालवे नम शिवाय दक्षपाणिशोभिकाश्वनालवे नम शिवाय। पक्षिराजवाहहृच्छयालवे नम शिवाय अश्विफाल वेदपूततालवे नम शिवाय॥ ९॥

दश्चहस्तिनिष्ठजातवेदसे नम शिवाय अक्षरात्मने नमद्भिडीजसे नम शिवाय । दीक्षितप्रकाशितात्मतेजसे नम शिवाय दक्षराजवाह ते सता गते नम शिवाय ॥ १०॥

राजताचळेन्द्रसातुवासिने नम शिवाय राजमानित्यमन्द्द्दासिने नम शिवाय। राजकोरकावतसभासिने नम शिवाय राजराजमित्रताप्रकाशिने नम शिवाय॥ ११॥ दीनमानवालिकामधेनवे नम शिवाय सूनवाणदाहकुत्क्वशानवे नम शिवाय। स्वानुरागभक्तरत्नसानवे नम शिवाय । दानवान्धकारचण्डभानवे नम शिवाय ॥ १२ ॥

सर्वमङ्गलाकुचाप्रशायिने नम शिवाय सवदेवतागणातिशायिन नम शिवाय पूर्वदेवनाशस्वविधायिने नम शिवाय सर्वमन्मनोजभङ्गदायिने नम शिवाय ॥ १३ ॥

स्तोकभक्तितोऽपि भक्तपोषिणे नम शिवाय माकरन्दसारवर्षिभाषिणे नम शिवाय। एकबिस्वदानतोऽपि तोषिणे नम शिवाय नैकजन्मपापजाळशोषिणे नम शिवाय॥ १४॥

सर्वजीवरक्षणैकशिक्षिते नम शिवाय पार्वतीष्रियाय भक्तपालिने नम शिवाय । दुर्विद्ग्धदेखसैन्यदारिण नम शिवाय शर्वरीशधारिणे कपालिने नम शिवाय ॥ १५ ॥ पाहि मामुमामनोज्ञदेह ते नम शिवाय वेहि मे वर सिताद्रिगेह ते नम शिवाय। मोहितर्षिकामिनीसमूह ते नम शिवाय स्वेहितप्रसन्न कामदोह ते नम जिवाय ॥ १६ ॥

मङ्गलप्रदाय गोतुरग ते नम शिवाय गक्र्या तरक्रितोत्तमाङ्ग ते नम शिवाय। सङ्गरप्रवृत्तवैरिभद्ग त नम शिवाय अङ्गजारय करेकुरङ्ग त नम शिवाय ॥ १७ ॥

ईहितक्षणप्रदानहेतवे नम शिवाय आहिताग्निपालकोक्षकेत्रे नम शिवाय। देहकान्तिधूतरीव्यधातवे नम शिवाय गेहदु खपुराधूमकेतवे नम शिवाय ॥ १८ ॥

ज्यक्ष दीनसत्कृपाकटाक्ष ते नम शिवाय दक्षसप्ततन्तुनाशदक्ष ते नम शिवाय। ऋक्षराजभातुपावकाक्ष त नम शिवाय रक्ष मा प्रपन्नमात्ररक्ष ते नम शिवाय ॥ १९॥ न्यङ्कपाणये शिवकराय ते नम शिवाय सकटाव्धितीर्णिकंकराय ते नम शिवाय। पद्रभीषिताभयकराय ते नम शिवाय पङ्कजाननाय शकराय ते नम शिवाय ॥ २० ॥

कर्मपाञ्चनाञ्च नीलकण्ठ ते नम शिवाय शर्मदाय नर्यभस्मकण्ठ ते नम शिवाय। निर्भमर्षिसेवितोपकण्ठ ते नम शिवाय कुर्मेहे नतीर्नमद्विकुण्ठ ते नम शिवाय ॥ २१ ॥

विष्ट्रपाधिपाय नम्नविष्णवे नम शिवाय शिष्टविप्रहृदुहाचरिष्णवे नम शिवाय। इष्टवस्त्वनित्यतुष्टजिष्णवे नम शिवाय कष्टनाज्ञनाय लोकजिष्णवे नम शिवाय ॥ २२ ॥

अप्रमेयदिव्यसुप्रभाव ते नम शिवाय सत्त्रपन्नरक्षणस्वभाव ते नम शिवाय। स्वप्रकाश निस्तुलानुभाव ते नम शिवाय विप्रडिम्भवर्शितार्द्रभाव ते नम शिवाय ॥ २३ ॥

१२८ शिवपञ्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्रम्।

सेवकाय में मृड प्रसीद ते नम शिवाय भावलभ्य तावकप्रसाद ते नम शिवाय। पावकाक्ष देवपूरुयपाद ते नम शिवाय तावकाक्षिभक्तदक्तमोद ते नम शिवाय॥ २४॥

भुक्तिमुक्तिदिव्यभोगदायिने नम शिवाय शक्तिकित्पतप्रपश्चभागिने नम शिवाय। भक्तसकटापहारयोगिने नम शिवाय युक्तसनमन सरोजयोगिने नम शिवाय॥ २५॥

अन्तकान्तकाय पापहारिण नम शिवाय शान्तमायदन्तिचर्मधारिणे नम शिवाय। सतताश्रितव्यथाविदारिणे नम शिवाय जन्तुजातनित्यसौख्यकारिणे नम शिवाय।। २६॥

शूछिने नमो नम कपाछिने नम शिवाय पाछिने विरिश्चितुण्डमाछिने नम शिवाय। छीछिने विशेषकण्डमाछिने नम शिवाय शीछिने नम प्रपुण्यशाछिने नम शिवाय॥ २७॥ शिवपश्चाश्चरमुद्रा चतुष्पदोञ्जासपद्यमणिषटिताम् । नश्चत्रमाखिकामिह् द्यदुपकण्ठ नरो भवेत्सोम ॥ २८॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचायस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ शिवपश्चाक्षरनक्षत्रमालास्तोत्र सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ द्वादशिलिङ्गस्तोत्रम् ॥



सौराष्ट्रदेशे वसुधावकाशे
ज्योतिमय चन्द्रकळावतसम्।
भक्तिप्रदानाय कृतावतार
त सोमनाथ शरण प्रपर्थे ॥ १ ॥

श्रीशैळशृङ्ग विविधप्रसङ्गे शेषाद्रिशृङ्गेऽपि सदा वसन्तम् । तमर्जुन मिक्कपूर्वमेन नमामि ससारसमुद्रसेतुम् ॥ २ ॥

अवन्तिकाया विहितावतार मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम्। अकालमृत्यो परिरक्षणार्थं वन्दे महाकालमह सुरेशम्॥ ३॥ कावेरिकानर्भदयो पवित्रे
समागमे सज्जनतारणाय ।
सदैव मान्धातृपुरे वसन्त
मोंकारमीश शिवमेकमीढे ॥ ४ ॥

पूर्वोत्तरे पारिकशिमधाने
सवाशिव त गिरिजासमेतम् ।
सुरासुराराधितपादपद्यः
श्रीवैद्यनाथ सतत नमामि ॥ ५ ॥

आमर्रसक्ते नगरे च रस्ये विभूषिताङ्ग विविधेश्व भोगै । सङ्गुक्तिमुक्तिप्रदमीशमेक ,श्रीनागनाथ श्रण प्रपद्ये ॥ ६ ॥

सानन्दमानन्दवने वसन्त मानन्दकन्द हर्तपापब्रन्दम् । वाराणसीनाथमनाथनाथ श्रीविश्वमार्थं शर्रणं श्रवद्ये । ७गां यो डाकिनीशाकिनिकासमाजे
निषेव्यमाण पिशिताशनैश्च।
सदैव भीमादिपदप्रसिद्ध
त शकर भक्तहित नमामि ॥ ८॥

श्रीताम्रपर्णाजलराशियोगे निवद्धय सेतु निशि विल्वपत्रै । श्रीरामचन्द्रेण समर्चित त रामेश्वराख्य सतत नमामि ॥ ९ ॥

सिंहाद्रिपार्श्वेऽपि तट रमन्त
गोदावरीतीरपिवश्रदेशे ।
यद्शेनात्पातकजातनाश
प्रजायते ज्यम्बकमीशमीडे ॥ १० ॥

हिमाद्रिपार्श्वेऽपि तटे रमन्त सपूज्यमान सतत सुनीन्द्रे । सुरासुरैर्यक्षमहोरगाचै केदारसङ्ग शिवमीशमीढे ॥ ११ ॥ पळापुरीरम्यशिवालयेऽस्मि
न्समुक्कसन्त त्रिजगद्धरेण्यम् ।
वन्दे महोदारतरस्वभाव
सदाशिव त धिषणेश्वराख्यम् ॥ १२ ॥

एतानि लिङ्गानि सदैव मत्यों प्रात पठन्तोऽमलमानसाश्च । ते पुत्रपौत्रेश्च धनैरुदारै सत्कीर्तिभाज सुखिनो भवन्ति ॥ १३॥

> इति श्रीमत्परमइसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमञ्छकरभगवत कृतौ द्वादशलिक्षस्तोत्र सपूर्णम् ।



॥ श्रा ॥

॥ अर्धनारिश्वरस्तोत्रम् ॥



चाम्पेयगौरार्घशरीरकायै
कर्पूरगौराधशरीरकाय।
धम्मिल्लकायै च जटाधराय
नम' शिवायै च नम शिवाय॥ १॥

करतूरिकाकुकुमर्चाचतायै चितारज पुराविचर्चिताय । कृतस्मरायै विकृतस्मराय नम शिवायै च नम शिवाय ॥ २ ॥

झणत्कणत्कक्कणन्पुराये
पादाब्जराजत्कणिन्पुपुराय ।
हेमाक्कदाये भुजगाक्कदाय
नम शिवाये च नम शिवाय ॥ ३ ॥

विज्ञालनीलोत्पललोचनायै विकासिपङ्केषहलोचनाय । समेक्षणायै विषमेक्षणाय नम शिवायै च नम शिवाय ॥ ४ ॥

मन्दारमालाकिलतालकायै
कपालमालाङ्कितकन्धराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय
नम शिवायै च नम शिवाय॥ ५ ॥

अम्भोधरद्वयामलकुन्तलायै
तिट्स्प्रभाताम्रजटाधराय ।
निरीश्वरायै निखिलेश्वराय
नम शिवायै च नम शिवाय ॥ ६ ॥

प्रपश्चसृष्ट्यनुन्मुखलास्यकाये
समस्तसहारकताण्डवाय ।
जगज्जनन्ये जगदेकपित्रे
नम शिवाये च नम शिवाय ॥ ७ ॥

प्रदीप्तरत्नोज्ज्वलकुण्डलायै स्फुरन्महापन्नगभूषणाय । शिवान्वितायै च शिवान्विताय नम शिवायै च नम शिवाय ॥ ८ ॥

एतत्पठेदष्ठकमिष्टद या
भक्त्या स मान्यो भुवि दिघजीवी ।
प्राप्नोति सौभाग्यमनन्तकाल
भूयात्सदा तस्य समस्तिसिद्धि ॥ ९ ॥

इति शीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ अर्धनारीश्वरस्तोत्नम् सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ शारदाभुजंगप्रयाताष्ट्रकम् ॥



सुवक्षोजकुम्भा सुधापूर्णकुम्भा प्रसादावलम्बा प्रपुण्यावलम्बाम् । सदास्येन्दुविम्बा सदानोष्ठविम्बा भजे शांरदाम्बामजस्न मदम्बाम् ॥ १ ॥

कटाक्षे दयाद्री करे ज्ञानमुद्रा कलाभिविनिद्रा कलापै सुभद्राम् । पुरस्त्री विनिद्रा पुरस्तुङ्गभद्रा भजे ज्ञारदाम्बामजस्र मदम्बाम् ॥ २ ॥

ख्लामाङ्कपृत्वा खसद्गानलोला स्वभक्तैकपाला यश श्रीकपोलाम् । करे त्वक्षमाला कनत्त्रत्रलोला भजे शारदास्वामजस मदस्वाम् ॥ ३ ॥ सुसीमन्तवेणीं हशा निर्जितेणीं रमत्कीरवाणीं नमद्वजपाणीम् । सुधामन्थरास्या सुदा चिन्त्यवेणीं भजे शारदाम्बामजस्र मदम्बाम् ॥ ४ ॥

सुशान्ता सुदेहा हगन्ते कचान्ता

ळसत्सहताङ्गीमनन्तामचिन्त्याम् ।

स्मरेत्तापसै सङ्गपूर्वस्थिता ता

भजे शारदाम्बामजस्र मदम्बाम् ॥ ५ ॥

कुरक्के तुरगे मृगेन्द्रे खगेन्द्रे मराळे मदेभे महोक्षेऽधिक्तलाम् । महत्या नवस्या सदा सामक्रपा भजे शारदास्वामजस्त्र मदस्वाम् ॥ ६ ॥

व्वल्रकान्तिवहिं जगन्मोहनाङ्गी
भन्ने मानसान्भोजसुभ्रान्तभृङ्गीम् ।
निजस्तोत्रसगीतनृत्यप्रभाङ्गी
भन्ने शारदान्वामनम् मदन्वाम् ॥ ७ ॥

भवाम्भोजनेत्राजसपूज्यमाना छस्यन्मन्द्रासप्रभावस्त्रचिह्नाम् । चरुष्यञ्चलाचारताटक्कुकणी भजे शारदाम्बामजस्न मदम्बाम् ॥ ८॥

> इति श्रीमत्परमहसपित्राजकाचार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ शारदासुजगप्रयाताष्टक सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ गुर्वष्टकम् ॥

श्रारीर सुरूप तथा वा कछत्र यशश्चार चित्र धन मेरुतुल्यम् । मनश्चेत्र छम गुरोरङ्घिपदा तत किंतत किंतत किंतत किंतत किम् ॥ १ ॥

कलत्र धन पुत्रपौत्रादि सर्वे
गृह बान्धवा सर्वेमेतद्धि जातम्।
मनश्चेत्र लग्न गुरोरङ्घिपद्ये
तत किं तत किं तत किं तत किम्॥ २॥

षडक्नादिवेदो सुखे शास्त्रविद्या कवित्वादि गद्य सुपद्य करोति । सनश्चेत्र लग्न गुरोरङ्ग्रिपद्मे तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ३ ॥ विदेशेषु मान्य स्वदेशेषु धन्य सदाचारयुत्तेषु मत्तो न चान्य । मनश्चेत्र छप्न गुरोरङ्घिपदा तत किं तत किं तत किं तत किं तत किम्।। ४।।

श्वमामण्डले भूपभूपालवृत्दै सदा सेवित यस्य पादारिवन्दम् । मनश्चेत्र लग्न गुरोरङ्घिपदो तत किंतत किंतत किंतत किम् ॥ ५॥

यशो में गत विश्च दानप्रतापा जगद्वस्तु सर्वे करे यत्प्रसादात्। मनश्चेत्र लग्न गुरोरङ्घिपद्मे तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ६॥

न भोगे न योगे न वा वाजिराजी न कान्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम् । मनश्चेत्र छम गुरोरङ्घिपद्ये तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ७ ॥ श्वरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये न देहे मनो वर्तते मे त्वनव्ये । मनश्चेत्र छम् गुरोरङ्घिपद्ये तत किं तत किं तत किं तत किम् ॥ ८॥

गुरोरष्टक य पठेःपुण्यदेही
यतिर्भूपतिर्मेद्वाचारी च गेही।
लभेद्वाञ्चितार्थ पद ब्रह्मसज्ञ
गुरोहक्तवाक्ये मनो यस्य लग्नम् ॥ ९॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजका चार्यस्य श्रीगोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ गुर्वेष्टक सपूर्णम् ॥



॥श्री॥

॥ काशीपञ्चकम् ॥



मनो निवृत्ति परमोपशान्ति सा तीर्थवर्या मणिकणिका च। ज्ञानप्रवाहा विमळादिगङ्गा सा काशिकाह निजवोधरूपा ॥ १॥

यस्यामिद् कल्पितमिन्द्रजाल चराचर भावि मनोविलासम् । सिचत्सुखैका परमात्मरूपा सा काशिकाह निजवोधरूपा ॥ २ ॥

कोशेषु पश्चस्वधिराजमाना बुद्धिर्भवानी प्रतिदेहगेहम् । साक्षी शिव सर्वेगतोऽन्तरात्मा सा काशिकाह निजवोधक्ष्या ॥ ३ ॥ कारया हि कारात काशी काशी सर्वप्रकाशिका। सा काशी विदिता येन तेन प्राप्ता हि काशिका॥ ४॥

काशिक्षेत्र शरीर त्रिभुवनजननी व्यापिनी ज्ञानगङ्गा
भक्ति श्रद्धा गयेय निजगुरुचरणध्यानयोग प्रयाग ।
विश्वेशोऽय तुरीय सकलजनमन साक्षिभूतोऽन्तरात्मा
देहे सर्व मदीये यदि वसति पुनस्तीर्थमन्यत्किमस्ति ॥

इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रागोवि दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छकरभगवत कृतौ काशीपश्चक संपूर्णम् ॥





॥ श्रीः ॥

॥ श्लोकानुक्रमणिका ॥

	पृष्ठम्		मुख्यू
अ		अनादिकल्प	906
अखण्डे सिचदान दे	900	अनेकवासनामिश्र	908
अगौरनेत्रै	29	अतकातकाय	926
अग्रे विह्न	६६	अ धस्य मे हृतविवेक	98
अङ्ग गलित	६५	अन्नपूर्णे सदापूर्णे	90
अङ्ग हरे पुलक	v o	अपारकारुण्य	64
अच्युत केशव राम	39	अप्रमेयदि य	920
अच्युत केशव सत्य	३९	अम्मोधरश्यामल	934
अच्युतस्याष्ट्रक य	89	अयमेकोऽवशिष्टो	१०८
अज रुक्मिणीप्राण	36	अयि मधुरे	36
अज्ञानध्वान्त	99	अरण्ये न वा खस्य	१४२
अज्ञानोच्छिष्टकरस्य	990	अर्थमनर्थे	६९
अदृहासभिन्न	९०	अलक्षलक्ष	83
अतिविपदाम्बुधि	89	अलक्ष्यलक्ष	55
अताक्षमश्रीण	68	अवन्तिकाया	**

१४८ ऋोकानुक्रमणिका।

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
अविनयमपनय	990	आहुयस्य स्वरूप	२२
अवीरासनस्यै ०	9	इ	
अव्यान्निर्घात	२२	इद तु नमदाष्टक	98
असि-धुप्रकोपै ०	9	इदायास्त्रिदशा	१०४
असीतासमेतै ०	1	इष्टबस्तुमुर्य	१२२
असूनायम्यादौ	४२	इष्टाविशिष्टमतयो०	७२
अहो धृत खन	38	SE SE	
आ		ईश्वरो गुरुरात्मेति	१०९
आकृतिसाम्याच्छास्म ०	99	ईहितक्षणप्रदान	१२६
आकामद्भया त्रिलोकी	२५	ਚ	
आचार्येम्यो लब्ध	*4	उद्भुतनग	996
आत्मन सत्किया	990	उद्यद्धानुसहस्र	७९
आदावादिपिताम इस्य	१०२	उन्नम्र कम्रमुचै०	२७
आदिश्वान्त	७६	उपासकाना त्व०	66
आदौ कल्पस्य	26	उपासकाना य०	42
आपदद्रि भेद	923	उपासते य	62
आपादादा च शीर्षात्	38	उर्वीसर्वजनेश्वरी	७६
आमर्दसरो	131	Ų	
आमीछिताक्ष ०	99	एकीकृत्यानेक	५२
आराधयामि	१०८	एकेन चक्रमपरेण	98
आलेपबन्स	८६	एकेन मुद्रा	८६

	श्लोकानुक	मणिका ।	१४९
	विद्यम्		पृष्ठम्
एको वेणुधरो	704	कलाभिरिदो०	24
एतत्पठेद ष्टक मिष्टद	१३६	कस्त्रिकाकुङ्कम	१३४
एतत्पवनसुतस्य	२	कस्त्रीतिलका०	115
एतानि लिङ्गानि	933	करत्व कोऽह	६७
एलापुरीरम्य	933	का ते कान्ता क॰	88
एव वेदान्त०	999	का ते का ताघ०	६५
ओ		कात कारणकारण	40
ओत प्रोत	48	कात वक्षा नितान्त	२९
क		कान्त्यम्भ पूरपूर्णे	26
कटाक्षे दयाद्वी	१३७	कान्त्या निदित	60
कण्ठाकल्पोद्गतैर्थ	30	काम कोध	६८
कदाचित्कालि दी	198	कामनाशनाय	123
कफ॰याइतोष्ण	21	कालभीतविप्र	122
कमले कमलाक्ष	98	कालभैरवाष्ट्रक	99
कम्राकारा	२३	कालाम्बुदालिललितो •	90
करिवरमौक्तिक	99	कावेरिकानर्भदयो	939
कर्णस्थस्वर्णकम्रो ः	₹9	काशीक्षेत्र शरीर	988
कर्पूरागरुकुङ्कुमा ०	929	काशी धन्यतमा	808
कर्मपाशनाश	929	काश्या हि काशते	388
कलत्र धन	980	किरीटोज्ज्वलत्सर्व	30
कलरवन्पुर	१००	कुञ्चिते कुन्तले	89

१५० श्लोकानुऋमणिका।

	वृष्ठम्		वृष्ठम्
कुतो वीची	१०२	ग धवामर	८२
कुरक्के तुरग	136	गायत्रीं गरुडध्वजा	121
कुरते गङ्गा	६६	गायते श्रुतिभि	906
कुच्छ्रै कोटिशतै	908	गीदेंवति	७२
कुपापारावार	994	गुरुचरणाम्बुज	88
क्रपापारावारा	96	गुरोरष्टक य	982
कुष्ण गोविद हे	80	गेय गीतानाम	६८
कैलासाचल	७६	गोपाल प्रमुलाला	५७
कोटीराङ्गदरव	69	गोपीमण्डलगोष्ठी	५७
कोऽय देहे देव	५३	गोवि दाष्टकमेतत्	40
कोशानेता पञ्च	40	च	
कोशेषु पञ्चस्वधि०	385	चक्रस्थेऽचपले	69
को ह्येवा यादात्मनि	4 ३	च द्राकीनल	99
कणद्रवमञ्जीर	8	चाञ्चल्यारुण	998
क्षत्रत्राणकरी	७७	चाम्पेयगौरार्ध	१३४
क्षमामण्डले	989	चारुस्थित सोम	८६
क्षेत्रज्ञत्व प्राप्य	ધ ૧	चिदशे विभु	96
ग		জ	
गङ्गातीरमनुत्तम	904	जटिली मुण्डी	६५
•		•	
गङ्गाष्टकमिद पुण्य	903	जन्ममृत्युघोर	928

	श्लोकानुत्र	मणिका ।	१५१
	पृष्ठम्		वृष्ठम्
जलन्युताच्युता ०	98	त्वदम्बुलीन	९२
जलान्तकेलि	98	त्वमाचामोपे द्र	५९
जाग्रहुष्ट्वा स्थूल	४९	त्वमेवासि दैव पर	ų
जीमूतस्यामभासा	२३	त्विय मीय चा ।	81
ज्वलत्कान्तिवह्नि	936	व	
IR		दद्याद्दयानुपवनो	७२
झणत्कणत्कङ्कण	938	दशग्रीवमुग्र	6
च		दशाङ्ग धूप	६०
तरिद्वर्णे वस्त्रे	६०	दक्षइस्तनिष्ठ	928
तटिद्वासस नील	३६	दामोदर गुणमदिर	996
तत्त्वार्थम तेवस०	८६	दिकाली वेदय तौ	३२
तरङ्गसङ्ग	88	दिघ्यस्तिभि	४७
तरणारणमुखकमल	9	दिनयामि यौ	६५
तव हितमेक वचन	92	दि यधुनीमकर द	999
तावत्सव सत्य	५५	दीनमानवालि ०	924
लिगुणात्माशेष	908	दु खाम्मोधिगतो	१०५
न्नै विष्टपारिपुवीरघ्न	५६	दूरीञ्चतसीतार्ति	२
न्यक्ष दीनसःकृपा०	१२६	ह श्याहश्य०	७६
त्वत्तीरे मणिकर्णिके	908	दृष्टा गीतास्वक्षरतत्त्व	५१
त्वत्तीरे मरण	904	देवराजसे यमान	८९
त्वत्प्रभुजीवप्रिय •	99	देवी सर्वविचित्र	७७

१५२ श्लोकानुक्रमणिका।

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
देवो भीतिं विधातु	२७	नादे नारद•	८२
दैवतानि कति	613	नानायोगिमुनी द्र	८०
द्व दैकत्व यच	५२	नानारत्नविचित्र	७५
ঘ		नाभीनालीकमूलात्	26
घन्या सोमविभावनीय	920	नारायण करणामय	196
धर्मसेतु पालक	90	नारीस्तनभर	६२
धे <u>न</u> ुकारिष्टहा ०	80	नाह प्राणो नैव	48
ध्यात याभाव	999	निजे मानसे मदिरे	ų
न		नित्य स्नेहातिरेकात्	३ †
न भोगे न योगे	989	नित्यान दकरी	७५
नम सचिदानन्द	દ્	निरञ्जनस्य किं	900
नमस्कारोऽष्टाङ्ग	६१	निरावरणचैत य	9 • 9
नमस्ते नमस्ते	દ્દ	निर्मलस्य कुत	900
नमसो सुमित्रासुपुत्रा०	8	निर्लेपस्य कुतो	608
नमो भक्तियुक्तानुरकाय	દ્	नैवेद्यमात्मलिङ्गस्य	908
नमो विश्वकर्त्रे	Ę	न्यङ्कुपाणये	120
नमोऽस्तु नालीक	७३	ч	
नरातङ्कोटङ्क	४३	पद्मानं दमदाता	३ ०
निलनीदलगत	६३	पयोम्भोधेद्वीपात्	५९
नवजलदयुति	99	परब्रह्मापीड	994
न वै प्रार्थ्य	994	परिभ्रमन्ति ब्रह्मा॰	990

4	छोकानु न	व्मणिका ।	१५३
	पृष्ठम्		पृष्ठम्
पवित्र चरित्र	19	प्रह्वादनारदपराशर	\$ 0
पश्यञ्जुद्धोऽप्यक्षर	88	प्राणानायम्योमिति	86
परयञ्शुण्वन्नत्र	86	प्राणायाम	६९
पातात्पातारूपातात्	३२	प्राणो वाह वाक्	५३
पाताल यस्य नाल	२८	प्रात स्मरामि	992
पादाम्भोज मसेवा	२६	प्रातर्नेमामि	* * ?
पायाद्वक स्वात्मनि	५५	प्रातर्भजामि	112
पाहि मामुमामनोज्ञ	928	प्राप्त पद प्रथमत	99
पीठीभूतालकान्त	३३	ब	
पीतेन द्योतते	२७	बद्धा गले यमभटा	9 &
पुण्यपापरज सङ्गो	306	बालस्तावत्	६३
पुनरपि जनन	६७	बाह्य तरे मधुजित	9
पुर प्राञ्जलीनाञ्जनेया ॰	8	बृ दावनभुवि	46
पूर्णस्यावाइन	१०७	ब्रह्म-ब्रह्मण्याजिह्या	३१
पूर्वोत्तरे पारिलका०	939	ब्रह्ममस्तकावली	१२३
पृथिया तिष्ठयो	83	ब्रह्माण्ड खण्डयन्ती	909
प्रचण्डप्रतापप्रभावा ०	v	ब्रह्मान दजलेनैव	909
प्रदीप्तरत्नोज्ज्वल	१३६	ब्रह्मान दाब्धि	906
प्रपञ्चसृष्ट्युन्सुख	१३५	ब्रह्मा विष्णू रुद्र	84
प्रमाण भवाब्धे	३६	ब्रह्मेन्द्रस्टम्स्ट्रक	9 8
प्रसीद प्रसीद प्रचण्ड	₹ 0	ब्रह्मेशाच्युत	८२

१५४ स्रोकानुकमाणका।

	ट ष्ठम्		पृष्ठम्
भ		मध्याहे मणि०	908
भगवति तव	१०२	मनोनिवृत्ति	183
भगवति भवलीला	909	मदारमाला	934
भगवद्गाता	६७	ममाचदेवो	८५
भज गोवि द	६२	मलापहारि	९५
भवाम्भोजनेत्रा०	१३९	महागभीर	९२
भवोत्तापाम्भोधौ	200	महाम्भोधे स ीरे	998
मानुकोटिमास्व र	19	महायोगपीठे तटे	३६
भुक्तिमुक्तिदायक	90	महायोगपीठ परि॰	36
मुक्तिमुक्तिदि य	986	महारत्नपीठ	Y
मुजगप्रयात पठ •	२१	महे द्रादिर्देवो	88
भुजगप्रयात पर	90	मा कुरु धनजन	EX
भुज स ये वेणु	998	मातर्जाह्नवि	903
भूत सञ्जना यक	99	माता च पार्वती	50
भूत्वा भूत्वा यदन्त०	३४	मात्रातीत स्वात्म०	४७
स		मालालीवालि धाम्न	३३
मङ्गलप्रदाय	१ २५	मुक्ताहारलसत्कि ०	98
मञ्जनमातङ्ग	909	मुग्धा मुहुर्विद्धती	90
मत्स्य कूमीं वराहो	38	मुदिताय मुग्ध०	66
मत्स्यादिभिरवतारै	116	मुरारिकाय कालिमा	94
मधुवनचारिणि	९८	मूढ' जहाहि	६२

	ऋोकानुक	मणिका।	१५५
	पृष्ठम्		वृष्ठम्
मूर्तामूर्ते पूर्वे०	48	यस्यातक्यं स्वात्म०	درع
मृत्कामत्सीहेति	५६	यस्था दाम्ना	२७
मोदात्पादादिकेश	३५	यस्यामिद कल्पित०	985
य		यस्यैकाशादित्थ०	४५
य ब्रह्मारय	४६	यावत्पवनो	६३
य विज्ञानज्योतिष	५ ६५	यावद्वित्तोपार्जन ०	६३
यक्षराजब धवे	928	या वायावानुकृल्यात्	२९
यत सर्व जात	४२	या सूते सत्त्वजाल	२४
यत्कटाक्षसमुपासना०	७३	युक्त्यालोड्य व्यास	५२
यत्र प्रत्युप्तरत	₹ ₹	येनाविष्टा यस्य	५०
यदा घमग्लानि	88	येम्यो वर्णश्चतुर्थ	२५
यदा मत्समीप	ų	येम्योऽस्यद्भि रचे	२४
यदावणयत्कर्णमूळे	ą	योगरतो वा	६६
यद्यद्वेच तत्तदह	80	योगान दकरी	७५
यद्यद्वेद्य वस्तु	80	यो डाकिनीशाकिनि०	932
यशों में गत	989	योऽय देहे चेष्टियता०	५२
यस्ते प्रसन्ना०	66	यो विश्वप्राणभूत•	२३
यसाद यन्नास्त्यपि	४६	₹	
यस्मादाकामतो द्या	२५	रज सःवतमा ०	908
यस्माद्वाचो निवृत्ता	₹8	रत्नपादुकाप्रभा०	90
यस्या दृष्ट्वामलाया	२६	रथारूढो	994

१५६ श्लोकानुक्रमणिका।

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
रथ्याकर्पट	६७	वयसि गते	EX
रागादिगुणशून्यस्य	990	वाग्भूगौर्यादिभेदै	२४
रागामुक्त	५५	वानरनिकराध्यक्ष	२
राजताचले द्र	928	विजातीयै पुष्पे	६१
राजन्मत्तमराख	119	विश्वानाशो यस्य	५३
राक्षसक्षोमित	80	विदेशेषु मान्य	289
रु धार मारेक्षुचाप	३२	विद्युद्धोतवत्प्र०	80
रेखा लेखादिव चा	२४	विद्राविताशेष	68
छ		विना यस्य ध्यान	83
लक्ष्माकारालकालि०	३२	विभु वेणुनाद	३७
लक्ष्मीनृसिंहचरणाञ्ज	90	विविधब्रह्म	११०
लक्ष्मीपते कमलनाथ	24	विशालनीलोत्पल	934
लक्ष्मीभर्तुर्भुजा ग्रे	२२	विशुद्ध पर सिचदा॰	3
लपन्नच्युतानन्त	२१	विशुद्ध शिव	26
छसच द्रिकास्मेर	8	विश्वत्राणैकदीक्षा०	30
लसत्कुण्डलामृष्ट	29	विश्ववन्द्योऽह०	990
लसत्तरङ्ग	९५	विश्वानन्दियतु	eop
ललामा ङ्क फाला	130	विश्वामरेद्र	9.
लावण्याधिक	920	विष्णवे जिष्णवे	३९
व		विष्णा पादद्वयाग्रे	२५
वक्राम्भोजे लस त	₹9	विष्णोर्विश्वश्वरस्य	२३

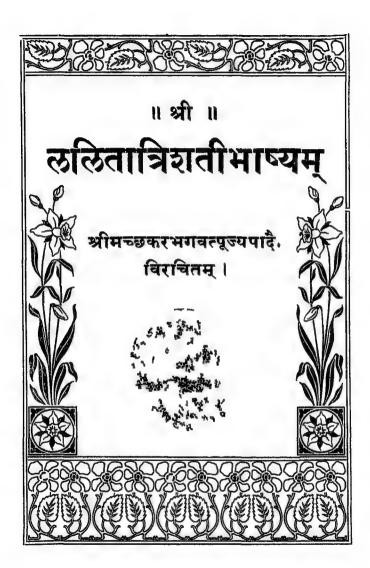
	ऋोकानु म	प्मणिका।	१५७
	पृष्ठम्		वृष्ठम्
विष्ठपाधिपाय	१२७	शूलिने नमी नम	१२८
विद्यारसखेद	9 8	शैले द्वादवतारिणी	902
वीणानादनिमीलिता०	८२	श्रद्धाभक्तिध्यान	५ १
वीताखिलविषयेच्छ	9	श्रवण तस्य देवस्य	990
वेदवाचामवेद्यस्य	306	श्रिया शातकुम्भद्युति	२०
वेदान्तैश्चाध्यात्मिक	40	श्रियाश्विष्टो विष्णु	४२
ब्याल म्बिनीभि	66	श्रीताम्रपणी	932
व्योमकेश दिव्य	१२३	श्रीनाथादत	920
श		श्रीमत्पयोानिधिनिकेतन	93
दात्रौ मित्रे	86	श्रीमत्यौ चारवृत्ते	२६
शब्दब्रह्ममयी	13	श्रीमत्सुदरनायकीं	60
शम्बरवैरिशरातिग०	१	श्रीमदात्मने	922
शरच द्रविम्बानन	३७	श्रीविद्या शिववाम ०	98
शरीर कलन	२०	श्रीविद्य शिववाम •	61
शरीर सुरूप	१४०	श्रीचौलश्क्ते	930
शिलापि त्वदङ्घिक्षमा	9	श्रुत्यै नमोऽस्तु	७२
शिव नित्यमेक	ş	श्लोकत्रयमिद	993
शिवपञ्चाक्षरमुद्रा	928	ष	
शुक्तौ रजतप्रतिमा	99	षट्तारा गणदीपिका	१२०
शुभपुलिने	99	षडशादिवेदी	980
श्लटङ्कपाश	68	स	

१५८ श्लोकानुक्रमणिका।

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
सपत्कराणि सकले॰	७३	सदा से य कुष्ण	६१
सभ्याम्भोधिमध्यात्	२	सदैव नन्दिन द०	90
ससारकूपमतिघार	18	सनत्कुमार	93
ससारघोरगहने	94	स पुण्य स गण्य	৬
ससारजालपतितस्य	98	सबि दुसि धु	९२
ससारदावदहना०	93	समस्तवासनात्याग	109
ससारमीकरकरी द्र	98	समाधिरात्मनो	999
संसारबृक्षमखबीज	94	समानोदितानेक	१९
ससारसपैविषदिग्ध	१ ४	सम्यक्साह्य	२६
ससारसागरनिमञ्जन	94	सरसिजनिलये	७३
संसारसागरविशाल	94	सव इष्ट्रा स्वात्मनि	86
सस्तीर्णे कौस्तुभाशु	२९	सर्वजीवरक्षणैक	१२५
संचूण ताम्बूल	६	सवज्ञो यो यश्च	184
सत्तामात्र केवल	68	सर्वत्रास्ते सर्वशरीरी	86
सत्य ज्ञान शुद्ध	89	सर्वेत्रैक पश्यति	88
सत्य ज्ञानमन त	५६	सर्वेदुवीसमाजाल	१११
सत्यपि भेदापगमे	999	सर्वमङ्गलाकुचा०	१२५
सत्सङ्गत्वे	88	सान दमान दवने	१३१
सदा तृप्तान	६०	सिंहाद्रिपार्श्वेऽपि	१३२
सदा राम पिवत	5 0	सुखत ऋियते	89
सदा राम पिवन	٥	सुनासापुट सुद्दर०	98

	श्लोकानुक	१५९	
	पृष्ठम्		वृष्ठम्
सुप्ताकारा प्रसुप्ते	3 3	स्नानव्याकुलयोषित्	५७
सुर ताङ्गदै रिवत	98	स्फरत्कौत्तुभालकृत	३७
सुरम िद्दरतक	६६	सक्च दनवनितादीन्	92
सुवक्षोजकु म्भा	१३७	स्वदक्षजानु०	८५
सुशा ता सुदेहा	936	स्वभक्ताग्रगण्यै	b
सुसीम तवेणीं	936	स्वभक्तेषु सदर्शिताकार	२
सुष्ट्वा सर्व स्वात्म०	لع	ह	
सेवकाय मे	926	हर त्व ससार	998
सौराष्ट्रदेशे	130	हरे राम सीतापते	9
स्तव पाण्डुरङ्गस्य	36	हारस्योरुप्रभाभि	३०
स्तुवति य	७४	हित्वा हित्वा	80
स्तोकभक्तितोऽपि	926	हिमाद्रिप्रार्श्वेऽपि	132
स्तोष्ये भक्त्या	४५	हृदम्भोज कृष्ण	49





॥श्री॥

॥ लिलतात्रिशतीभाष्यम्॥



वन्दे विशेश्वर दव सर्वसिद्धिप्रदायिनम् । वामाङ्कारूडवामाक्षीकरपञ्जवपुजितम् ॥ १ ॥

पाशाङ्करोक्षुसुमराजितपञ्चशासा पाटल्यशालिसुषुमाञ्चितगातवल्लीम् । प्राचीनवाक्स्तुतपदा परदवता त्वा पञ्चायुधार्चितपदा प्रणमामि देवीम् ॥ २ ॥

कोपामुद्रापतिं नत्वा हयप्रीवमपीश्वरम् । श्रीविद्याराजसिसिद्धिकारिपकजवीक्षणम् ॥ ३ ॥

विस्तारिता बहुविधा बहुभि कृता च टीकां विकोकयितुमक्षमता जनानाम् । तत्तस्यसवपद्योगविवकमानु तुष्ट्यें करामि छिछतापद्मिक्तयोगात् ॥ ४ ॥ ९ ॥ १ ॥ अगस्य उवाच-

हयग्रीव द्यासिन्धो भगवन् शिष्यवत्सलः । त्वत्तः श्रुतमशेषेण श्रोतव्य यद्यदस्ति तत् ॥ रहस्यनामसाहस्रमपि त्वत्तः श्रुत मया । इतः पर मे नास्त्येव श्रोतव्यामिति निश्चयः ॥

तथापि मम चित्तस्य पर्याप्तिनैव जायते। कात्स्न्यीर्थे प्राप्य इत्येव शोचयिष्याम्यह प्रभो॥

किमिद कारण ब्रूहि ज्ञातव्याञ्चोऽस्ति वा पुन । अस्ति चेन्मम तद्रूहि ब्रूहीत्युक्तवा प्रणम्य तम्॥

सूत उवाच-

समाललम्बे तत्पादयुगल कलशोद्भव'। हयाननो भीतभीत किमिद किमिद त्विति॥

मुश्च मुश्रेति त चोक्त्वा चिन्ताक्रान्तो बभूव सः। चिर विचार्य निश्चिन्वन्वक्तव्य न मयेत्यसौ ॥ तृष्णीं स्थित सारन्नाज्ञां ललिताम्बाकृता पुरा। प्रणम्य विष्र स मुनिस्तत्पादावत्यजन्स्थत ॥ ७॥ वर्षत्रयावधि तथा गुरुशिष्यौ तथा स्थितौ । तच्छुण्वन्तश्च पश्यन्त सर्वे लोका सुविस्मिताः॥ तत. श्रीललितादेवी कामेश्वरसमन्विता। प्रादुर्भूय हयग्रीव रहस्येवमचोद्यत्॥ ९॥

श्रीदेव्युवाच—
अश्वाननावयोः प्रीति शास्त्रविश्वासिनि त्विय।
राज्य देय शिरो देय न देया षोडशाक्षरी॥१०॥
स्वमातृजारवद्गोप्या विद्येषत्यागमा जगुः।
ततोऽतिगोपनीया मे सर्वपूर्तिकरी स्तुति ॥
मया कामेश्वरेणापि कृता सगोपिता भृशम्।
मदाज्ञया वचो देव्यश्रक्षनीमसहस्रकम्॥१२॥
आवाभ्या कथिता मुख्या सर्वपूर्तिकरी स्तुतिः।
सर्विकियाणा वैकल्यपूर्तिर्यज्ञपतो भवेत्॥१३॥
सर्वपूर्तिकर तस्मादिद नाम कृत मया।

तदूहि त्वमगस्त्याय पात्रमेव न सद्याय ॥ १४॥ पत्न्यस्य लोपामुद्राख्या मामुपास्तेऽतिभक्तितः। अय च नितरा भक्तस्तस्माद्ख वदस्व तत् ॥ अमुश्रमानस्त्वत्पादौ वर्षत्रयमसौ स्थित । एतज्ज्ञातुमतो भक्त्या हीद्मेव निद्द्यीनम् ॥ चिक्तपर्यासिरेतस्य नान्यथा सभविष्यति । सर्वपूर्तिकर तस्मादनुज्ञातो मया वद् ॥ १७॥ स्त उवाच-

इत्युक्त्वान्तरधादम्बा कामेश्वरसमन्विता। अथोत्याप्य हयग्रीव पाणिभ्या कुम्भसभवम्॥

सस्थाप्य निकटे वाचमुवाच भृशविस्मित । हयग्रीव उवाच—

कृतार्थोऽसि कृतार्थोऽसि कृतार्थोऽसि घटोङ्गव॥

त्वत्समो ललिताभक्तो नास्ति नास्ति जगन्नये। येनागस्य स्वय देवी तव वक्तव्यमन्वज्ञात्॥ सच्छिष्येण त्वया चाह द्रष्टवानस्मि ता शिवाम्। यतन्ते दर्शनार्थाय ब्रह्मविष्णवीशपूर्वका'॥

अत पर ते वक्ष्यामि सर्वपूर्तिकर स्तवम्। यस्य स्मरणमात्रेण पर्याप्तिस्ते भवेडृदि॥२२॥

रहस्यनामसाहस्राद्पि गुश्चतम मुने । आवश्यक ननोऽप्येतल्लालेता समुपासितुम् ॥

तदह सप्रवक्ष्यामि ललिताम्बानुशासनात्। श्रीमत्पश्चद्शाक्षयी कादिवणीन्क्रमान्सुने॥

पृथिग्विश्वातिनामानि कथितानि घटोद्भव । आहत्य नाम्ना त्रिशती सर्वेसपूर्तिकारिणी ॥

रहस्यातिरहस्यैषा गोपनीया प्रयत्नत । ता शृणुष्य महाभाग सावधानेन चेतसा ॥

केवल नामबुद्धिस्ते न कार्या तेषु कुम्भज। मन्त्रात्मकत्वमेतेषा नाम्ना नामात्मतापि च॥ तस्मादेकाग्रमनसा श्रोतव्य च त्वया सदा। स्त उवाच-

इत्युक्त्वा त हयग्रीव प्रोचे नामदातत्रयम् ॥

बहुकाल सुभक्तिमहिम्ना गुरुपादाम्बुजमवलम्ब्य स्थिताय कुम्भयोनिमुनये शिवद्पतिकृतनामशतत्रयोक्त्या प्रेरितो हय प्रीव उवाच—

ककाररूपा कल्याणी कल्याणगुणशालिनी। कल्याणशैलिनिलया कमनीया कलावती॥

ककाररूपेति । ककार कवर्ण रूप ज्ञापकविशेषण यस्या सा, कादिविद्याविप्रहत्यर्थ । अथवा ककार रूप वाचक येषा त ककाररूपा हिरण्यगर्भ उदकम् उत्तमाङ्ग सुखादयश्च । हिरण्यगर्भनिष्ठजगद्धारकजगत्कर्रेत्वादिगुण वस्त्व ककारस्य व्यञ्जनादिमवर्णत्वेन वतत इति तद्वाच्य तथा तथा । उदकनिष्ठान्नादिद्वारा जगत्सजीवनहेतुत्वमपि ककारस्य विद्याप्रिमवर्णतयास्तीति तद्रूपा वा । सर्वेषा प्राणिना शिरस्यमृतमस्तीति योगमार्गेण कुण्डलिनीगमने तत्रत्यतत्प्रवाहाप्नुतयोगिनामीश्वरसाम्य जायत इति योगशा स्त्रेषु प्रसिद्धम् । तद्वत् कवर्ण मन्त्रादिमभागस्थ तत्पु- रश्चर्यापरायणाना शिवभावमेव यच्छतीति वा तद्र्पत्यर्थ, 'क ब्रह्म ख ब्रह्म ' इति श्रुते । दहराकाशस्य सुखस्त्ररूप त्वेन परमप्रेमास्पद्तया अभिछाषविषयत्ववत् ककारोऽप्य तिप्रीतिविषयमू छमन्त्रादिमाक्षरतया अभ्यहितत्वाद्वा तद्र्षे सर्थ ॥ अ ककार रूपोये नम् ॥

कल्याणी । कल्याणानि सुखानि । युवसार्वभौमानन्दा-दारभ्य ब्रह्मानन्दपर्यन्त तैत्तिरीयकादौ प्रतिपादितानि । तत्ततुपाधिभेदेष्वविच्छन्नस्वरूपतया तानि कल्याणशब्दवा च्यानि, 'एतस्यैवानन्दस्य अन्यानि भूतानि मान्नासुपजी वन्ति 'इति श्रुते । समष्टिव्यष्टिवस्वसुपहितस्वरूपेण सभ वतीति मतुप्समामोपपत्ति । तथा च राहो शिर इतिवत् समासान्तर्गतषष्ठधर्थभेदस्याविवश्चिततया आनन्दैकविश्रहव तीत्यर्थ, 'विज्ञानमानन्द ब्रह्म' इति श्रुत्युक्तब्रह्मस्वरूपल श्रुणवतीत्यर्थ ॥ ॐ कल्याण्ये नम् ॥

कल्याणगुणशालिनी। कल्याणा सुखकर्तार ये गुणा सत्यकामसत्यसकल्पसर्वाधिपत्यसर्वेशानत्ववामनीत्वसयद्वाम-त्वाद्य, ते अस्या शालयन्त इति, तथा एना शोभयन्ती ति वा, ते शाल्यत इति वा कल्याणगुणशालिनी। तथा च कल्याणाश्च ते गुणाश्च कल्याणगुणा शालयन्त्येनामिति कल्याणगुणशास्त्रिनी, अस्मिन समासे देवताया पराधीन
गुणवत्त्व स्वत शुद्धचैतन्यत्व च स्फुरितम् । कल्याणगुणै
शाल्यत इत्यत्र गुणवत्त्वमात्र देवताया चोत्यते । तश्चौपा
धिकत्व वैदिकमपि स्तुतौ तद्मकटन न दोषाय । यदि
गुणानामारोपितत्वेन तत्सकीर्तनस्य भेद्बुद्धिसमये तत्कृपा
प्राप्तिहेतुत्वेनावश्यकत्वम् , तथापि तद्मवादपुर सर शुद्ध
चैतन्याभेद्ध्यानरूपमुख्यभजन मुख्यमवित सपाद्यितु स्वगुरूपदिष्टमार्गेण सुकरमेवेति नातिविस्तार्थते ॥ ॐ कल्या
णगुणशास्त्रिन्ये नम ॥

कस्याणशैलिनलया। शिलाना विकार शैल शिलाघन इत्यर्थ, कस्याण सुखमेव शैल घनीमृत इत्यर्थ, तिमान् कस्याणशैले स्वस्वरूप आनन्दघने निलयति तिष्ठतीति कस्याणशैलिनलया, 'स भगव कस्मिन प्रतिष्ठित इति स्वे महिम्नीति होवाच' इति श्रुते, देवदत्त म्वस्मिन्नेव स्वय वर्तते इति लौकिकप्रयागाच, देवताया स्वस्वरूपे स्वावस्थान युज्यत इति। कस्याणमेव शैलवत् घनीमृत कस्याणशैल आनन्दमयकोश कस्याणशैलो निलय यस्या सा इति बहु व्रीहिसमास न विरुद्ध, 'ब्रह्म पुच्छ प्रतिष्ठा' इति उक्त श्रुतिप्रामाण्यात्। अथवा कस्याणशैल महामेरु निलय गृह यस्या सा तथा, सुमेरुमध्यश्रद्भस्थेत्यर्थ ॥ ॐ कल्या णशैलनिलयायै नम ॥

कमनीया। परमान-दस्वरूपत्वन परमप्रेमास्पदा, 'को ह्येवान्यात्क प्राण्यात्। यद्ष आकाश आनन्दो न स्यात् 'इति श्रुते । सुखस्य मनोह्रद्वेन सर्वेष्साविषयत्ववत् मायाष्ट्रता-ना सुखप्रापकत्वेन स्वस्वेष्टदेवतासु प्रीत्यतिशयेन तत्पूजादौ प्रवर्तता तत्फळदानेन मनोहरत्वाद्वा कमनीया। ज्ञानिनामा नन्द्घनीभावात्मकसुन्दरमूर्तिमत्तया वा कमनीया।। ॐ कमनीयायै नम ॥

कलावती । कला शिर पाण्याद्यवयवा , चतु षाष्ट्रकला विद्यारूपा वा, चन्द्रकला वा, भक्तध्यानाय अम्या सन्ती-ति कलावती ॥ ॐ कलावत्ये नम् ॥

कमलाक्षी कल्मषत्री करुणामृतसागरा । कदम्बकाननावामा कदम्बक्कसुमप्रिया ॥

कमलाक्षी। कमले इव अक्षिणी यस्या सा तथा। कमलाया लक्ष्म्या अक्षिशब्देन तक्षिमित्तक ज्ञान लक्ष्यते विषयतासब धेन तद्वतीति वा। कमलाया ऐहिकासुध्मि कश्रिय हेतुभूते अक्षिणी यस्या सा— इति स्वकीयेक्षणमा तेण महदैश्वयप्रापिकेति भाव ।। ॐ कमलाक्ष्ये नम ।।

कल्मषष्टी। कल्मषाणि पापानि हन्ति नाशयतीति क-लमषष्टी, 'अह त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि' इति भग बद्धचनात्। अथवा वेदान्तमहावाक्यजन्यसाक्षात्काररूप-ब्रह्मविद्या 'ज्ञानाग्नि सर्वकर्माणि भस्मसाकुरुते तथा' इति स्मृते, 'न स पाप स्रोकर् शृणोति' इति श्रुतेश्च॥ ॐ कल्मषष्टन्ये नम्।।

करुणामृतसागरा। करुणया कृपया जात यदमृत मोक्षरूप तस्य सागर इव सागरा। यथा अमृतसमुद्र स्वयममृतस्वरूप सन् अन्यानिप छोकान् अमृतपायिमेघाद्विमुक्तामृतेन सजी-वयति, तथा 'ब्रह्म वेद ब्रह्मैव मवति ' 'ब्रह्मिवदाप्रोति परम् ' इत्यादिश्रुत्या स्वयममृतस्वरूपा सती। 'छभते च तत कामान्मयैव विहितान्हितान् 'इति भगवद्वचनेन तत्तद्धि कारिकृतकर्मोपासनादिफलस्य देवताप्रापणीयस्य सप्राप्तौ त-त्तद्धिकारिणा तत्तत्फल स्थितमिति सभाव्यत इति सागरो पमा। अमृतवत्सर्वभजीवनी करुणामृतस्य अभिन्नाश्रयत्वात् सागरा, करुणा च भक्तविषयकपरिपाल्यताबुद्धि। यद्वा, करुणया कृपया अमृता शाश्वतकीर्तिमन्त्रेन ब्रह्मादिलोक गता सागरा सगरराजवद्या यस्या सा तथा, यद्वा, करुणया द्यया हेतुना अमृताय प्राप्त सागर समुद्रो यया सा भागीरथी, करुणामृतसागरा ॥ ॐ करुणामृतसाग-रायै नम ॥

कदम्बकाननावासा । कदम्बनामककल्पष्टक्षयुक्त यत्का-नन वन तन्नावासो गृह यस्या सा तथा ॥ ॐ कदम्बकान-नावासायै नम• ॥

कदम्बकुसुमित्रया। कदम्बाना कुसुमानि कदम्बकुसुमानि तेषु प्रिया प्रीतिमतीति यावत्। यद्यपि प्रियशब्द प्रीतिवि-षयवाचक , तथापि कुसुमजन्यप्रीतरभावेन तद्विषयताया वक्तमशक्यत्वात् तथोक्तम्॥ ॐ कदम्बकुसुमित्रयायै नम्॥

कर्पविद्या कर्पजनकापाङ्गवीक्षणा। कर्पूरवीटीसौरभ्यकल्लोलितककुसटा॥३॥

कद्पेविद्या । कद्पेस्य विद्या तिष्ठष्ठप्रत्यम्बद्धोक्यक्कान-मित्यर्थ । अथवा विद्याप्रापकत्वात्तदृष्टमूलमन्त्रवर्णममुनायो विद्येत्युच्यत वेदवाक्येषु उपनिषत्पदवत् । तद्वाच्यार्थत्वात् तथा देवी सूच्यते ॥ ॐ कद्पेविद्याये नम् ॥

कद्रपंजनकापाङ्गवीक्षणा । अपाङ्गाभ्या वीक्षणमपाङ्गवी क्षणम्, ईषद्दर्शनमिति यावत् । कद्रपस्य जनक अपाङ्ग

वीक्षण यस्या सा। अनेन नाम्ना येषा जडानामपि कुरू-पिणा जनाना उपरि सक्नदीषद्वीक्षणमभिजायते, ते कद्र्प-वद्रुपयौवनसामर्थ्यलक्ष्मीभाजो भवन्तीति ध्वनितम् । यद्वा कद्र्पस्य जनक श्रीनारायण स यम्या अपाङ्गवीक्षणे ईषद्भृवक्षिचलन वर्तते, यस्या आज्ञामात्रवश्यतया महा विष्णु जगद्रश्चादिकार्य करोतीति सा तथा इति । अथवा, कदर्पजनका महालक्ष्मी यखा अपाङ्गवीक्षणे प्रयेतया व र्तते सा तथा। कद्पस्य मन्मथस्य जनका उत्पादका स्रक्चन्दनादिभोग्यविषया ते यस्या अपाङ्गवीक्षणात् भ-वन्ति सा तथा। अथवा, चन्द्रस्य वामनेत्रतया अपाङ्क वीक्षण चन्द्रिकोच्यते । कदपजनक अपाङ्गवीक्षण यस्या सा तथा । कदर्पजनकाशब्देन छक्ष्मीनिवासकमछ छ ध्यते, तद्वत् अपाङ्ग कमलाक्षीत्यथ तन्निक्षिपतवीक्षण लोकसजीवन यम्या सा तथा ॥ ॐ कदर्पजनकापाङ्ग वीक्षणायै नम ॥

कर्पूरविद्यासौरभ्यकङ्गोलितककुप्तटा। कर्पूरयुक्ताश्च ता वीटयश्च ताम्बूलकबलानि तासा मौरभ्य सौगन्ध्य तै कल्लोलितानि असकुत्परिमालितानि ककुमा दिशा तटानि प्रदेशा यस्या मा। मुखवासितपरिमलेन जगन्मात्र सुर- भीकृतमिति खरूपातिशयोक्ति अस्मित्राम्नि व्यव्यत , महा राजभोगवतीत्यर्थ । ॐ कर्पूर्वीटीसीरभ्यकङ्घोलितककुप्त टाये नम ॥

कित्रेषहरा कजलोचना कम्रविग्रहा। कर्मादिसाक्षिणी कारयित्री कर्मफलपदा॥ ४॥

किल्होषहरा। कले निन्दा जायमानाना पुरुषाणा जन्ममात्रण ये दोषा पापानि आयाति, तान दृष्टा श्रुता कीर्तिता सस्तुता पूजिता ध्याता सती हरतीति तथा। कले अन्योन्यवादिना कल्रहात्तत्तन्मताभिनिवेशवशाज्ञायमाना ये दोषा परत्रक्षविषये अस्तित्वनास्तित्वदेहादिव्यतिरिक्तत्वभि अत्वाभिन्नत्वगुणित्वादिसाधकयुक्त्याभासतद्तुगुणसमत्याभा सश्रुतितात्पर्यविघटनान्यथाकरणदुरात्रहज्ञन्यकामकोधपरुष परवशिक्यमाणनिन्दासहनादिक्षपा बहुविधा दोषा, तान-दैतत्रक्षक्षानसाधनमुक्तिक्षेण हरतीति कल्रिदोषहरा ॥ ॐ कल्रिदोषहराये नम ॥

कजलोचना । केभ्य जायन्त इति कजानि, कजशब्द न अरिवन्दनीलोत्पलानि लक्ष्यन्ते तद्वल्लाचने यस्या सा तथा। अथवा कज ब्रह्माण्डम् । 'अय पूर्वमप सृष्ट्वा तासु वीर्यम पास्रजत् तदण्डमभवद्धैमम 'इति वचनात् कजानि अनेक कोटिब्रह्माण्डानि लोचनयो लोचनकृतवीक्षणात् यस्या सा तथा, 'सेय देवतैक्षत' इति श्रुते ॥ ॐ कजलोच नायै नम् ॥

कम्नविष्रहा । कम्न अतिमनोज्ञ , गाम्भीर्यधैर्यमाधुर्यादि-बहुगुणोदितत्वात् , विष्रह मूर्ति यस्या मा तथा, 'आ नन्दरूपममृत यद्विभाति' इति श्रुते । आनन्दस्वरूपत्वाद्वा कम्नविष्रहा , ललितारूपेत्यर्थ ॥ ॐ कम्नविष्रहायै नम ॥

कर्मादिसाक्षिणी । कर्म आदिर्येषा तानि कर्मादीनि उपासनायोगश्रवणमनननिदिध्यासनानि । तेषा साक्षिणी अ-सबन्धी द्रष्ट्री, 'साक्षी चेता' इति श्रुते । अथवा कर्मा दय साक्षिभूता जीवनिष्ठा तदनाश्रयतया आत्मद्द्रीन साधनानि सुख्यमानजगदुपादानभूतानि यस्या सा तथा ॥ अ कर्मादिसाक्षिण्यै नमः ॥

कारियत्री कारियतृत्व नाम कुर्वित्याज्ञापियतृत्व जाय मानकार्यगोचरकृत्युत्पित्तहेतुकर्मोद्वोधकत्वरूपिल्ङ्छोट्तव्य प्रत्ययाना धर्म विधिनिष्ठभावनेत्युच्यते । तेषा शब्दा त्मकतया जडाना तथात्वासभवात्तद्धिष्ठानचैतन्यरूपतया 'सर्वे वेदा यत्रैक भवन्ति' इति श्रुत्या वेदस्यात्माभेदेन स्व प्रकाशकतया अर्थप्रकाशनद्वारा प्रामाण्यविधीनामपि वेदैक देशतया प्रेरणरूपत्वात् तद्धिष्ठानचैतन्यात्मनाकारयतीति तथा, 'एष द्योव साधु कर्म कारयति' इति श्रुते ॥ ॐ कारयित्रये नम् ॥

कर्मफलप्रदा । कृताना कर्मणा कालान्तरभाविफलप्र-दाने अदृष्ट कारणमिल्यनीश्वरमीमासकादिमतम्, तन्न । जडाना सूक्ष्माणामदृष्टाना चतनधर्मकर्मफलप्रदानसामध्या योगात् कृताना कर्मणा फलावदयभावे 'कर्माध्यक्ष ' इति श्रुते, 'मयैव विद्वितान्दितान्' इति स्मृतेश्च, 'फलमत उप पत्ते ' इति न्यायाच परदेवता कर्मफलप्रदा ॥ ॐ कर्म फलप्रदाये नम ॥

एकाररूपा चैकाक्षर्येकानेकाक्षराकृतिः। एतत्त्वित्यनिर्देश्या चैकानन्द्चिदाकृतिः।

ण्काररूपा। एकार रूप मन्त्रद्वितीयावयवसज्ञापक यस्या सा तथा॥ ॐ एकार्रूपायै नम् ॥

एकाश्वरी । एक मुख्यम् ईश्वरोपाधित्वेन । न श्वरित आत्मज्ञानेन विनामुक्ते न नश्यतीति अक्षर कूटस्थशब्दवाच्य

माया । तत्प्रतिविम्बनिष्ठसर्वज्ञत्वाद्याधायकविशेषणत्वेन अ स्या अस्तीति एकाक्षरी । एकम् अक्षर सवप्रकृतित्वात्परा-परव्रह्मप्रतीकतया तदुपासनया तदुभयप्राप्तिसाधनत्वेन शब्द ब्रह्मरूपलक्षितलक्षकशब्द प्रणव अस्या अस्तीति वा। एक अखण्डैकचैतन्यरूप अक्षर अनश्वर अविनाशी परमश्वर अर्धशरीरत्वन अस्यामस्तीति वा। एकान्यक्ष राणि मायाबीजादीनि तदुपासनाप्रतीकत्वेन अस्या सन्ती ति वा। 'अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते' इति श्रुत अखण्डाकारवृत्तिप्रतिफल्लनयोग्यचैतन्यरूपतया तद्वत्तिव्याप्ति मात्रेण अक्षरपदलक्ष्यचैतन्य विषयतासबन्धेन अस्या अस्तीति एकाक्षरी। चकार निर्गुणब्रह्मणोऽपि सगुणब्रह्माविशेषणसद्भा वसमुचयपर सर्वतापि द्रष्टव्य । 'सिचनमय शिव सा क्षात्तस्यानन्दमयी शिवा दित वचनेन, 'स्नीरूपा चिन्त येदेवी पुरूपामथवेखरी । अथवा निष्कळ ध्यायत्सिक्दान न्दवित्रहाम् ' इति स्मृत्या च, 'त्व स्त्री त्व पुमान् ' इति श्वेताश्वतरोपनिषदि उपाधिकृतनानारूपसभवोक्तेश्च । अत एव 'सेय देवतैक्षत ' इत्यादौ 'तत्सत्य स आत्मा ' इत्यन्ते च श्रुतौ स्त्रीलिङ्गान्तदेवतादिपदाना तत्सत्यमिति नपुसका-न्तस्य स आत्मेति पुँक्षिङ्गात्मशब्दस्य एकार्थत्वम् अविवक्षि

तापाधिमत्तया तस्वपद्छक्ष्यार्थस्यैकत्वात् । तस्मान् तस्व पद्छक्ष्यार्थे सर्वेऽपि गुणा वर्णितु सभवन्तीति ह्य मीवेण अस्या त्रिशत्या बह्व चकारा उपात्ता । तेन वय सर्वेषा सर्वत्र न पार्थक्यन प्रयोजनान्तर पश्याम ॥ ॐ एकाक्षयैं नमः॥

एकानेकाश्चराकृति । एकम् ईश्वरप्रतिबिम्बोपाधितया शु द्धसत्त्वप्रधानम् अक्षरमज्ञानम् । अनेकानि मिळिनसत्त्वप्रधान तया जीवोपाधिभूतान्यश्वराणि अज्ञानानि, 'माया चाविद्या च स्वयमेव भवति' इति श्रुते । एक चानेकानि च एकानकानि तानि च अक्षराणि च तानि तथा 'माया तु प्रकृतिम् ' इति श्रुते । तेष्वाकृतय प्रतिबिम्बान्यवान्छिन्नानि वा चैतन्यानि घटस्थोदकावन्छिन्नप्रतिबिम्बताकाशवद्यस्या सा तथा । अथवा एकानि च प्रणवाद्यानि अनेकानि च अकारादि श्रकारान्तानि अक्षराणि वर्णा आकृति स्वकृप यस्या सा, मातृकास्यकृपत्वेन वा । 'अकारादिश्वकारान्ता मा त्रकेलिभधीयते दिति वचनात् । अथवा एच कश्च एकार-ककारी तौ चेतराण्यनेकाक्षराणि च सर्व मिळित्वा पश्चद श्ववणीत्मका मूळिवद्या आकृति स्वकृप यस्या सा। साक्षि तथा एकीभृता अनेकाक्षरेषु अनेकाङ्गानेषु आकृति स्वकृप शोधिततस्वपदार्थसामरस्यात्मक यम्या सा तथा ॥ ॐ एकानेकाक्षराकृतये नम ॥

एतत्तिदित्यनिर्देश्या। एतत् एतत्कालेऽपि इयत्तापरिच्छे-दवद्वस्तु तत् परोक्षमनिश्चितस्वरूपम् । एतव तच एतत्तत् । इतिकार इत्थभावेतृतीयार्थे । तथा च एतस्वतस्वाभ्यामि त्यर्थ । एतत्तिदित्यनेन निर्देष्ट्र निर्वक्तु योग्या निर्देश्या सा न भवतीति अनिर्देश्या । छोके सविशेषो हि पदार्थ परोक्षत्वापरोक्षत्वादिधर्मविशेषेण तद्गतेन निर्वक्तु शक्य । शब्दप्रवृत्तिनिमित्तजातिगुणिकयाषष्ट्रग्रथीना यत्र सबन्धो नास्ति, 'अज्ञब्दमस्पर्शमरूपमन्ययम्', 'निर्गुण निष्क लम् ' इत्यादिश्रुत्या, ताद्यवस्तु केन करणेन केन वा वचनेन निर्देष्ट्र शक्यम् । 'यद्वाचानभ्युदितम्' इति श्रुते । अत एतन्तदित्यनिर्देश्या वाकानसातीतेत्यर्थ । अथवा, एतत् प्रत्यक्षादिप्रमाणसिद्ध कार्य पश्चाद्भावि । तत् परोक्षत्वादि-विशिष्ट पूर्वकालसबनिध व्यवहित कारणमुच्यते । इति-शब्द उभयत्र सबन्धनीय । कार्यमिति कारणमित्यपि शुद्धचैतन्यरूपा अनिर्देश्या, कार्यत्वकारणत्वघटकोपाधिव-रहितत्वेन कार्यकारणभावाभावे तद्वाचकशब्दैविषयीकर्तुमश-क्यत्वात्। अथवा, एतत् अपरोक्षतया अहमिति प्रती

यमान जीवचैतन्य त्वपद्वाच्यार्थ । तत् परोक्षतया प्रती यमानमीश्वरचैतन्य तत्पदवाच्यार्थ । इति शब्द एव कारार्थ । तथा च वादिभेदसिद्धान्त अनूदित । सा ख्यमते प्रकृतिर्जगत्कर्त्री, जीवो नानाचतन भोक्ता इत्यत ईश्वर एव नास्तीत्यङ्गीकृतम् । भागवतमते तु 'गुणी सववित्' इति श्रुत नित्यगुणविशिष्टात् परमेश्वराद्विष्णो जीवानामुत्पत्तिविनाशवत्त्वेन अनित्यत्वात् स एव भगवान् पारमार्थिक एक इत्यङ्गीकृतम् । तदुभयवादिसिद्धान्त स्य औपनिषद्मते निरस्तत्वात् तदुभयविधया अनिर्दे श्या । परमार्थसचिदानन्द्रूपतया छान्दाग्यगतदेवता शब्दार्थस्य प्रतिपादनादिति भाव । अथवा, तटस्थे श्वरवादिकाणादादिसिद्धान्तवत् व्यवस्थितभदवज्जीवेश्वरह पतया अनिर्देइया । भेद्व्यवस्थाया एव साधितुमन-क्यत्वादिति एतत्तदित्यनिर्देश्या ॥ ॐ एतत्तदित्यनिर्दे-इयायै नम ॥

एकानन्द्चिदाकृति । एका मुख्या मोक्षरूपत्वेन प्रापि त्सिता । आनन्द सुखम् । चिन् चैतन्य प्रकाशज्ञानम् । आनन्दश्चासौ चिश्व आनन्दचित् एका चासावानन्दचिश्व एकानन्दचित् आकृति स्वरूप यस्या सा । सचिदानन्द ब्रह्मरूपल्रक्षणवतीत्यर्थ । 'विज्ञानमानन्द ब्रह्म' 'आनन्दे। ब्रह्मेति व्यजानात् 'इति श्रुते 'आनन्दादय प्रधानस्य' इति न्यायाच्च दीप्तिस्वरूपप्रकाशात्मकपरमानन्दस्वरूपस्य जीव न्युक्त्यवस्थाया परमात्मज्ञानवन् पुरुषानुभवरूपप्रत्यक्षप्रमा णगोचरत्वमस्या इति वा तथा । अथवा, एकेषा आनुभा विकाना योगिनामानन्दसाक्षात्काररूपा आकृति निरावर णप्रकाशरूपा यस्या सा तथा । अथवा, आनन्द शिवा, चित् परमेश्वर, एके मूर्तिभेदरिहते आनन्दिचतौ आकृति र्यस्या सा तथा ॥ अर्थनानन्दिचत्रकृतये नम्। ॥

एवमित्यागमाबोभ्या चैकभक्तिमदर्चिता। एकाग्रचित्तनिध्योता चैषणारहिताहता॥

एविमत्यागमाबोध्या । ननु आनन्दशब्दस्य छक्षणया आनन्दमयो वान्य । 'य एको जालवानीशत इशनीभि ' इति श्रुत्युक्तैकत्वमपि जीवे सिध्यति । तथा च एकश्चासा वानन्दश्च तस्य चिन् अधिष्ठानप्रकाशकचैतन्यमाकृति यम्या सेति विष्रह सभवति । 'ब्रह्म पुन्छ प्रतिष्ठा' इति तत्प्रका शकचैतन्यस्य पुन्छशब्देन परामशीत् । एव च सति प्रका शकनित्यत्वस्य प्रकाश्यनित्यत्वापेक्षत्वात् । 'सत्य ज्ञानम-

नन्त ब्रह्म ' इत्यादिब्रह्मस्वरूपस्वभूणवाक्येषु वाच्यार्थप्राधा न्येन विधिमुखेनैव ब्रह्मप्रतिपादने अतत्वावृत्तिरूपनिषेधमु खेन लक्षणार्थप्राधान्येन ब्रह्मस्वरूपलक्षणप्रतिपादनायोगेन तत्त्वमसिवाक्ये वैशिष्ट्य वाक्यार्थ सभवतीति चेत्, नेत्या-ह--एविमत्यागमाबोध्येति । एविविश्वष्टतया- इति प्रत्यक्ष सिद्धत्वेन आगमैर्वेदै ज्ञापनीया न भवति । आनन्द शब्दस्यानन्दमात्रवाचकस्य तत्प्रचुरे समावितेषहु ख जीवे लक्षणाया त्रयो दोषा । पारमार्थिकभिन्नसत्ताकवस्त्व न्तराभावेन तत्त्वपदवाच्यार्थनिष्ठविशेषणद्वयस्य अन्योन्य विरोधवत्तया तम प्रकाशवद्भीशिष्ट्यायोगे अखण्डार्थी वा क्याथ सपद्यते । तथा च स्वरूपलक्षणवाक्येषु वाच्यार्थस्य ' अतोऽन्यदार्तम् ' इति श्रुत्या मिध्यात्वप्रतिपादनात् निषेध मुखेनैव अतद्यावृत्तिस्वरूपप्रतिपादनेन स्थापवाक्यांनि सम असानि भव तीति भाव ॥ ॐ एवमित्यागमाबोध्याये नम् ॥

एकभक्तिमद्धिता। एकस्मिन्नभेदे जीवन्नद्याणो भक्ति भजनीयत्वबुद्धि तत्परिजिज्ञासा येषा सन्ति, तैर्राचेता पूजिता इत्येतदुपळक्षण स्तुता भ्याता नमम्कृतेत्येवमादी नाम्, 'यन्मनमा ध्यायति तद्वाचा वदति तत्कर्मणा कराति ' इति श्रुते मानसिकव्यापारपूर्वकानि हि इतरेन्द्रिय कर्माणि भवन्तीत्यभिप्राय । अथवा, अस्मिन् ससारमण्डले तत्स्वरूपपरिज्ञातार ये केचन, तेषा भजनीयत्वाध्यवसायो भक्ति तदेकप्रवणता सगुणब्रह्मविषया अष्टविधा, तैरेकभ किमद्भिरिचता अन्तर्यागबहिर्यागमहायागप्रकारै पूजिता इत्यर्थ ॥ ॐ एकभक्तिमदिचितायै नम् ॥

एकाम्रचित्तनिध्याता । एकम् ऐक्यरूपम् अमम् आ
छम्बन विषय विजातीयप्रत्ययतिरस्कारपूर्वकसजातीयमृति
काभि निरन्तरव्याप्तिविषयीमृतचैतन्य यस्य तत्तादृश चि
तमन्त करण येषा ते । यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहा
रधारणाध्यानसमाधीना परिपाकातिश्येन पश्चात्सपद्यमाना
सप्रज्ञातसमाधे त्रिविधा भूमिका— ऋतभरा, प्रज्ञालोका,
प्रशान्तवाहिता चेति । ऋत यथाभूत सिच्चित्तन्दलक्षण
अद्या भरति मृतिव्याप्त्या विषयीकरोतीति प्रथमा तथा,
'आत्मन्येव वश नयेत्' इति भगवद्धचनात् । प्रज्ञालोका ।
प्रज्ञाया अखण्डाकारमृत्तौ नित्यनिरन्तराभ्यासेन परिपाक
नीताया अखण्डाकारमृत्तौ नित्यनिरन्तराभ्यासेन परिपाक
नीताया अद्याविषयिण्या आवरणाभिभव कुर्वन्त्या सत्याम् ,
'प्रज्ञा प्रतिष्ठा' इत्यादिश्रुते , प्रज्ञाया अद्यास्तर्पाया
आलोक अभिव्यक्ति साक्षात्कार यस्या सपद्यत सा का

रणविज्ञानम् । यस्मिन्विज्ञाते सर्विमिद विज्ञात भवतीत्येक विज्ञानेन सर्वविज्ञानरूपम् । प्रारब्धवशासदा चित्त तद्ध्य स्त सर्वजगद्रष्ट्रमिच्छति यदि, तदानीं चैत-यप्रकाशेनैव प्रकाशित जगत्स्वाप्रपदार्थवदशेष भासते। इद च भरद्वाजा दीनामस्तीति पुराणादिप्रमाणवेद्यमस्माकम् । तथा च तस्या भूमिकाया निरुद्धसामध्ये सदन्त करण साकारस्वरूप नि र्वासन यदा नदयति, तदा प्रशान्तवाहिता भवति । वह प्रवाह सततवृत्ति धारा अस्य अस्तीति वाही, वाहिनो भाव वाहिता प्रशान्ता च सा वाहिता च प्रशान्तवाहिता। अथवा, प्रशान्त वाह अस्य अस्तीति प्रशान्तवाही। प्रशान्तवाहिनो भाव प्रशान्तवाहिता, 'मनसो वृत्तिशून्यस्य ब्रह्माकारतया स्थिति । असप्रज्ञातनामेति समाधियौगिना प्रिय ' इति वचनात्, 'प्रशान्तमनस ह्येनम् ' इति भगव द्वचनात्, 'प्रश्वयप्रेजाऽनिलखे समुस्थित पश्चात्मके याग गुणे प्रवृत्ते । न तस्य रागो न जरा न मृत्यु योगाग्निमय शरीरम् ' इति श्रुत्या उक्तलक्षणसाधनपरिपाकव शाद्भवति । तैर्निध्यीता, ध्यानस्य निर्गतत्वात् । भेदास्फूर्तौ ध्यानविषयो न भवति ध्यातु स्वरूपमेव प्रकाशते, 'ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति ' इति श्रुते । निध्याता इति पाठ नितरा श्रवणमनननिद्धियासनेन साक्षात्कृता इत्यर्थ ॥ ॐ एका
ग्रिचित्तनिध्यीतायै नम ॥

एषणारहिताहता। एषणा इच्छा। मा त्रिविधा। एत ह्रोकजयाय पुत्रैषणा। पितृह्रोकजयसाधनकर्मसपादनाय वित्तैषणा। उपासनादिना जयसाधन देवह्रोक, तस्मिन्ने षणा छोकैषणा। आभि रहितै अनाकुष्टिचित्ते, 'ते ह स्म पुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च छोकैषणायाश्च च्युत्थायाथ भिक्षाचर्य चरन्ति' इति श्रुते। एषणारहिता ये परमहस परित्राजका सन्यासिन तै आदरेण अतिश्यप्रेम्णा म्वस्व रूपेण आदृता अङ्गीकृता निरन्तरध्यानेन माक्षात्कृता सती मोक्षरूपतया प्राप्तदर्थ ॥ ॐ एषणारहिताहताये नम् ॥

एलासुगन्धिचिकुरा चैन कूटविनाशिनी। एकभोगा चैकरसा चैकैश्वर्यप्रदायिनी॥ ७॥

एळासुगन्धिचिकुरा। एळाविद्दति दृष्टान्तप्रदर्शन सौग न्ध्यमात्रसद्भावप्रदर्शनेनाकित्पतिदिव्यपरिमळसद्भावे हेतु , न तु प्राक्ततत्वद्यनपरम् , ब्रह्मण स्वाधीनमायत्वात् । तद्व त्सुगन्ध इति साजात्यमात्र व्यव्यते, गुणमात्रादानेन सर्वत्र पदार्थान्यस्य दृष्टान्तीकरणात् । सुगन्धा येषा सन्तीति सुगन्धिन तादृशा चिकुरा कुन्तला यम्या सा तथा। स्वभावसिद्धदिन्यपरिमलशालिसर्वाङ्गसौरभ्य वती, चिकुरपदस्य उपलक्षणत्वादिति भाव ॥ ॐ एला सुगन्धिचिकुरायै नम ॥

एन कूटविनाशिनी। एनसा पापाना कूट समुदाय। आगामिसचितप्रारब्धभेदेन समष्टिक्तपेण दृढतर तत्त्वज्ञा नेन विना अन्यस्य भोगमात्रस्य तद्विनाशकत्वावगमात् तेषा च कल्पकोटिकाळ क्रमिकभोगप्रदान विनोपायान्त रेण क्षयेप्सूनामात्मब्रह्माभेदज्ञानविषयत्या चैतन्य नाशय तीति तथा। एवविदि पाप कर्म न श्रिष्यते, 'अशरीर वाव सन्त प्रियाप्रिये न स्पृशत ' इत्यादिश्चते , 'अह त्वा मर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि इति स्मृतेश्च। अथवा पनासि च तत्कारणीभूत कूट कपटवचनाभिधान च त त्कारण माया च नाशयतीति तथा।। ॐ एन कूटविना शिन्ये नम ।।

एकभोगा। एकेन कामेश्वरेण साक भोग भुक्ति। भोग स्वस्वक्रपानन्दानुभव यस्या सा तथा। अथवा, एकस्य अ-ज्ञानतत्कार्यस्य कार्यकारणक्रपेण अभिन्नस्य तद्धिष्ठानतया स्वसत्ताधायकत्वेन भोग परिपालन यस्या सा। प्रपच्चो त्पित्तिस्थितिनाशहतुमायोपाधिकचैतन्यमित्यर्थे । 'एकाकी न रमते तत पतिश्च पत्नीश्चाभवताम्' इति पुरुषविधबाद्धाणवच नात्, द्पत्योरैच्छिकभेदकत्वावगमेन परमार्थेत एतत्स्वरूप स्यैकचैतन्यरूपतावगमात्, तदुभयभोगस्यापि एकभोगत्वात् तद्वतीति वा ॥ ॐ एकभोगाये नम ॥

एकरसा। एक अभिन्न रस सामरस्य यस्था सा, 'रस होवाय छन्धानन्दी भवति 'इति श्रुते। एक नव रसषु सुरूप श्रुङ्गारस यस्था सा तथा। अथवा, एकेन परमेश्वरेण अस्था कियमाण शित्यतिज्ञयरूप रस एति इष्यक यस्था सा। अथवा एकिसम्नेव स्वभर्ति रम निरितज्ञयशीति अनुरागमङ्गा यस्था सा। अथवा, षड्सेषु सुरूप मधुरस प्रियत्वेन यस्या सा। सत्वगुणप्रधान मायापाधिकचैतन्यस्वरूपत्वात । 'रस्या क्षिग्धा स्थिरा इता आहारा सान्विकप्रिया इति भगवद्वचनात्।। ॐ एकरसायै नमः।।

एकैश्वर्यप्रदायिनी। ईष्टे प्ररयति अन्तर्यामित्वेन सवा णीति ईश्वर । 'य सर्वेषु भूतषु तिष्ठन्य सर्वाणि भूता न्यन्तरो यमयति' इति श्रुते । तत्प्रेर्यमाणाना जीवाना भूतशब्दवाच्याना अज्ञानतत्कार्यान्त करणोपहितप्रतिविम्ब चैतन्यरूपाणा जामदाग्यवस्थाभिमानिना अखण्डम्रह्मसाक्षा त्कारवेलायाम् अभेदानुभवात्, 'तत्त्वमित दिति श्रुतेश्च 'ए कमेवाद्वितीयम् 'इति विशेषितत्वाच, एकश्चासावीश्वरश्च ए केश्वर तस्य भाव तदैक्य तत् प्रददावीति तथा। बहुषु वि ग्याधनवत्सु तेष्वेको विद्याधनवानित्युक्ते, तत्रत्यजननिष्ठविद्या भावे तदितश्यप्रतीतिवत् एक च निरतिशयमणिमादिकमैश्व र्यं नि श्रेयस प्रददातीति वा। यद्वा एक मानुष सर्वेत्कृष्ट सार्वभौमत्वादिलक्षणमभ्युदयसामान्यमैश्वर्यं प्रददातीति वा तथा। अ एकस्पर्यप्रदायिन्यं नम् ।।

एकानपत्रसाम्राज्यप्रदा चैकान्नपूजिना। एघमानप्रभा चैजदनकजगदीश्वरी॥ ८॥

एकातपत्रसाम्राज्यप्रदा। आतपान आ समन्तान् अध्या त्माधिदैवताधिभूतानि आ इज्दार्थ । तभ्या जाता तापा आतपा । तपन्ति शाषयन्तीति तपा, आतपभ्य त्रायति रक्षतीति आतपत्र सर्वससारदु खोपकामात्मकमात्मज्ञानम् । 'यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेव यास्यसि इति भगवद्वचनान् । अखिलदु खनिदानाज्ञाननिवर्तक एक लक्षणया अभिन्नब्रह्म विषयकमित्यर्थ । एक च तत् आतपत्र च अखण्डाकार ज्ञानम्, तेन जायमान यत्साम्राज्य सम्राजो भाव सर्वोत्तम त्व तत्प्रद्दातीति । अथवा, एकातपत्रसाम्राज्य चक्रवर्तित्व तत्प्रद्दातीति वा ॥ ॐ एकातपत्रसाम्राज्यप्रदायै नम ॥

एकान्तपूजिता। एकस्य अद्वितीयस्य शोधितत्वपदार्थस्य अन्ते उपाधौ हृदि परिच्छेदकत्वात् पूजिता अहमित्य
परोक्षीकृता, 'यत्साक्षाद्यपरोक्षाद्व्या' इति श्रुते । एकस्य
ब्रह्मण अन्ते उप पूजिता वद् गत्यवसानार्थयोरिति धातुपाठात् उपनिषद्वद्व्यमात्रतया पर्यवस्यतीत्यर्थ । एकान्तपूजि
तित नाम्नोपनिषदित्यर्थ । अथवा, एकान्ते 'गुहानिवाता
श्रयेण प्रयोजयेत्' इति श्रुत एकान्तस्थळ ध्यानादिना
योगिभिर्विषयीकृतेत्यर्थ । अथवा, कामेश्वरेण एकान्ते स्त्री
छिङ्गे पूजिता । सप्रदायप्रयुत्त्यर्थमादौ ईश्वरेण बहिर्यागक
मण आदिमसाधनेन सर्गाद्यकाले पूजादिना सतोषितत्वात्
भूतार्थव्यपदेश । एकान्ते सवप्रविद्धापनसमये पूजिता
ध्यानादिना मपादिता साक्षत्कृतेत्यर्थ । 'कश्चिद्धीर प्रत्यगात्मानमैक्षदायृत्तचक्षुरमृतत्विमच्छन् ' इति श्रुतेरिति वा ॥
अ० एकान्तपूजिताये नमः ॥

ण्धमानप्रमा। एधमाना विवर्धमाना सर्वातिशायिनी प्रभा कान्तिर्थम्या सा, 'तमेव मान्तमसुभाति सर्वे तस्य भासा सर्वमिव विभाति ' इति श्रुते । अठ एथमानप्रभाये नमः॥ एअद्नक्जगदीश्वरी । एजन्ति कम्पमानानि चष्टमाना नि प्राणवन्ति जीवन्ति अनेकानि नानोपाधिकानि जगन्ति जङ्गमानि विचरत्प्राणिन इत्थय । ईष्टे प्रेरयतीति ईश्वरी । स्थावराणा सुखदु खप्राप्तिपरिहारोपायानाभिङ्गत्वेऽपि स्वजी वनहेतुभूतोदकपानादिप्रवृत्तिदर्शनाचेष्टावत्व तत्राप्यस्तीति जगच्छव्दो निर्विदेशपपण्डमात्रपरो वक्तव्य , अन्यथा 'सर्वे षु भूतेषु ' इति श्रुतौ चरप्राणिमात्रपरत्वे सकोचापत्ते । अस ति विराधे सामान्यवाचकस्य शब्वस्य विशेषस्थाज्ञीका रस्य न्याग्यत्वान् । अन्यथा ब्रह्मण प्रपण्डमात्रोत्पत्त्यादिहे तुत्व सकुचित भवेत् । अत एव आकरे एजत्पद उपात्तम् । यथाकथिति क्रियाश्रयत्वेन प्राणवत्त्वमात्रस्य समष्टिहरूर एयगर्भाश्रयत्वेन सर्वेषा प्रेर्यत्व सभवतीति भाव ॥ ॐ एज दनेकजगदीश्वये नमः ॥

एकवीरादिससेव्या चैकप्राभवशालिनी। ईकाररूपा चेदिात्री चेप्सितार्थप्रदायिनी॥९॥

एकवीरादिससेव्या । एक अनितरसाधारण वीर
पुरश्चर्यादिना कृतमन्त्रदेवतासाक्षात्कारलब्धपुरुषार्थ पुमान्
विजयप्राप्ताभ्युदयज्ञाली । राजराजनिष्ठधैर्यगाम्भीर्यादिगुण
वस्त्वेन तत्त्तदेवतोपासका पुरुषा वीरा इत्युच्यन्ते । यासा

शक्तीनामाद्यो यषा प्राणिकोटीना ता एकवीराद्य तासा कद्म्बै ससेव्या ससेवितु योग्या। यदा ईश्वरी भक्ताननुगृह्वाति सगुणविष्रह्वती स्यात् तदा अनेकपरिवारदेवताप
रिसेविता मन्त्रदेवतात्वेनोपासनीयेव्यर्थ । अथवा, एकवीरा
रेणुका, तदाद्य शक्तय श्यामछाप्रमुखा, ताभिस्तत्काछप्रपश्चे स्वस्वपीठे स्थिता सत्य उपासकानामभीष्टवरप्रदात्रयो दश्यन्ते । ता अस्या परिसेवकत्वेन स्वयमभीष्टवर
कामा इत्यस्या प्रकृताया महिमातिशयोक्ति ॥ ॐ एकवीरादिसंसेव्याये नमः ॥

एकप्राभवशालिनी। प्रभोर्भाव प्राभव रक्षकत्व एकमनितरसाधारण च तत्प्राभव च तच्छालक इति तथा।
अथवा, प्राभवस्य सापेक्षकधमत्वादेकपद्स्य चानन्यगामित्वा
र्थस्य सामानाधिकरण्येन स्वारस्येन पर्यालोन्यमानेन अय
मर्थ सून्यत। प्राभव च नियम्यलोकोद्भव विना अनुपपद्य
मान तदन्तर्गततत्कार्यमर्थापत्त्या सिध्यति। तथा च वटबीजव
स्त्वन्तर्गतपश्चाद्भाविकार्यवत्कृ्टस्थचैतन्यमिति भाव। अथवा,
प्राभव नामेश्वरत्व तदाक्लप्तमियम्यजगच्चोपलक्षणविधया य
स्यैकस्याखण्डचैतन्यस्य तदेकप्राभवम्। 'पादोऽस्य सर्वा भू
तानि' 'एकाइन स्थितो जगत्' इति श्रुतिस्मृतिभ्या भूतपूर्व

गत्या प्राभवोपलक्षितमेक सिच्चैतन्यक्ष शालते आविष्करो ति तथा। अथवा एक च तत् प्राभव च एकप्राभव मुख्य सार्वभौमत्विमिति यावत् । प्रमुत्वपरपराया सिविशेषाया कुत्रचित् पर्यवमानावश्यभावे 'एष सर्वेश्वर एष भूताधिप-तिरेष भूतपाल ' इति श्रुत्या अन्तर्यामितया साक्षात्क्र त्युत्पादकत्वयुक्त्या च इतरवागाद्यवयवप्रेरणातिशयाना प योप्तिरत्वेवास्तीत्यभिप्राय । तथा च निरङ्कशस्वतन्त्रज गत्कारणत्वक्रपतदस्थलक्षणलक्षितवेदान्तसमन्वयविषयीभूता अखण्डसिच्दानन्दस्वक्रपा परदेवता अवश्य स्वस्वक्रपेणैव ध्यातव्येति निष्कृष्टार्थ ॥ ॐ एकप्राभवशालिन्ये नमः ॥

ईकाररूपा । इकार रूप तृतीयावयव यद्वाचकमन्त्रस्य यस्या सातथा ॥ ॐ ईकाररूपाये नम' ॥

ईशित्री । इच्छित ईष्टे इति ईशित्री सर्वेप्रेरिका इलर्थ ॥ ॐ **ईशित्र्ये नमः** ॥

ईप्सितार्थप्रदायिनी। अर्थ्यन्ते प्रार्थन्ते इत्यर्था अभ्यु दयनि श्रेयसक्तपा, आप्तु गन्तु प्राप्तु इच्छाविषयीभूता ईप्सिता, ते च ते अर्थाश्चेति कर्मघारय, ईप्सितार्थोन् प्रददातीति तथा। केवलकर्मणामदष्टद्वारा कालान्तरभावि फळदातृत्वमचेतनत्वान्नापपद्यते । तादृशाना किसम्मप्यर्थे सामर्थ्यादृश्चितात् । चेतनाधिष्ठिताना तु कर्मणा भृत्यकु तपराक्रमादितुष्टराजवत्तद्वाराधितपरमेश्वर कर्माध्यक्ष , इति श्रुत्या सर्वज्ञस्य तत्तद्विकारिकृतपुण्यापुण्यानुरूपतया फळ प्रदाने समर्थस्य सत्त्वकरूपने तद्वयस्य चेतनस्य जीवादेस्तत्र सामध्यविरद्वात् स एव तत्त्वतुगुणविषयेच्छोत्पाद्वनेन तत्साधनानुष्ठापयिता सन् तत्फळकामना पूर्यतीत्यनीश्व रमीमासकमतिनरासो द्रष्टच्य । अथवा, ईप्सिता जिज्ञा सिता, तथा च स्वस्वरूपप्रतिपादकवेदान्तश्रवणमनननिदि ध्यासनविषयीकृता सती अर्थे प्राध्यमान सर्वाभ्यदितमो क्षरूप पुरुषार्थ प्रद्वातीति तथा ॥ ॐ ईप्सितार्थप्रदा यिन्ये नम् ॥

ईहिगित्यविनिर्देइया चेश्वरत्वविधायिनी। ईशानादिब्रह्ममयी चेशित्वायष्टसिद्धिदा॥

ईहिगित्यविनिर्देश्या। ईहक् एतक्रक्षणलक्षित एताहश परिमाण एवस्वरूप एताहशधमेवानिति प्रत्यक्षसिद्धार्थी विनिर्देष्टु शक्यते। 'यश्कक्षुषा न पश्यति ' इत्यादिश्रुत्या सर्वेन्द्रियगोचरत्वनिराकरणात् विनिर्देश्या न भवति। औ पनिषदाना मते तु उपनिषदा वेदैकदेशत्वेन इतरप्रमाणा नपेक्षतया अज्ञातार्थज्ञापकत्वेन प्रामाण्यमुररीक्वतम् । इद् मेव एताहरोवेति प्रत्यक्षसिद्धार्थज्ञापने तासामनुवादकत्वेन सापेक्षत्वरूपमप्रामाण्य प्रसच्येतेत्यभिष्राय । ॐ ई्हिगि त्यविनिर्देश्याये नम् ॥

ईश्वरत्वविधायिनी। ईश्वरस्य भाव तस्त्रैक्य विद्धाति, आवरणविश्लेपशक्तिमदद्यानिवर्तकाखण्डाकारचैतन्यस्वरूपा सती भेदबुद्धिमात्रसपादितैश्वर्यैक्यायोगभ्रम निवर्तयती सर्थ, 'स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यते ' इति श्रुते । अथवा, ईश्वरत्य नाम नानादेशविद्याधनोत्कर्षादिमस्व तत्तत्प्राणिनिकायपुण्यप्रारब्धानुसारेण कर्मफळ प्रयच्छतीति वा । अर्थस्यरत्वविधायिनये नमः ।।

ईशानादिब्रह्मभयी। ईशानतत्पुरुषाघोरवामदेवसघोजाता-ख्यानि पश्च ब्रह्माणि, तानि मय स्वरूपमस्या अस्तीति सा तथा। अथवा, ईशान आदिर्येषा ते तथा अधिकारिपुरुषा विष्णुब्रह्मेन्द्राद्य, तेषामि तत्त्वनामरूपविशिष्टानाम् अह्बु स्थिमताम् अन्तर्यामिस्वरूपेण बुद्धिप्रेरकसिदानन्दस्वरूप-परब्रह्मानन्दप्रकाशात्मना स्फुरतीति तथा। ॐ ईशानादि ब्रह्ममय्ये नमः॥

ईशित्वाद्यष्टसिद्धिदा । ईशित्वमादियींसा तास्तथा । 'अ

s u vii 13

णिमा महिमा छघ्वी गरिमा प्राप्तिरीशिता। प्राकाम्य च विश्वत च यत्र कामा परागता 'इति वचनात्। ता सिद्धीरष्टौ द्वातीति तथा। अणिमा क्षणमात्रेण अतिस् क्ष्मभाव। महिमा महतो भाव। छघ्वी छाघव। गरिमा गुरोभाव, जडतरपवतादिवत् भारवश्नेनाप्रकम्पित्वमित्य थे। श्रणमात्रेण विराडाकृतिमस्त्व प्राप्ति। हस्तेन चन्द्र-मण्डछादिस्पर्शे इशिता, इन्द्रादीनामपि प्ररकता। प्राकाम्य अप्रतिहतकामनावस्त्वम्, वाञ्छितार्थेपछप्राप्तिरित्यर्थे। विश्वत सर्वछोकवशीकरणमामध्यम। यत्र कामा परागता, काम्यन्त इति कामा विषया यत्र यसिम् एश्वर्ये सित परागता बहिभूता भवन्ति, विषयाणामनुभवाभावे ऽपि तज्जन्यसुखवस्त्व आप्तकामत्विमित्यर्थे। एता अष्ट सिद्धय। ॐ ईशित्वायष्टिसिद्धिदायै नमः।।

ईक्षित्रीक्षणसृष्टाण्डकोटिरिश्वरवस्नुमा। • ईडिता चेश्वराधीद्गवाधिदेवता॥

ईश्वित्री । उदासीनद्रष्ट्री साक्षिणी असगोदासीनज्ञानस्व-रूपेत्यर्थं, 'साक्षी चेता' इति श्रुते, 'आवि सनिहित गुहायाम्' इति श्रुते । ॐ इश्वित्रये नम ॥ ईक्षणसृष्टाण्डकोटि । अण्डाना ब्रह्माण्डाना कोटय असख्याता, भूतभाविकालभेदेन बहुवचन कोटिशब्दस्य, अनादित्वात् ससारमण्डलस्य, ईक्षणेन भाविकायीलोचनेन सृष्टा अण्डकोटयो यया सा तथा, 'तदैश्वत बहु स्या प्र जायेथेति' 'स ईक्षाचके' 'आत्मा वा इदमेकमप्र आ सीत् नान्यत्किचन मिषत् स ईक्षत लोकास्नु सृजा इति स इमाह्रोकानसृजत' इत्यादिश्चते, बाह्यकारणमनपेक्ष्य ऊर्ण नाभ्यादितृष्टान्तप्रदर्शनेन चेतनस्याभिन्ननिमित्तोपादानप्र- दर्शनयुक्ते, 'प्रकृतिश्च प्रतिझादृष्टान्तानुपरोधात्' इत्यादे- श्चेति भाव । ॐ ईक्षणसृष्टाण्डकोटये नम ।।

ईश्वरवद्धभा। ईश्वर कामेश्वर वद्धभ पति यस्या सा तथा। ईश्वराणा ब्रह्मविष्णुकृद्रादीना तत्तिष्ठप्रमिहिमो त्कर्षेक्षपेण प्रीत्यतिशयविषयत्वेन अभ्याहितेत्यर्थो वा। ॐ ईश्वरवद्धभारी नमः॥

ईडिता। ईड स्तुताविति घातुपाठात् स्तुतिभि विषयी कृता, वेदान्तैरिति शेष, 'एष नित्यो महिमा ब्राह्मणस्य' इत्यादिश्रुते । ॐ ईडितायै नम ॥

ईश्वराघों क्रशरीरा । ईश्वरस्य सिबदानन्दासकस्य शिव स्य अर्थ च तत् अक्क च अर्थोक्कम् । आनन्दस्वरूपता शरीर शरीरवत्स्वरूपलक्षण यस्या सा तथा । 'सिचनमय शिव साक्षात्तस्यान दमयी शिवा ' इति स्मृते । अथवा, ईश्वर-स्यार्धाङ्ग वामभाग शरीर मृतिर्थस्या सा । अथवा, ईश्वरस्य इकारस्य अर्धोङ्ग शक्तिबीज शरीर मन्त्रात्मिका मृतिर्थस्या सा तथा । ॐ ईश्वरार्धाङ्गशरीरायै नम ॥

ईशाधिदेवता । ईशस्येत्युपळक्षण जीवस्यापि, ईशस्य तत्पद्वाच्यार्थस्य मायोपाधिकस्य विशिष्टस्य अधि उपरि विशेषणद्वयस्य परित्यागे देवता द्योतमाना कूटस्थचिन्मात्रशो-धिततत्त्वपदार्थक्षपेत्यर्थ । अथवा, ईश कामेश्वर अधि देवता पूच्या यस्या सा तथा । परमपतित्रतेत्यर्थ ॥ ॐ ईशाधिदेवताये नमः॥

ईश्वरपेरणकरी चेदाताण्डवसाक्षिणी। ईश्वरोत्सङ्गनिलया चेतिबाधाविनाद्यानी॥

ईश्वरप्रेरणकरी । ईश्वरस्य विम्बचैतन्यस्य स्वरूपा सती जगत्सर्जनादिकार्यप्रेरियत्री प्रेरणकरी आज्ञापकेट्यर्थ । इच्छाज्ञानिक्रयाशक्ट्यावरणिवक्षेपशक्तिप्रतिफिछतिचित्स्वरूपा भाविकार्यानुकूछप्रारब्धाध्यक्षपरमेश्वरेक्षणनामधेयप्रकाशात्मि का भवतीति भाव । ईश्वरप्रेरण तदाज्ञामनुस्रङ्खनेन क- रोतीति वा, तदीयभार्यात्वेन नितरा तद्वश्रयेति यावत्॥ ॐ ईश्वरभेरणकर्यै नमः॥

ईशताण्डवसाक्षिणी । इशस्य तत्पद्वाच्यार्थस्य ताण्डव नर्तनवद्प्रयक्षसपाद्य छीछामात्रमित्यर्थ , जगत्सर्जनादिक्ष्पा क्रिया चळनक्ष्पकर्मत्वसामान्यात , तस्य साक्षिणी अस सर्गप्रकाशक्षिणीत्यथ , 'असगो न हि सज्जते ' इति श्रुते । अथवा, ईशताण्डवस्य परमेश्वरनृत्यनाट्याभिन्यश्चितचतु ष ष्टिकछोपदेशम्य साक्षिणी । तदुक्तम— 'नर्तनाद्धि परेशस्य चतु षष्टिकछाजनि ' इति प्रदोषस्ताते ईशताण्डवनर्तनवर्णन मतिस्फुटमिति नेह छिख्यते ॥ ॐ ईश्वताण्डवसाक्षिण्ये नम् ॥

ईश्वरोत्सगनिल्या। ईश्वरख स्वभर्तु स्त्सग ऊरू तौ निल्य यस्या सा तथा ॥ ॐ ईश्वरोत्सगनिल्यायै नम् ॥

इतिबाधाविनाशिनी । ईतिबाधा दैवासुपद्रव , श्चुद्र जन्तुपीडा वा, ता विनाशयतीति तथा ॥ ॐ ईतिबाधा विनाशिन्ये नम ॥

ईहाविरहिता चेदादाक्तिरीषित्समतानना । स्रकाररूपा स्रिता स्थमीवाणीनिषेविता । ईहाविरहिता। अप्राप्तप्राप्तिं प्रति इच्छा ईहा, तथा विरहिता, आप्तकामत्वात् तद्विरहितेत्यर्थ ॥ ॐ ईहावि-रहितायै नमः ॥

ईशशक्ति । ईशम्य शक्ति सर्वज्ञत्वादिस्वरूपसामर्थ्यं य-स्या सातथा, 'देवात्मशक्तिम' इति श्रुते ॥ ॐ ईशशक्तये नम ॥

इषित्मितानना । इषत् स्मित मन्दहास यस्य तत् तथा, ताहगानन यस्या सा तथा, पर्याप्तकामत्वेन सर्वदा प्रसन्न मुखीत्यर्थ । दु खास्पर्शिपरमानन्दरूपतया वा तथा ॥ ॐ ईषित्स्मताननायै नम ॥

लकाररूपा। रूप्यत इति रूप मन्त्रस्य चतुर्थवर्णत्वेन ज्ञापक यस्या सा तथा॥ ॐ लकार्रूपाये नम्॥

छिता 'छित त्रिषु सुन्दरम् इति वचनात् अ त्यन्तसौन्दर्यवतीत्यर्थे । अनुपमसौन्दर्या वा ॥ ॐ छि तायै नम् ॥

छक्ष्मीवाणीनिषेविता। छक्ष्मी रमा सर्वेश्वर्यशक्ति , वाणी सरस्वती सर्वज्ञानशक्ति , ताभ्या नितरा अक्रुत्रिमप्रेम्णा अनन्यभूता सती सेविता। सेवानाम उन्मीछिताज्ञाप्रतीक्षा, तद्वस्वादिसर्थ ॥ ॐ छक्ष्मीवाणीनिषेविताये नम ॥

लाकिनी ललनारूपा लसद्दाडिमपाटला। ललन्तिकालसत्फाला ललाटनयनाचिता॥

लाकिनी। क सुखम्, 'क ब्रह्म इति श्रुते, तम्न भवतीत्मक ब्रह्मभित्रतया प्रतीयमान दु खात्मक जगत् भकम्, लीयत इति लम्, उपलक्षणमुत्पत्त्यादे, लमक मस्यास्तीति लाकिनी, अनृतजहदु खरूपजगत्कारणत्रव्याद्य-त्तस्वरूपब्रह्मभूता इत्यर्थ ॥ ॐ लाकिन्ये नम् ॥

छलनारूपा। रूप्यते ज्ञाप्यते अनेनेति रूप ज्ञापक तद्धा प्यिं क्ष चिह्निमिति वा, छलनाना स्त्रीणा रूप वेष आभर णाचलकारो वा आकृतिर्वा यम्या सा तथा, छलना स्त्रिय रूपाणि भूतय यस्या सा तथा, 'लिक्काक्कितमिद पद्य जगदेतद्भगाङ्कितम' इति पुराणवचनान् ॥ ॐ लल नारूपायै नम् ॥

लसद्दालिमपाटला । दालिमशब्दन विकसित तत्पुष्प लक्ष्यते, लसत् सद्या विकसनप्रकाश च तद्दालिम च, इद उपलक्षण वन्धूकादीनाम्, तद्वत्पाटला खेतमिश्ररक्तवर्ण प्रधानमूर्तिमतीत्यथ , 'खेतरक्त तु पाटलम् ' इति वचनात् । ॐ लसद्दालिमपाटलाये नम ॥ ळळान्तिकाळसत्फाळा । ळळान्तिकया परित मुक्ताफळ खचितनवरत्नमध्यया ळळाटमध्यदेशभूषया, इद्मुपळक्षण ळळाटपट्टादीनाम्, ळसत् फाळ यस्या सा तथा ॥ ॐ ळळान्तिकाळसत्फाळाये नमः ॥

ख्ळाटनयनार्चिता। छळाटे नयन येषा ते, अत्र छळा टशब्देन भूमध्य छक्ष्यते, नयनशब्देन ज्ञानमपि, तथा चौध्वेद्दष्टिमि खेचरीमुद्र्या विळीनिचत्ते असिवरुणयोर्म ध्यदेशाभिधानाविमुक्कतपरमेश्वराराधनपरपुरुषप्राप्यत्वाभि धायकात्रिप्रश्रोत्तरजाबाळश्रुतिगतयाज्ञवल्क्योत्तरवाक्यनिर्दि ष्टभूमिकाजयसिद्धिमत्पुरुषे अचिता साक्षात्क्रतेत्यर्थ । अय षा, तृतीयनेत्रवता शिवेन तत्त्वरूपक्रदेवी पूजितेत्यर्थ ।

लक्षणोज्ज्वलदिन्याङ्गी लक्षकोट्यण्डनायिका। लक्ष्यार्थी लक्षणागम्या लब्धकामा लतातनु ॥

लक्षणोज्जवलिव्याङ्गी । दीप्यते प्रकाशत इति दिव्य लक्षणे स्वरूपतटस्थनामके उज्ज्वल शोभित शुद्धम् अङ्ग स्वरूप विप्रहो वा । धृताकिवन्यन्यायेन 'तदात्मान स्वय मक्करत' इति श्रुत सिद्धदानन्द्धनीभूतजीवात्मको विप्रहो यस्या सा तथा। अथवा, सामुद्रिकशास्त्रोक्तदिव्यस्थाणै सञ्ज्वलानि मपूर्णानि दिव्यानि यानि अङ्गान्यवयवा शिर पाण्यादय अस्या सन्तीति वा तथा॥ ॐ लक्षणोज्ज्वल दिव्याङ्गयै नमः॥

लक्षकोट्यण्डनायिका । लक्षानि च कोट्यश्च असल्या तापरिमितानीत्यर्थे , ससारस्यानादित्वेन भूतभविष्यदा दिभेदेन बहुसल्यावत्त्वमण्डानाम् , तानि च तान्यण्डानि च हिरण्यगभैविराडूपाणि समष्टिन्यष्टचात्मना विश्वतैजसापा धिभूतानि , तेषाम् अधिष्ठानिक्षम्बचैतन्यात्मना नयति स्वस त्तामापादयतीति नायिका ॥ ॐ लक्षकोट्यण्डनायिकायै नम् ॥

लक्ष्यार्था। लक्षणया शोधनया जहद्दजहल्क्षणया वा प्रतिपाचते वेदान्तमहावाक्याना योऽर्थ तत्स्वरूपा। अय वा, योगशास्त्रप्रसिद्धबहिरन्तरूष्वीध प्रदेशिवशेषरूपभूमिका सु स्वस्वमनोवाञ्छाविषयविशेषणत्वन निर्गुणत्वन वा मना विलयरूपहठराजयोगादिसाधनपरिपाकवशेन साक्षात्कृत चै तन्य लक्ष्य इत्युच्यते, अर्ध्यते याच्यते गुरु प्रति इति अर्थे, लक्ष्यो योऽर्थ चित्स्वरूपपरमानन्दरूप सोऽपि सैवेति तथा, 'ब्रह्मैवेदममृत पुरस्ताद्वद्वा प्रश्राद्वद्वा दक्षिणत्क्षोत्त

रेण ' इति श्रुते ॥ ॐ लक्ष्यार्थीयै नम ॥

लक्षणागम्या । लक्षणानाम शक्यार्थे वाचकस्य पदस्य अन्वयाद्यनुपपत्त्या तत्सवनिधपदार्थोन्तरज्ञानहेतु शक्य सबन्धादिपदजन्यपदार्थान्तरङ्गानहेतु शब्दवृत्तिरित्युच्यते, तस्या वाच्यवाचकतत्सवन्धादिभेद्ज्ञानपूर्विकाया परिच्छि नसावयवपदार्थसबन्धज्ञानहेतो केवलचिन्मात्रे निरुपाधि के वस्तुनि षष्ठीजात्यादीना छक्ष्यतावच्छद्कधर्माणामभावे प्रवृत्त्ययोगात् तया अगम्या , गन्तु ज्ञातु योग्य गम्य तन्न भवतीत्यगम्या । वेदान्तमते जहद्जहह्नक्षणया विश्रषण-मात्रपरित्यागस्य अन्यान्यतादात्म्यानुपपत्या बोधितत्वात् तद्रथे सा अवश्यमङ्गीकर्तव्या । विशेष्यस्य ज्ञानस्वरूप त्वेन नित्यतया लक्षणाजन्यत्वात् तदर्थ सा न अपेक्यत इति भाव । तथा च प्रकृताया देवताया शुद्धचैत न्यमात्रस्वरूपतया स्वय प्रकाशत्वेन स्वक्षणागीचरत्वात् लक्षणागम्येति नाम युक्तमिति भाव ॥ ॐ लक्षणा-गम्यायै नम् 🕕

लब्धकामा। लब्धा काम्यन्त इति कामा ऐहिकामु-दिमकसुखसाधनानि, लक्षणया तत्तज्जन्यसुखानि वा तथाभूता कामा यया मा तथा पर्याप्तकामेत्यर्थ, 'पर्याप्तकामस्य कुतात्मनस्तु इहैव सर्वे प्रविछीयन्ति कामा ' इति श्रुते ॥ ॐ लब्धकामायै नम ॥

छतातनु । छता इव छता कस्पादिवछय सकछपुर-षाथप्रदत्वेन जगति प्रसिद्धा , ता इव सुकुमारत्वाद्याश्रया तनु मूर्ति यन्त्या सा तथा ॥ ॐ छतातनवे नम ॥

ललामराजदलिका लम्बिमुक्तालनाश्चिता । लम्बोदरपसूर्लभ्या लज्जास्या लयवार्जिता ॥

ल्लामराजदिलका। ल्लाम्ना कस्त्रीतिल्केन कस्त्री पत्रण वा राजत् विश्राजत् परमशाभि अलिक ल्लाट यस्या सातथा।। ॐ ल्लामराजदिलकाये नम ॥

लिम्बमुक्तालता स्विता । लिम्बन्य लम्बमाना अध प्रस्ता मुक्तालता हारा मुक्ताफलानि वा यस्या सा तथा । नवरत्नस्वचितसुवर्णमुक्तागुन्छै सर्वाङ्गेषु प्रलम्ब मानै ललाटपर्यन्त लम्बमानिकरीटप्रथमभागललाटपट्टना-साम्रताटङ्काध कर्णदेशकण्ठप्रदेशहस्तचतुष्ट्याङ्गद्समानप्रदेश-कूर्णसपरित पदकामदेशकटिनिबद्धकाठ्यादिषु परिलम्बमा नैरित्यर्थ ॥ अल्लिम्बमुक्तालता श्वितायै नम ॥ छम्बोद्रप्रसू । छम्बोद्रस्य महागणेशस्य प्रस् जन-यिक्षी मातेत्यर्थ । छम्बोद्र प्रसूत इति वा ॥ ॐ छम्बो-दर्मसवे नम ॥

लभ्या। ससारदशायामावारकाज्ञानेन स्फुटमप्रकाशमा-ना सती श्रवणादिसस्कृतान्त करणवृत्तावखण्डाकारज्ञानभू-मिकाया प्रतिफलितस्वरूपेण विस्मृतकण्ठगतकनकभूषणवत् प्राप्तप्राप्तिरूपतया लब्धु योग्येति तथा ॥ ॐ लभ्यायै नम ॥

छज्जाह्या। छज्जया, उपस्क्षणमन्त करणघर्माणा सर्वे-षाम्, आह्या तद्वस्वेन आकारवतीत्यर्थ। तिरोधानादिना अन्तर्हिता सती वरादि प्रयम्छतीति छज्जाह्या भवतीति च उपचर्यते॥ ॐ छज्जाह्यायै नम् ॥

ळयवर्जिता। 'अविनाशी वा अरेऽयमात्मा अनुच्छि त्तिधर्मा' इत्यादिश्रुत, ळयो विनाश, तेन रहिता वर्जितेत्वर्थ। इद्मुपळक्षण षड्मावविकाराणाम्, सत्य झानमनन्त ब्रह्म' इत्यादिश्रुते ॥ ॐ छयवर्जिताये नमः॥

हींकाररूपा हींकारनिलया हींपदिषया। हींकारबीजा हींकारमन्त्रा हींकारलक्षणा।। हींकाररूपा। हींकार रूप्यते निरूप्यते निर्देश्यत इति रूप मन्त्रपश्चमावयव यस्या सा तथा। ॐ हींकार रूपाये नम् ॥

र्हीकारिनल्या। ही मक्षर निलय गृह्वद्वच्छेद्क यस्या सा तथा । स्वीयवाचक त्वारोपितवाच्यतावच्छेद्कधर्माव-च्छिञ्जतादिसपादनेन गृह्वर्तिपुरुषवत् व्यावृत्तस्वरूपेण ज्ञा पक भवति । अन्यथा, नाम्नो वाच्यार्थे प्रवृत्त्ययोगादिति भाव । ॐ हॉकार्निल्यायै नमः ॥

हींपदिप्रिया। पद्यते गम्यते ज्ञायते अनेनेति पदम्, पद्यत गम्यते प्राप्यत इति वा पदम्, द्वीकारस्य मन्त्रावयवतया तद्देवताप्रकाशकत्वेन तस्या शक्तत्वात्— 'शक्त पदम्' इति तक्कक्षणत्वात् तथा प्रथम व्याख्यानम्। हकाररेफेकारानुस्वारा णा वर्णाना समष्टिस्वक्षपेण समुदायात्मकत्वात् 'वर्णसमुदाय पदम्' इत्यपि पदछक्षणवत्त्वमस्य घटते। पुरश्चयीवता स्वदेव तासाक्षात्कारद्वारा सम्छपुरुषार्थप्रापकत्वात् द्वितीयव्याख्यान तथा कृतम्। तस्मिन् प्रिया प्रीतिमतीत्यर्थे ॥ ॐ हींपदिपि-याये नमः॥

हींकारबीजा। हींकार एव बीज स्ववाचकमन्त्रभाग, 'क्रापक देवताना यत् बीजमक्षरमुच्यते ' इति वचनात् हीं-

कारस्य मायाप्रकाशकत्वेन, वटधानादि स्वनिष्ठवृक्षाभिव्य श्वकत्वेन कारणतया यथा बीजिमत्युच्यते— सत्कार्यवादिना-मव्यक्तनामरूपकारण बीजम्, अभिव्यक्तनामरूपात्मक पश्च। द्वावि कार्यमिलङ्गीकार , सकलकारणसमवधाने विशेषनाम-रूपवत्तया कारणस्याभिव्यक्तिरूपत्ति , तथा चोक्तबीजस्य मायाविच्छन्नचैतन्याभिव्यश्वकत्वेनापि बीजत्वम्, तादृश द्वींकारबीज यस्या सा तथा ॥ ॐ हींकारबीजाये नम्।॥

ह्वीकारमन्त्रा । ह्वीकारस्य मननात् त्रायत रक्षति वाच्य-वाचकयोरभेदादिति तथा । ह्वीकारघटितो मन्त्रो त्रा यस्या सा इति वा तथा ॥ ॐ ह्वीकारमन्त्राये नमः ॥

हींकारलक्षणा । हकार शिव , आकाशबीजत्वादाकाश-विश्वर्लेप , रेफ विद्ववीज कार्योत्पादसिनिहितशक्तिमदी श्वरवाचकम , तथा च हकारयुक्तरेफ शुद्धचैतन्यमेव कारणताविन्छन्नम् - इति वदित । ईकार मन्मथबीज तत्कारणलक्षकत्या स्थितिहेतु विष्णुरूपचैतन्यमिनद्धाति । अनुस्वारस्तिमन्नेव पदार्थे अभिन्नानिमित्तोपादाने लय विक्त । तथा च शिमित्युक्ते जगदुत्पित्तिस्थितिलयकारण चैतन्य शक्ता वाच्यार्थ प्रतीयते । तस्यैवोपाधिपरिलागरूपलक्षण यस्या सा तथा । शिकार लक्षण तहस्थलक्षण यस्या सेति वा तथा ॥ ॐ द्रींकारस्रक्षणायै नमः ॥ ह्रींकारजपसुपीता ह्रींमती ह्रींविभूषणा । ह्रींक्रीला ह्रींपदाराध्या ह्रींगभी ह्रींपदाभिधा॥

हींकारजपसुप्रीता। हींकारस्य जप हींकारजप, तेन सुप्रीता॥ ॐ हींकारजपसुप्रीताये नम ॥

हींमती। वाचकत्वेन छक्षकत्वेन वा छक्ष्यपदार्थरूपेण वा वाच्यवाचकयोरभेदेन वा अस्या अस्तीति हींमती॥ ॐ हींमत्ये नम ॥

हीं विभूषणा । केवलजडमायावाचक हीं कार, तथा हि— हकार श्वेतवाचक, रेफ रोहिताथक, ईकार नीला थक, तथा च विशिष्टस्य शुक्लरक्तनीलवल्पदार्थवाचक तया सत्त्वरजस्तमोराणवल्प्रकृतिवाचकत्वेन परिच्लिकानृत जडदु खस्वरूपवाच्यार्थकतया प्रकाशराहित्येन अनुपादेय ताया सत्या तदवच्लिक स्वप्रकाशचैतन्याकारत्या विशिष्टा र्थस्य आपादमस्तकभूषिततकणीवदानन्दस्वरूपतया तद्वाच कहीं पदस्य अष्टेश्वर्यसिद्धिप्रदानशक्त्याधायकत्या शोभायमा न भूषणवत्, 'कुण्डली पुरुष ' इत्यत्र कुण्डलस्योपलक्षणत्या इतरसजातीयादिव्यावर्तकत्वम्, तथास्यापि बीजस्येतरव्या वृत्तवाच्यार्थगोचरप्रमाजनकत्वेन भूषणवत् यस्या सा

तथा ॥ ॐ हींविभूषणायै नम ॥

हींशीला । हीमित्यनन तद्वाच्यार्था ब्रह्मविष्णुरुद्रा लक्ष्यन्ते, तेषा शील स्वभाव पारमार्थिक रूप सिचदान न्दात्मकता यस्या सा तथा, तिब्रष्टधर्मा सत्त्वरजस्तमा गुणाद्यो वा यस्या सा तथा, 'शील स्वभावे धर्मे च' इति वचनात्॥ ॐ हींशीलायै नमः॥

हींपदाराध्या । हीपदन एकाक्षरबीजमन्त्रेण आराधितु योग्या तथा । ' हींकारेणैव ससिद्धो मुक्तिं मुक्तिं च विन्द ति' इति मुवनेश्वरीकल्पवचनादिति यावत् ॥ ॐ हींप दाराध्यायै नम ॥

हींगर्भा । हींशब्दार्था सगुणमूर्तयस्तिस्र गर्भे स्वस्त रूपे सशक्तिका अविनाभावसबन्धेन यस्या सा तथा, 'मम योनिर्महद्भा तस्मिन् गर्भे दधाम्यहम् ' इति वचनात् ॥ ॐ हींगभीयै नम ॥

ह्याँपदाभिधा। ह्याँकार अभिधा नाम यस्या सा तथा। समष्टिक्षपाया समष्टिशब्दवाच्यत्वनियमादिखभिसिध ॥ ॐ ह्राँपदाभिधायै नम ॥

हींकारवाच्या हींकारपूज्या हींकारपीठिका। हींकारवेद्या हींकारचिन्त्या हीं हींकारीरिणी॥ ह्रीकारवाच्या । मायोपाधिक ब्रह्मीण कल्पितधर्मेण शब्द प्रवृत्त्य पुपपत्त ह्रींपद व्य वाच्या क्रह्मेयर्थ ॥ ॐ ह्रीं कारवाच्याये नमः॥

हींकारपूज्या। 'मूलमन्त्रेण पूजयेत्' इति पूजाक्कत्वन मूलमनोविनियोग श्रूयते। मूलमनुश्च देवताया स्वक नामेति वचनात्। अन्तमुखानामेव मन्त्रशास्त्रेषु तन्नाम्ना न्युत्पन्नत्वा न्। हींकार नमोऽन्तमुखार्य यथागुरुमप्रदाय श्रीचकादौ मूलदेवता पूजनीयत्यागमरहस्यात् ह्रींबीजेनैव पूजियतु यो ग्या। अतिप्रियबीजनामत्वादित्यभिप्राय ॥ ॐ ह्रींकार पूज्यायै नम् ॥

हींकारपी।ठका । अत्र पीठशब्द आधारळक्षक । वा न्यार्थो हि ताचकशब्दस्य सत्ताप्रदत्वेन आधारो भवति । मन्त्रदेवतयारभेदेऽपि अर्थनिष्ठमहिस्र तद्वाचकपदेऽदृश्यमा-नत्वात् कल्पितभेट सपाद्येदमुच्यते । द्रींकारस्य पीठिका वृत्तिस्थान शक्त्या गोचरतया विषयीभूतत्यर्थ ॥ ॐ द्रींका रपीठिकाये नम ॥

हींकारवेशा। स्वरूपत निगुणब्रह्मतया अज्ञानविषयत्वा-अयत्वाभ्यामप्राप्तपुरुषार्थरूपतया समाग्द्शाया प्रतीयमान-त्वात् गुरूपसद्नश्रवणादिरूपविध्यप्रामाण्यनिरासाय स्थ- णया शुद्धस्वरूपपरमानन्दतया प्रेप्सितत्वात् श्रवणादिजन्य-वृत्तिव्याप्यत्वरूपवेदनाविषयत्वम्। 'ब्रह्मण्यज्ञाननाञ्चाय वृत्ति व्याप्तिरितीर्थते ' 'मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेताम् ' इत्यादि वचनात् भगवताप्यङ्गीकृतमिति । हींकारेण गुरुमुखोद्भृतेन वेद्या वेदितु योग्या । तत्स्वरूपपरिज्ञानद्वारा तत्प्राप्तिरूपपु रुषार्थहेतुत्वादिति तात्पर्यम् ॥ ॐ हींकारवेद्यायै नमः ॥

ह्रींकारचिन्या । अस्य बीजस्य पश्चप्रणवान्तर्गतत्वेन अँकारभेदे ब्रह्मप्रतीकत्वाविशेषात् । प्रणवे यथा परापरब्र-ह्यापासनहेतुवदस्मिन् वा प्रतीके तद्भवतीति विकल्प । यदा भक्तिपार्थक्येन मन्त्रविशेषेषु भवतीति योगवेदमार्गरहस्य न वादजल्पाद्यवकाश । ह्रींकारे उभयविधब्रह्मस्वरूपतया चिन्तितु योग्या । ध्यानस्य साक्षात्कार प्रत्यारादुपकारकत्वेन ध्यातव्येत्यर्थ ॥ अ ह्रींकारचिन्त्यायै नमः ॥

हीं । ह्रव् हरण इति घातुपाठान् समस्तविधैश्वर्यप्रदा नादिशक्त्यारोपाधिष्ठानत्वे सत्यपवादावशेषितपरमानन्दरूप मुक्तिरित्यथ ॥ ॐ हीं नम् ॥

ह्याँगरीरिणी। मूळमन्त्रात्मिकेति यावत् ह्रीमेव शरीर मृर्तिरस्या अस्तीति ह्याँशरीरिणी॥ ॐ ह्याँशरीरिण्ये नम ॥

हकाररूपा इलघुकपूजिता हरिणेक्षणा। हरपिया हराराध्या हरिब्रह्मेन्द्रवन्दिता ॥

इकाररूपा । इकार रूप षष्टावयव यस्या सा, मूलविद्यावाच्यार्थवाचक यस्या सा, तथा।। ॐ हकार-रूपायै नम ॥

इल युक्पृजिता। इल युग धरति इति इल युक् बल राम , तेन पूजिता ध्यान।दिभिराराधितेत्यर्थ ॥ ॐ ह लधुक्पूजितायै नम. ॥

हरिणेक्षणा । हरिण्या एण्या ईक्षणिमव ईक्षण यस्या सा तथा, अतिसतीषेण कातराक्षीति भाव । सर्वत्र स-र्वदा सर्वद्रष्ट्रीति वा। भक्तेष्वादरहेतुदर्शनवतीति भाव ॥ ॐ हरिणेक्षणायै नम ॥

हरप्रिया। हरस्य प्रिया शिववह्नभेटार्थ। हर प्रियो यस्या सा इति वा ॥ ॐ हर्मियायै नमः ॥

हराराध्या । हरेण स्वभन्नी आराधित योग्या, केवलस-श्विदानन्दस्वरूपत्वात् ॥ ॐ हराराध्यायै नमः ॥

हरिज्ञहोन्द्रवन्दिता। हरि रमेश । ज्ञह्या वाणीश ।

इन्द्रो देवश उपलक्षण सर्वदेवभेदानाम् । तैर्वन्दिता नम स्कृता ॥ ॐ हरिब्रह्मेन्द्रवन्दितायै नम ॥

हयारूढासेविताङ्घिईयमेधसमर्चिता। हर्यक्षवाहना हसवाहना हतदानवा।।

हयारूढासेविताङ्कि । हयारूढानाम अश्वमात्रसेनानी शक्ति वश्यकरी । तथा सेवितौ अङ्की यस्या सा तथा ॥ ॐ हयारूढासेविताङ्क्यै नम ॥

हयमेधसमर्चिता। हयमेधेन अश्वमेधेन समर्चिता पू जिता। पुरुषत्वादिशास्यै इलादिभिरित्यथ ॥ ॐ हयमेध समर्चितायै नम ॥

हर्यक्षवाहना। वाहयतीति वाहनम्, हयक्ष केसरी वाहन यस्या सा तथा। महारूक्ष्मीरूपदुर्गेत्यर्थ ॥ ॐ हर्यक्षवा-हनाये नम ॥

हसवाहना । हन्ति गच्छतीति हस सूर्य प्राणो वा, वाहनवन् आधारभूतप्रतीकमित्यर्थ , अभिव्यक्तिस्थानमिति यावत् , 'म यख्राय पुरुषे । यक्षासावादित्ये । स एक ' इति श्रुते । अथवा, हसवाहना ब्राह्मीरूपेणत्यर्थ ॥ ॐ इंस वाहनायै नम ॥

हतदानवा । हता दानवा अनेकप्रकारकाकिरूपधरया भण्डासुरादय यया सा तथा ॥ ॐ हतदानवायै नमः ॥

हत्यादिपापशमनी हरिदश्वादिसेविता। हस्तिकुम्भोत्तुद्वुचा हस्तिकृत्तिप्रियाङ्गना॥

हत्यादिपापश्चमनी । हत्या ब्रह्महत्या आदिर्येषा तानि तथा पापानि शमयतीति तथा, 'हरिईरति पापानि हित वचनात् ॥ ॐ हत्यादिपापश्चमन्ये नमः ॥

हरिद्यादिसेविता। हरित् हरिद्वर्ण मरकत इव अश्वो यस्येन्द्रस्य स तथा आदिर्येषा ।द्क्पतीना ते सविता चर णारविन्दसनिधि किंकरतयाश्रितेखथ ॥ ॐ हरिद्श्वा दिसेविताये नम ॥

हस्तिकुम्भोत्तुङ्गकुचा। हस्त अखास्तीति हम्ती, तम्य कुम्भी तद्वदुत्रती दुची सान्द्री यस्या सा तथा।। ॐ ह स्तिकुम्भोत्तुङ्गकुचाये नम ॥

हस्तिकृत्तिप्रियाङ्गना । हस्तिन कृतौ चर्मणि प्रिय प्रीतिमान् शिव , तस्याङ्गना भामिनीत्यथ ॥ ॐ हस्तिकृ तिमियाङ्गनायै नमः ॥

हरिद्राकुङ्कुमादिग्धा हर्यश्वायमरार्चिता। हरिकेशसखी हादिविया हालामदोछसा॥

हरिद्राकुङ्कुमादिग्धा । हरिद्राकुङ्कुमाभ्या उपलक्षण कस्तू-रीपत्रादीनाम् । दिग्धा लिप्तेत्यर्थ ॥ ॐ हरिद्राकुङ्कुमादि ग्धाये नम ॥

हर्यश्वाद्यमरार्चिता। हर्यश्व सुरेश आदिर्येषाम् अम राणा तैरिचता किंकरतया नियामकत्वेन पूजितेत्यर्थ ॥ ॐ हर्यश्वाद्यमरार्चितायै नमः॥

हरिकेशसस्त्री। हरय हरिद्वर्णा केशा शिरोठहा यस, 'हिरण्यदमश्रुहिरण्यकेश ' इति श्रुते । तस्य सस्त्री प्रयोज नमनपेक्ष्योपकारिणीत्यर्थ । यद्वा वर्णेन नीछेन हरिणा विष्णु- ना समा केशा अस्य सन्तीति सर्वा इसुन्दरिक्ययौवनिच द्वूपसहितकामेश्वर, तस्य सस्त्री॥ ॐ हरिकेशसरूये नमः॥

हादिविद्या । छोपामुद्रापासितमनुरूपत्यर्थ ॥ ॐ हादि विद्यायै नम ॥

हालामदालसा । हालाया अमृतमथनाद्भूतवारूण्या मदेन रहासेन अलसा आरक्तनेत्रान्तरोमाश्वादिचिह्नवती त्यर्थ ॥ ॐ हालामदालसायै नमः ॥

सकाररूपा सर्वज्ञा सर्वेज्ञा सर्वमङ्गला। सर्वेकजी सर्वेभजी सर्वेहन्त्री सनातना॥

सकाररूपा । द्वितीयखण्डद्वितीयावयवत्वेन ज्ञापक य-स्या मा तथा ॥ ॐ सकाररूपाये नमः ॥

सर्वज्ञा । अलुप्तनित्यज्ञानम्बरूपेण सामान्यरूपेण सर्व जानातीति सर्वज्ञा, 'य सर्वज्ञ सर्ववित 'इति श्रुते ॥ ॐ सर्वज्ञाये नम ॥

मर्वेशी । सर्वस्य कार्यस्य अन्तर्यामिक्रपेण ईष्टे प्रेरयती ति तथा ॥ ॐ सर्वेश्यै नम. ॥

सर्वमङ्गला। सर्वप्रकारेण शुद्धविशिष्टचैतन्यरूपेण मङ्गला परमानन्दस्वरूपा। अत्र बहुत्रीहेरविविश्वितत्वात् विव-श्विताया वा सुन्दरकायो राजत्यादिवत्त समासार्थ । अथवा, सर्वेषा मङ्गल यस्या सा तथा। सर्वे प्रकारे ध्यानकार्त नपूजानमस्काराद्यर्चनभक्तिजन्यकैङ्कर्ये जलानामपि मङ्गल सुख यस्या जायत सा तथा। सर्वेषामात्मरूपतया प्रतीय मान मङ्गल सुखल्क्षप यस्या नेति वा। सर्वशब्दवाच्य सर्वकारण जिव, तस्य मङ्गल सुख यस्या जायते सा तथा, स्विन्मय शिव साक्षात्तस्यानन्दमयी शिवा दित न

चनात् । अथवाः, मङ्गल्डशब्दन मङ्गल्हतुभूता क्षियो लक्ष्यन्ते । सर्वेषा प्राणिना मङ्गल्ल मङ्गलसाधनभूता योषा स्वाभिन्नसिच्दानन्दवस्वेन यस्या सा तथाः, 'एतस्यैवान-न्दस्यान्यानि भूतानि मात्रामुपजीवन्ति दिति श्रुतेरित्यर्थे । 'अशुभानि निराचष्टे तनोति शुभसतितम् । स्मृतिमात्रेण यत्पुसा ब्रह्म तन्मङ्गल विदु । अतिकल्याणरूपत्वात् नित्य-कल्याणसश्रयात् । स्मृत्णा वरदत्वाच ब्रह्म तन्मङ्गल विदु ' इत्यादिवचनात् ॥ ॐ सर्वमङ्गलायै नम् ॥

सर्वकर्त्री । सर्वे समस्त स्वशक्त्या मायारूपया करा तीति तथा, 'ईशत ईशनीमि ' इति श्रुत ।। ॐ सर्वेकर्र्यें नमः ॥

सर्वभर्ती । सर्व विभर्तीति तथा, 'एष विधृतिरेषा छाकानाम इति श्रुत ॥ ॐ सर्वभर्त्र्ये नमः ॥

सवहन्त्री । सर्वे हरतीति तथा । णभनीमत्रथै 'यतो वा' इत्यादिश्रुत्युक्ततटस्थलक्षणत्रयमभिहितमिति वेदित व्यम् । ॐ सर्वहन्त्र्ये नम् ॥

मनातना । 'अजो नित्य शाश्वताऽय पुराण ' इति श्रुत नित्यसिद्धस्वरूपेत्यर्थ ॥ ॐ सनातनायै नम ॥

सर्वीनवद्या सर्वोङ्गसुन्दरी सर्वसाक्षिणी। सर्वीत्मिका सर्वसौख्यदात्री सर्वविमोहिनी॥

सर्वीनवद्या । सर्वैज्ञानिश्वर्यादिगुणैरनवद्या । अवद्यानाम विद्यया होना जडप्रकृति मिध्या बाध्यमानःवात् । तद्विष्ठक्षणा सर्वज्ञानानन्द्रस्पत्वाद्नवद्या । सर्वेषा सर्वीभीष्ठप्रापकत्वेन स्तुत्या वा ॥ ॐ सर्वोनवद्याये नम् ॥

सर्वाङ्गसुन्दरी । सर्वाणि च तानि अङ्गानि च अवयवा डिर पाण्यादय , तेष्वन्यूनातिरिक्तभाववस्वात् यथासासुद्रि कलक्षण तद्वस्वन सर्वाङ्गसुन्दरी । अथवा, सर्वेषामङ्गेषु गरीरेषु ब्रह्मस्वरूपतया अत्यन्तप्रेमविषयत्वेन सुन्दरपदार्थ वदविनाभाववाङलाविषयत्वात् तथा ॥ ॐ सर्वाङ्गसुन्दर्थे नम् ॥

सर्वभाक्षिणी । मर्वेषा जडाना कार्याणा स्फूत्याधायक-त्वेन प्रकाशकर्त्री तथा । सर्व साक्षादीक्षत इति वा तथा ॥ ३० सर्वसाक्षिण्यै नम् ॥

सर्वात्मका । सर्वेषामात्मस्वरूपत्वान् । 'यद्याप्नोति यदा दत्ते यद्यात्ति विषयानिह । यद्यास्य सतता भावस्तम्मादात्मेति गीयतं इति वचनात्तथा ॥ ॐ सर्वात्मिकाये नम ॥ सवसौख्यदात्री। सुखिन भाव सौख्यम्, सर्वाणि च तानि शियमोदशमोदानन्दशब्दवाच्यानि। इष्टदर्शनजन्य सुख प्रिय। तक्षाभजन्य मोद। तद्तुभवजन्य प्रमोद। धानन्द समष्टि। जीव भोक्ता। तानि ददातीति तथा। सर्वप्रकारे स्मरणादिभि सौख्य ददातीति वा। सर्वेषा मात्रह्मस्तम्वपर्यन्ताना यथाकर्मोपासन प्रत्यक्षेण हद्यमान ह्मानैश्वर्योदिसहित सुख ददातीति वा तथा। 'एव ह्यवानन्द याति' इति श्रुते ॥ ॐ सर्वसौख्यदात्र्ये नम् ॥

सर्वविमाहिनी। सर्वान विमोह्यतीति अन्यथा प्राहय सीति वा तथा। 'अज्ञानेनायृत ज्ञान तन मुह्यन्ति जन्त व 'अनृतेन हि प्रत्यूढा ' इति श्रुतिस्मृतिभ्या अज्ञाना वरणशक्तिकार्यं मोहनादिसत्ताप्रकाशादिप्रधानाधिष्ठानत्वेन उपचारात् सर्व माह्यतीत्युच्यत। अयो दहतीतिवत् ॥ ॐ सर्वविमोहिन्ये नम ॥

सर्वोधारा सर्वगता सर्वोचगुणवर्जिता। सर्वोद्यणा सर्वमाता सर्वभूषणभूषिता॥

सर्वोधारा । सर्वस्याधारा 'ब्रह्म पुच्छ प्रतिष्ठा ' इति श्रुते । सर्वेषा हृदयानि आधार अभिव्यक्तिस्थान उपासनाय यस्या सेति तथा ॥ ॐ सर्वाधाराये नम ॥

सर्वगता । सर्व गच्छतीति तथा । 'अनेन जीवेनात्म नानुप्रविदय ' इति श्रुते ॥ ॐ सर्वगतायै नम ॥

मर्वावगुणवर्जिता। अवमानहतवश्च ते गुणाश्च तथा, आध्यात्मिकसबन्धन आरोपिता सत्त्वाद्य समष्टी, अन्त करणधर्मा कामाद्य व्यष्टी, सर्वे च ते अवगुणाश्च तथा। सर्वान्तर्यामित्वेन मवानुस्यूतत्वेऽपि तत्तदुपाधिनिष्टोत्तमाधम धर्में न सबध्यत— घटादिनिष्टाकाशवत् कोशान्तर्गतखद्भव द्वा, 'सूर्यो यथा सर्वछोकम्य चश्च न छिप्यते चाश्चुपैर्वाद्य सेषे । एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न छिप्यत छोकदु खेन बाह्य 'इति श्रुते ॥ ॐ सर्वावगुणवर्जितायै नमः॥

मर्वारुणा । सर्वेष्वङ्गेष्वरुणा आरक्तवती, 'असी यस्ता स्रो अरुण 'इति श्रुते ॥ ॐ सर्वोरुणाये नम ॥

सर्वमाता। सर्वेण कार्येण मीयते अनुमीयतेऽभदनेति तथा। तथा हि— इद जगत् ब्रह्माभिष्न तत्सत्तास्फूर्तिनिय तसत्ताप्रकाशकानिवयत्वात, यन् यिष्मयतसत्ताप्रकाशवान् स तद्मिष्म — यथा तन्तुकार्य पट इति। सर्वान मिनाति स्वाभेदेन जानातीति तथा।। ॐ सर्वमात्रे नमः।।

सर्वभूषणभूषिता। सर्वात्मकत्वन ये ये प्राणिन यानि यानि भूषणाळकारभोजनादीन भाग्यवस्तून्यात्मार्थे सपा दयन्ति, तेषा सर्वेषा प्रत्यक्तया ते सर्वेभूषिता उपकृतेत्यर्थ , 'आत्मनस्तु कामाय सर्वे प्रिय भवति ' इति श्रुते । अथवा, सर्वदेवात्मकत्वेन सर्वभक्तजनस्य स्वस्वेष्टदेवताप्रीत्यर्थ भूष णभूषितत्वेन तथा। अथवा सर्वेभक्तजनै तत्तद्वयवेषु भूषणेरारापिता, स्वस्या महाराङ्गीत्वेन असगोदासीनस्व भावत्वादिति भाव । यद्वा, सवदेशकाळ्छोकेषु भूषणे तत्न तत्र भवे उच्चावचैभूषणेरारोपिता, हस्त्यश्वादिदहोपा- धिका सती तत्तदीयाळकारादिषु जुगुष्मारहितेत्यर्थ । भूष यन्ति सर्वोत्तमत्वेन प्रतिपादयन्ताति भूषणानि वेदान्तम हावाक्यानि, सर्वे समस्तै गतिसामान्यात् एकतात्पर्येण भूषिता छक्षणया पर्यवसिता समन्विता वेत्यर्थ ॥ ॐ सर्वभूषणभूषिताये नम ॥

ककारार्थी कालहन्त्री कामेशी कामितार्थदा। कामसजीवनी कल्या कठिनस्तनमण्डला ॥

ककारार्था । 'क ब्रह्म ' इति श्रुत्या ककारस्य ब्रह्मार्थक त्वेन तद्यतिरिक्तस्यातदर्थस्य बाधितत्वात् ॥ ॐ ककारा र्थीये नम ॥

कालहन्त्री । अजपारूपेण प्राणापाननामकचन्द्रसूर्यनि-यमन पुरुषाणा नियमितपरिमितायु स्वरूपैकविंशतिषट्ञ-ताधिकसहस्रमख्याकनिर्गमनरूपण क्षपयन्ति अवञेषायुषो युगकल्पाद्यविशिष्टस्य वृद्धौ पुन सयमने तथा तथा वृद्धौ सयुश्जानस्य सर्वप्राणेन्द्रियस्य वृत्तिलये मनोन्मन्यवस्था नि ष्पद्यते । तथा च श्रुति — 'पृथिव्यप्तेजोऽनिलले समुत्थिते पश्चात्मक यागगुणे प्रवृत्ते । न तस्य रोगो न जरा न मृत्यु प्राप्तस्य योगाग्निमय श्ररीरम् व इति 'अध्यात्मयागा धिगमेन देव मत्वा धीरा हर्षशोकी जहाति ' इति च। तथा च तदानीमाविभूतब्रह्मस्वरूपेण 'तत सवत्सरो ऽजायत ' इति श्रुत्या क्रियाजक्त्यात्मककाल्रोत्पत्तिश्रवणात् तिसान ब्रह्मण्येव लये काल हन्ति नाश्यतीति तथा नामनिर्वचन युक्त वक्तुमिति भाव ॥ ॐ कालहन्त्रये नम. ॥

कामेशी । कामाना भोग्यपदार्थाना यथादृष्ट ईष्टे प्रेरयतीति तथा ॥ ॐ कामेरये नम ॥

कामितार्थदा । कामितानर्थान् ददातीति तथा, 'आप्त काम ' इति श्रुते । ससारदशायामावृतानन्दस्य अनाप्तवद वभासमानस्य आत्यन्तिकसुखात्मिका मुक्तिमें स्यादिति का

म्यमानत्वादात्मन कामितत्वम्। कामितश्चामावर्थश्चेति तम्यैव झानस्यावरणाभिभावकत्वेन प्राप्तप्राप्तिरूपतया त द्दाति प्रय-च्छतीति प्रकाशस्वरूपण अनुभावयतीत्यर्थ ॥ ॐ कामि तार्थदायै नमः॥

कामसजीवनी । काम मन्मथ परमेश्वरनेत्राग्निविष्ठुष्ट भण्डासुरात्मना अनेककाळदेवळोकविपक्ष कामशास्त्रप्रयोग समये रितदेवीप्रार्थनसमीचीनतदीयपूर्वकाय तपश्चर्यादिप-रिपाकफळभूत करुणारसपूरितापाङ्गावळोकनेन सजीवयित सप्राण कृत्वा तस्मै वरादि प्रयच्छिति तेन त हर्षयतीति तथा ॥ ॐ कामसजीवन्यै नम् ॥

कल्या । कल्रयितु ध्यातु योग्या । अथवा, सर्वोत्तमदेव-त्वेन ध्यातु याग्या कल्या । कल्ले कामधेनुत्वेन यथा वा-क्लितार्थकारणम् ॥ ॐ कल्यायै नमः ॥

कठिनसानमण्डला । स्तनयो मण्डले आदिमभागौ सा-न्त प्रदेशौ कठिने अप्रकम्पे अतिस्थिरे वा यस्या तथा ॥ ॐ कठिनस्तनमण्डलायै नमः ॥

करभोरु' कलानाथमुखी कचिताम्बुदा। कटाक्षस्यन्दिकरुणा कपालिप्राणनायिका॥ करभोक । करभ इव ऊक् यस्या सा तथा। 'मिण बन्धादाकनिष्ठ करस्य करभो विह ' इति प्रमाणादिति भा व ॥ ॐ करभोरवे नमः॥

कळानाथमुखी। कळा चतु षष्टिकळा नाथयति प्रेर यतीति कळानाथ, 'निश्वसितमेतदृग्वेदो यजुर्वेद साम-वेद' इत्यादिश्रुते, 'शास्त्रयानित्वात' इति न्यायाच। ताह्शमुख वदन यस्या सेति नथा। कळानाथश्चन्द्र इव मुख यस्या सेति वा॥ ॐ कळानाथमुख्ये नम्॥

कचिताम्बुदा । कचेन कशभारेण कबरेण वेत्रर्थ । जिता अधरीकृता अम्बुदा मेघा यया मा तथा , भेघम-ण्डलापेक्षया ऊर्ध्वगामिशिरोक्हभारा व्योमकेशीति भाव । अथवा, केशवृत्तिनीलक्षभेण साहश्यासहत्वेन घिक्कृता भेघा यथा सा तथा ॥ ॐ कचिताम्बुदायै नम ॥

कटाश्वस्थान्दिकरुणा। यद्यपि दीनेषु परिपाल्यताबुद्धि-देवाना महता करुणेत्युच्यते, तथापि तस्या आन्तरत्वेन अज्ञायमानत्या तेषु भक्त्यतिशयेन प्रयुत्त्यर्थे सेवादौ तद्वता ज्ञानस्यावश्यकफळप्रदानादिहेतुत्या निश्चयेन तद्वुरूपकसा स्विकवीक्षणस्मेरसभाषणादिसत्त्व तत्रावश्य भवतीति का-र्यसत्त्वप्रसन्धितकारणसन्ववस्वात्, करुणाया नवरसेष्व- न्तर्भावात्, रसशब्दस्य मधुरादौ क्रढत्वात् तेषामनिवचनी यत्वऽपि अनुभवगोचरतायामिक्ष्वादिसारद्रव्यपदार्थनिष्ठत्वा-पल्लब्धे तत्मबन्धवशात् परपरया द्रवद्रव्यवृत्तिखन्दनक्ष्य-क्रियाश्रयत्वसुपचर्यते । तथा च कटाक्षस्यन्दिनी करुणा परिपाल्यताबुद्धिक्पा यस्या सा तथा ॥ ॐ कटाक्षस्य-न्दिकरुणाये नम् ॥

कपालिप्राणनायिका। कपालमस्य अस्तीति कपाली आन-न्द्भैरव, तम्य प्राणनायिका प्राणस्येत्युपलक्षण पञ्चानाम्। नायिका अधिष्ठानत्वेन प्रेरका। 'न प्राणेन नापानेन मर्त्यो जीवति कश्चन । इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेतानुपाश्रितौ' इति श्रुते । तस्यापि हृद्यान्तर्वर्तिपरमश्चरक्तपेति यावत्। प्राणवक्तभेति वा, प्रियेति भाव । ॐ कपालिप्राणना यिकायै नमः॥

कारुण्यविग्रहा कान्ता कान्तिधृतजपावि । कलालापा कम्बुकण्ठी करनिर्जितपञ्चवा ॥

कारण्यविष्रहा । कारण्य पूर्वोक्तकृपा, करणस्य भाव , तत् विष्रह मूर्तिर्थस्या सति तथा । कारण्यस्या-न्त करणपरिणामबुद्धिरूपत्वेन नन्नान्तवीक्षासस्मितभाषादि नानुमीयमानत्वेऽपि साक्षात्तज्ञन्यमनोवाञ्छितवरप्रदाना दीना शरीरावयवविशेषजन्यतया कारुण्य विप्रहो यस्या सेति समासोपपत्ति । मायोपाधिकस्य ब्रह्मण जगत्सृष्ट्य नुकरणहेतुभूतस्वेच्छामात्रनिमित्तककर्मानधीनसिबदान-द्घ नीभूतात्मकभक्तानुमाहकविमहवक्ता विना देवताया बुद्धा वनारोपेण सराणोपासनमनुपपद्यमान स्यात्, तद्र्थी देवताधिकरण मन्त्रप्रकाशिता देवा 'वजूहस्त पुर न्दर ' इत्यादिस्तत प्रमाणवेदवाक्यवशात् बाधकाभावे विम्रहवन्त अङ्गीकर्तव्या इति प्रतिष्ठापितम् । तथा 'बहु शोभमानामुमा हैमवतीम् ' इति केनोपनिषद्भाष्ये हैमानि हेमविकाराणि भूषणानि यस्त्रा सेति वा तथा, हिमबत अपत्य स्त्रीति च तथेति परदेवताया दिव्यविमहवत्त्व प्रति ष्ठापितम् । तथा च महानुभावाना स्वप्रकाशचैतन्यरूपाणा मेवभूताना सर्वीत्मना सर्वोत्तमाना मूर्तित्रयदेवाना ध्याना द्युपकाराय तादृशमूर्तिमत्त्वम् अस्तीति न किंचिदनीश्व रवादप्रसङ्गावकाश इति आस्ता विस्तर ॥ ॐ कारु ण्यविग्रहायै नम् ॥

कान्ता । 'कन दीप्ती' इति धातो अत्यन्तमनोहरतमे त्यर्थ । मदनगोपालवित्रहा वा । 'कदाचिदाद्या लिलता पु रूपा कृष्णवित्रहा । वशनादिवनोदेन करोति विवश जगत्'

इति त्रिपुरतापनीये ॥ ॐ कान्ताये नमः ॥

कान्तिधूतजपावि । जपाना जपापुष्पाणाम् , उपलक्षणम् अन्येषामारक्तवर्णानाम् , आवि अपिक्कः दृष्टान्तत्वेन किविभि क्त्येक्षिता । कान्त्या अप्राक्तस्वच्छपरमानन्दिमद्भासा धूता परित्यक्ता प्राक्तत्वेन अल्पकान्तिमक्तया उपमायोग्यतया यया सा , 'न हि महान्तो नीचैक्पमीयन्ते ' इति न्याया दिति भाव ॥ ॐ कान्तिधृतजपावल्यै नम ॥

कळाळापा। कळा चतु पष्टिकळा आळापो व्यावहा-रिकशब्द यस्या सा तथा, 'वेदशास्त्रमयी वाणी यसा सा परदेवता' इति वचनात्। कळ अव्यक्तमधुर सप्रयो जन आळाप सळापो यस्या सेति वा तथा, 'अव्यक्ता भारती तथा' इति महापुरुषसामुद्रिकवचनात्।। ॐ फळाळापाये नमः।।

कम्बुकण्ठी । कम्बुशब्दन अत्र शङ्क्षानिष्ठरेखात्रय छक्ष्य ते । तद्वानकण्ठो यस्या सेति तथा गुणनामेदम् ।। ॐ कम्बुकण्ठ्ये नम् ।।

करनिर्जितपहाना । करशब्देन करतल लक्ष्यते । पहा वशब्देन तिम्रिष्ठपाटल्य क्षिग्धता लक्षणया इत्यर्थ । तथा च अन्य।न्यगुणयोर्जयपराजये, अर्थात्तद्वतोरिप तौ सिद्धावि-ति तन्नामोपपत्ति । 'विवाहश्च विवादश्च समयोरेव शोभते' इति वचनात् करतल तत्साम्यध्वनिरनेन नान्ना कृत । करेण निर्जिता पह्नवा यस्या सा तथा॥ ॐ करनिर्जित पह्नवाये नम ॥

कल्पवल्लीसमसुजा कस्तूरीतिलकाश्चिता। हकाराथी इसगतिहीटकाभरणोज्ज्वला॥

कल्पविद्यासम्भुजा। यथा दिव्यवृक्षा नन्दनोद्याने प्र सिद्धा तथा तदलकाराय वल्ल्याद्योऽपि कल्पयन्ति सपा दयन्तीति कल्पा , कल्पाश्च ता वल्ल्यश्च व्रतस्य , ताभि समा भुजा हस्ता यस्या सा तथा। कविसप्रदायप्राध्या स्त्रीभुजाना विद्यास्योक्तिरिति मन्तव्यम्। अत्र समपद् स्वारस्येन तेषामपि तद्वचिछन्नचैतन्यद्वारा यथाप्रारब्ध चे तनविद्योक्षवाञ्छितफलकतृत्वमिति ध्वनितम् । 'एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूप रूप प्रतिरूपो बहिश्च' इति श्रुते , 'तत्तद्वावगच्छ त्व मम तेजोंशसभवम्' इति स्मृती च भगवता स्वकीयसिद्यानन्दस्वरूपावस्थितिरेवोक्ता। अत एव परदेवीभुजाना नैव साम्योक्तिरिति शङ्का निरस्ता वेदि तन्या, औपाधिकचैतन्येन तथाभूतचैतन्यस्य साम्योपपत्ते ॥ ॐ कल्पवछीसमभुजायै नम ॥

कस्तूरीतिलकाश्चिता । कस्तूरीतिलकेन ललाटदेशसस्था पितिबन्द्वाकारमृगनाभिना अश्चिता चिह्निता अलक्षतेत्यर्थ ॥ अकस्तूरीतिलकाश्चितायै नमः ॥

हकाराथी। हकारस्य आकाशबीजस्य अथी, अर्थ स्व रूपचैतन्यम् आकाशविप्रहेट्यर्थ, 'आकाशो ह वै नाम ना मरूपयोर्निवंहिता ते यदन्तरा तद्वह्य' इति श्रुते ॥ ॐ हकाराथीयै नम ॥

हसगित । हिन्त गच्छतीति हस प्राण आदियो वा । हसस्य प्राणस्य गित गमनागमन छक्षण्या तज्जाप्याजपा मन्द्रकृषा यस्या सा तथा, 'हकारेण बिहर्याति सकारेण पुनर्विशेत्' इति वचनात् । यद्वा, तद्दिममानिदेवताकृषा प्रीषोमात्मकसूर्यचन्द्रगती अहोरात्रात्मककाछस्वकृषाया य स्या सा । अथवा, हिन्त देहाहेहान्तर गच्छति स्वक भैवशेनेति हसा जीव , तस्य गित प्राप्यस्थान मुक्ति रित्यर्थ , 'ब्रह्मविदाप्नोति परम्' 'यद्गत्वा न निवर्तन्ते' इति श्रुतिस्मृतिवचनात् । अथवा हिन्त स्वकार्यभूत जगत्प्रविश्वतीति हस । 'हसस्तु परमेश्वर ' इति नृसिंहता पनीये। गम्यते प्राप्यते शरणत्वेन प्रपद्यते चतुर्विधमकैरि
ति गिति । इसश्चासौ गितिश्चेति सामानाधिकरण्यसमास ,
'इण्स श्चिषत्' इति श्रुते । आहोस्तित्, इसस्य ब्रह्मवाह्
तस्य गितिरिव गमन यस्या सा तथा । उताहो, इसशब्देन
नामैकदेशेन इसक पाद्कटकमुच्यते, गम्यते अनेनेति
गिति चरणम्, इसयुक्ते गिती पादारिवन्दे यस्या सा
तथा। यद्वा, इसशब्देन नित्यानित्यसारासारजङाजङादिव
स्तुविवेकसमर्था , इन्ति गच्छिन्ति प्रतिप्राम प्रतिदेशम्
इति इसा परिव्राजका चतुर्थाश्रमिण निष्कामा , तेषा
गित गम्यते झायते साक्षात्क्रियत इति गिति , 'सन्यासयो
गाद्यत्य शुद्धसत्वा ' इति श्रुते । 'ये पूर्व देवा ऋषयश्च
तद्विद्व ते तन्मया अमृता वै बभूतु ' इति श्रुते । जीवन्मु
कपुरुषानुभूयमानपरमानन्दमुक्तिस्वकृपेत्यथ ॥ ॐ इस
गत्यै नम् ॥

हाटकाभरणोज्ज्वला । हाटकस्य सुवर्णस्य कार्याणि च तानि आभरणानि च हाटकाभरणानि तैरुज्ज्वला तथा, प्रकाशिता अलकृतेल्य्य । हाटकस्य सुवर्णक्षपत्रह्माण्डस्य आभरणवदुष्ण्वला प्रकाशकरी सत्तास्फूर्तिकरील्य्यं । यद्वा, तस्मित्राभरणे मङ्गलस्त्रादिभि सनाथस्त्रीमण्डलस्क्ष्पेष ज्ज्वस्रतीति । आहोस्वित्, कार्यकारणद्वयरूपवसुदानेन वसु स्वरूपेण वा उज्ज्वस्रति प्रकाशत इति तथा, 'वसुरन्तरिक्ष सत्' इति श्रुते ॥ ॐ हाटकाभरणोज्ज्वस्रायै नम ॥

हारहारिकुचामोगा हाकिनी हल्यवर्जिता। हरित्पतिसमाराध्या हठात्कारहतासुरा॥

हारहारिकुचाभोगा। हरस्य परमेश्वरस्य इमे सबिन्धिन
हारा ईश्वरत्वाप्तकामत्विन्यन्त्रप्तत्वादयो गुणा, तान् हरित
तिद्वपरीताविद्याद्याधानेन उत्सादयतीति हारहारी, कु
चयोराभोग पर्यन्तभूमि यस्या सा तथा। परमेश्वरस्य
तिद्वषयकवाञ्च्या तदेकसक्तमनस्त्वेन तत्कारणीभूताविद्या
वश्वृत्तित्वेन वशीकृतमायत्वस्वरूपेश्वरत्वसमानाधिकरणा
प्रकामत्वादय अपहृता, जीवेश्वरयोरेकत्र तेषा तद्गुणाना च सामानाधिकरण्यायोगादिद्यर्थ। तथा च ईश्वरस्य
सिद्यस्यमित्यन्यत्र पदार्थे बुद्धिमत्त्वस्यैव बहुभवनक्त्पत
या तस्य जगदाकारत्वाधायका—इत्यधिकगुणोत्प्रेक्षाविषयत्वेन
भोगस्यातिश्योक्तिरिति द्रष्टन्यम्। अथवा, हारान् मुक्तास्त्र
ज हरित आदत्ते इति हारहारी कुचाभोगो यस्या सेति
तथा षद्प्रकारेण मुक्ताहारेण यथोचितकान्न भूषितवतीति
भाव ॥ ॐ हारहारिकुचाभोगायै नमः।।

हाकिनी । हाकयित जन्ममरणयो छेदयतीति हा किनी, 'हाक् च्छेदे' इति धातुपाठात् ॥ ॐ हाकिन्यै नम ॥

हस्यवर्जिता । हलसविष्ध हस्य कृष्यादिद्वारा जनक त्वम , तद्वर्जिता, कामादिविहीनशुद्धचैतन्यस्वरूपत्वात् । हस्य कपट मित्रेष्वप्यन्यथा स्वान्त करणाविष्कृति तेन व जिता । अविद्याविरहिततत्त्वपदलक्ष्यार्थभूतत्वादिति यावत् ॥ ॐ हस्यवर्जितायै नम ॥

हरित्पतिसमाराध्या । हरिता दिशा पतय महेन्द्रादय , तै सम्यक् श्रद्धाभिक्तपूर्वकम् आराधितु योग्या । तद्विपक्ष निवर्द्दणनेष्ठप्रापकदैवतत्वादित्यभिस्रिध ॥ ॐ हरित्पतिस माराध्यायै नम ॥

हठात्कारहतासुरा । हठात्कारेण अतिशीव्रतया हता पराभूता असुरा असुरपक्षा महिषादयो यया सा तथा, समबलयो किल लोके सामाग्रुपाय बलाबलिबचारणा च भवति । प्रबलस्य तु दुर्बलेषु वैरिषु सिंहस्य मेषेष्विव तद्योगेन अतित्वरयाविचारेणैव देवलोकसुखप्रदा—इति ना मार्थविचारणायामितरेषु कैमुतिकन्यायेन तत्कारणत्व ध्व नितमिति योजनीयम् ॥ ॐ हठात्कारहतासुराये नम् ॥

हर्षप्रदा हविभीक्त्री हार्दसतमसापहा। हल्लीसलास्यसतुष्टा हसमन्त्रार्थेरूपिणी॥

हर्षप्रदा। हर्ष आनन्दकारक मुखनिकासादिकार्योन्नेय स्वात्मसभावनेतरपरिभवनिमित्तचित्तवृत्तिविशेष, कार्यस्य कारणाविनाभावितया तत्प्रदान तद्धेतारप्याक्षिपतीति सुख-प्रदेखर्थ। प्रददातीति प्रदा। अथवा, हर्ष धनयौवनादि सुख पुत्रबन्धुवर्गादिक्ष्पेण परिहृत्य प्रकर्षेण द्यति खण्ड यतीति वा तथा॥ ॐ हर्षप्रदाये नम् ॥

हिनर्भोक्त्री। 'स ब्रह्मा स शिव स हरि सेन्द्र सो ऽक्षर परम स्वराट्' इति श्रुते वसुरुद्रादित्याकारेण हवीं षि यजमानेन अग्नी प्रक्षिप्तानि स्वाहासुखेन सुङ्क इति तथा। यद्वा हवीं षि काळान्तरभाविफळानि अदृष्टात्मना सृक्ष्मक्ष्मणीण तत्त्र खजमानजीवगतानि भूतसूक्ष्माभिषानानि समष्टि व्यष्ट्यात्मनेश्वरजीवोपाधिसूतानि मायाविद्याशब्दितानि सु किपर्यन्त सुनक्ति पाळ्यतीति वा तथा। अन्यथा ससा रस्यानादित्वाभावेन आदिमश्वरीराद्युत्पत्ती अङ्गीक्रियमाणा याम् प्रपश्चस्याकस्थिकत्वमकृताभ्यागमप्रसङ्गश्च स्यादिति भाव।। उर्वे हिमोंक्ष्ये नम ॥

हार्दसतमसापहा। हृद्याविच्छन्न हार्दे, 'यो वेद नि हित गुहायाम्' इति श्रुते । अस्मिन् यत्सतमस आवारक त्वात् 'तम आसीत्' इति श्रुत्या च आत्मिवषयक तदाश्रय मज्ञानम् अनर्थकरम् अव्याकृताकाशिमत्युच्यते, महावाक्य श्रवणजन्यधीषृत्तिप्रतिफिल्लिताकारेणापहन्तीति सा तथा । नाह ब्रह्मास्मि ससारी ब्रह्म नास्ति न भाति च-इत्यज्ञानस्य सोऽह ब्रह्मास्मि सिचदानन्दलक्षण — इति एकाकारवृत्तिबा ध्यत्वनियमेन बाधाधिष्ठानम् 'नेह नाना' इति श्रुतिसिद्ध ब्रह्मरूपेति यावत् ॥ ॐ हार्दसतमसापहायै नमः ॥

हस्रीसलास्यसतुष्टा । हस्रीसै चित्रदण्डे स्नुमारिकाभि एकतालादियुक्तगीतपूर्वक यहास्य नर्तन तस्मिन् सतुष्टा प्रीतिमतीत्यर्थ । 'नारीणा मण्डलीनृत्य बुधा हस्रीसक विदु ' इति हारावलीकोजात् मण्डलाकारनृत्यसतुष्टेत्यर्थ ॥ ॐ हस्लीसलास्यसतुष्टायै नमः॥

हसमन्त्रार्थरूपिणी। हसै परमहसै उपाम्यो यो मन्त्र प्रणव तस्य शास्त्रबोधिततत्त्वाथरूपिणी। वाक्यलक्ष्म्यार्थस्य रूपेण ज्ञायमानेत्यथ । अथवा, इसमन्त्र अजपा। हकार सकारौ शोधिततत्त्वपदार्थी, हकारस्य परोक्षवाचिन सकार-स्य ताहशस्य च भागत्यागलक्षणया निष्प्रपञ्चनित्यशुद्धमु क्तबुद्धसिदानन्दस्वरूपेत्यर्थ ॥ ॐ हसमन्त्रार्थरूपिण्ये नमः॥

हानोपादाननिर्मुक्ता हर्षिणी हरिसोदरी। हाहाहृहुमुखस्तुत्या हानिवृद्धिविवर्जिता॥

हानोपादानिर्मुक्ता । अनिष्ठसाधने हान परित्यागिकि-या । इष्टसाधने उपादान स्वीकारिक्रया । परिजिहीर्षा आदित्सा वा । 'अप्राणो ह्यमना श्रुश्च ' 'अकायम्' 'अ श्वरीर वाव सन्त न प्रियाप्रिये स्पृशत ' इति बहुश्चते अश्वरीरस्य ब्रह्मणोऽन्त करणादिधमीणामसभवात् ताभ्या निर्मुक्ता नि सङ्गेत्यर्थ , 'विमुक्तश्च विमुन्यते ' इति श्रुते ॥ ॐ हानोपादानिर्मुक्तायै नम' ॥

हर्षिणी । 'एष ह्येवानन्दयाति ' इति श्रुते हर्षयति सतोषयतीति तथा ॥ ॐ हृषिण्ये नम• ॥

हरिसोदरी। हरिणा कृष्णेन समान एक उदरम् उत् ईषत् भर भेदक अवच्छेदकमित्यर्थ । उचैरर कूटो वा अत्यल्पिम ध्याभूतमायोपाधिकचैतन्यावस्थाविशेषरूपा । 'अपरेयिम तस्त्वन्या प्रकृतिं विद्धि मे पराम् । जीवभूता महाबाहो ययेद धार्यते जगत्' 'देवात्मशक्तिं स्वगुणैर्निगृहाम' इत्या दिस्मृतिश्रुतिभ्याम् ईश्वरस्य रूपभेदवत्त्वावगमादिति मन्त व्यम् ॥ ॐ हरिसोदयैं नम ॥

हाहाहू हु मुखस्तु त्या । हाहाहू हू नामकगन्धर्वे मुख्यो येषा जनाना तैस्तथा । स्तुत्या गुणिनिष्ठगुणाभिधान स्तुति । तदाश्रयत्वेन प्रतिपादनीयेत्यर्थ ॥ ॐ हाहाहू हु मुखस्तु त्यायै नम ॥

हानिवृद्धिविवर्जिता। अवयवोपचयरूपा वृद्धि, तद्दप चयरूपा हानि, ताभ्या वर्जिता, 'न कर्मणा वर्धते नो कनीयान्' इति श्रुते। उपलक्षणम्, षड्भावविकाराणा शरीरधर्मत्वेन कर्मनिमित्तत्वादीश्वरे तद्दभावेन निर्विकारे-सर्थ।। ॐ हानिद्यद्धिविवर्जिताये नमः।।

हय्यङ्गवीनहृद्या हरिगोपारुणाशुका। लकाराख्या लतापूज्या लयस्थित्युद्भवेश्वरी॥

ह्य्यङ्गवीनहृद्या । ह्य्यङ्गवीनवत् नवनीतसहृशविरलं मृद्ववयवपरिणामद्रवत्वसाहृश्ययोगिहृद्यकृपारस्रूपपरिणा मवतीति सा तथा। हृद्याभावेऽपि सर्वोत्मकतया तद्वस्वम् । ईक्षणादिवन्मायापरिणामकृपा द्या वा हृद्यशब्देन उन्यते । 'अवागमना ' इति श्रुत्या सर्वनिषेधात् ॥ ॐ हृश्यङ्गवी नहृद्याये नमः ॥

हरिगोपारुणाशुका। हरिगोप इन्द्रगोप आर्द्रामघा-नक्षत्रे वर्षासुद्भवा अष्ट्रपादा रक्तवर्णा मृद्धक्का कीटवि-शेषा , तथा शोणमशुक अम्बरम् , स्वार्थे कप्रत्यय , किरणानि वा यस्या सा तथा । ॐ हरिगोपारुणांशु-कायै नम ॥

लकाराख्या। लकारयुक्त मूलमनत्र आख्या वाचक शब्द यस्या सा तथा। लकारस्य शक्रवीजस्य वार्थ, 'सेन्द्र' इति श्रुते। लकारयुक्तस्य मायाबीजस्य वा स्त-स्थमायेत्पर्थ।। ॐ लकाराख्यायै नम्।।

ळतापूज्या। ळवन्ति विनमन्ति असन्तनम् भवन्तीति ळता परमपतित्रता अक्षन्धत्याद्य स्त्रिय , ताभि स्थिरमा क्षल्याय स्वेष्टदेवतात्वेन पूज्या पूजनीया। तदुक्तम्— 'समा राध्य महेशानीं मुक्तिं मुक्तिं च विन्दति' इति । अथवा, केदारादिगौरीविशेषमूर्तौ ळताभि उपलक्षण वन्यपूजोपकरणै पूज्या अलकृता। शबरी वा वनदुर्गो वेति भाव ॥ ॐ ळतापूज्यायै नमः ॥

लयस्थित्युद्भवेश्वरी । वैपरीत्येन विशेषण योज्यम् । उद्भ-वतीत्युद्भव कार्योत्मना अभिन्याक्ति । स्थिति ज्ञानविषय तायोग्यकालावच्छेद अनुभवसत्तावत्त्वभिति यावत् । लय

उत्पन्नकार्यस्य कारणात्मना अवस्थिति वाचारम्भणयोग्यते त्यर्थे । तासा क्रियाणाम् अचेतनकार्यत्वायोगेन घटादिकार्ये चेतनस्य निमित्ततादर्शनात् एकतटस्थेश्वरत्व वा, गोपुरादौ नानाचेतनवृश्चीनात्तादृश्चनानेश्वरत्व वेति विशये, 'यतो वा इ मानि भूतानि जायन्ते 'इति श्रुतौ ' यत 'इत्येकवचनपञ्च म्या नानात्वतटस्थत्वे , 'जनिकर्तुं प्रकृति ' इति सूत्रम् । जनि-कर्तुं कार्यस्य प्रकृतिरुपादानमपादानसज्ञा स्यात्। 'अपादाने पञ्चमी ' इति शासनात् अभिन्ननिमित्तोपादनत्वमीश्वरत्वमिति सिद्धान्त । तटस्थलक्षणमेतत्, ज्ञायमानस्य ब्रह्मण लक्षण प्रमाणयो अवश्यवाच्यत्वादित्यभिप्राय । आदौ लयशब्दो पादानेन अनादित्व प्रपश्चस्य सूचितम् । जगत इति शब्द पूरणन नाम योजनीयम् । तथा च जगत छयश्च स्थितिश्च उद्भवश्च तेषामीश्वरी । कूटस्थचैतन्यमात्रसिचदाननदाधायक तया विवर्तकारणमित्यर्थ ॥ ॐ लयस्थित्युद्भवेश्वर्ये नमः ॥

लास्यद्र्ञीनसतुष्टा लाभालाभाविवर्जिता । लब्घ्येतराज्ञा लावण्यशालिनी लघुसिद्धिदा ॥

लास्यद्र्शनसतुष्टा । यथा राजा सपूर्णकाम प्रयोजनम

नुद्दिश्यापि मृगयादिळीळाविशेषान् पश्यति बाळकादिनृत्य वा, तथा अज्ञानाम् इष्टानिष्टमिश्रोदासीनपदार्थचनुष्टयानु-भवजन्यहर्षशोकादिसभवन्मदोद्रेकशोकातिरेकहेनुकविहिता दिकरणाकरणरूपचरणाद्यङ्गपरिस्पन्दरूपनानाविधप्राणिकाय निकायजन्यळास्यदर्शनेन अनुद्दिश्यापि प्रयोजन सनुष्टा त त्तत्कर्मानुसारेण फळप्रापकेश्वरतया सर्वसमानत्वात्, 'नाद्द-ते कस्यचित्पाप न चैव सुकृत विसु ' इति भगवद्वचनात्। छास्य दवतादिवारवनितादिभि कियमाण ताळगीतयुक्त नृत्य तद्दर्शनेन सनुष्टा। तदीयफळप्रदानोन्मुखकुपारसवती त्यर्थ ॥ ॐ लास्यदर्शनसनुष्टाये नमः॥

लाभालाभविवर्जिता। अत्राप्तत्राप्तिर्लोभ , कृतेऽपि यहे तद्प्राप्तिरलाभ , ताभ्या विवर्जिता, पर्याप्तकामत्वेन नित्यत् प्रत्यात्, 'न मे पार्थास्ति कर्तव्य त्रिषु लोकेषु किंचन' इति भगवद्वचनात्॥ ॐ लाभालाभविवर्जिताये नम ॥

लक्ष्येतराज्ञा। इतरेषा जीवभ्रान्तिकत्पिताना गुणमूर्त्या दीनाम् उपासनाविधिक्षपा वा, कर्मविधिक्षपा वा आज्ञा प्रेरणा लक्ष्या अविषयीकृता यया सा तथा। ग्रुद्धचैतन्यस्य विश्वि ष्टक्रियाद्यात्मकत्वाभावेन विश्यविषयत्वादिति यावत्। अथ वा, किंकरीत्वाभावेन इतरेषा देवतानाम् आज्ञा प्रेरणा लक्ष्या उपेक्षणीया यया सा तथा, 'सर्वस्याधिपति सर्वस्येशान ' इति श्रुते । ईश्वरस्य सर्वनियन्तृत्वेन स्वेतरानियम्यत्वादिति ज्ञातन्यम् ॥ ॐ लङ्क्ष्टयेतराज्ञायै नम् ॥

लावण्यशालिनी । लावण्य मौन्द्यी परमानन्दस्वरूपतया अतिशयप्रीतिविषयत्व शालत इति तथा । सर्वावयवसाधा-रणसु दरभाववतीति वा ॥ ॐ लावण्यशालिन्यै नमः ॥

लघुसिद्धिदा। लघुना उपायेन सिद्धि वाञ्लितार्थप्राप्तिं ददातीति तथा, लघुशब्द लक्षणया लघिमासिद्धिपर । तथा च लघिमाद्यष्टेश्वर्थप्रदेति वा। अथवा, लघूना अत्य नतालपद्मानभाग्यशरीरक्रपचरणवतामप्यतिनिकृष्टाना तिर्यगादीनामपि सिद्धि मुक्तियोग्यताहेतुद्मानादिसाधनसपित्तं तत्कार्थमिद्दिमातिशयोन्नेया ददातीति सा तथा ॥ ॐ लघु-सिद्धिदायै नमः ॥

लाक्षारससवर्णाभा लक्ष्मणाग्रजपूजिता। लभ्येतरा लब्धभक्तिसुलभा लाङ्गलायुधा॥

लाक्षारससवर्णामा । लाक्षारसेन लाक्षाद्रवेण समानो वर्णो यस्या मा तथाभूता शोभा कान्तिर्यस्या सा तथा । अतिपाटलविम्रहप्रभेत्यर्थ ॥ ॐ लाक्षारससवर्णा भाये नम ॥ लक्ष्मणामजपूजिता । अग्रे जायेते इत्यम्रजौ रामभरतौ लक्ष्मणस्यापि ज्येष्ठभूतरामाचारानुकारित्वेन चतुर्भिरपि दा-शरिथिम पूजितेत्यर्थ । रामस्य शिवलिङ्गप्रतिष्ठाता— इति नामवत्त्वान्यथानुपपत्त्या शिवदपतिपूजकत्वेन तदितरेषा तद्व-शस्त्रीपुरुषाणा तिसद्धिरिति ध्वनितोऽर्थ ॥ ॐ लक्ष्मणाग्र-जपूजिताये नम ॥

छभ्येतरा । लभ्यानि छब्धव्यानि कर्मीपासनाविशेषाणा फळत्वेन साध्यानि भव्यानीत्यर्थ । तेभ्य इतरा विलक्षणा । 'तत्सत्य स आत्मा' 'नित्यो नित्याना चेतनश्चेतनानामेको बहूना यो विद्धाति कामान् । तमात्मस्थम् ' इति 'यत्साक्षाद परोक्षाद्वद्धा' इत्यादिभि श्रुतिभि आत्मन नित्यप्राप्तस्वरूप त्वेन प्राप्तप्राप्तव्यक्षपत्या मोक्षक्षपत्वेन चतुर्विधिक्रयाफलत्वा-भावादिति मन्तव्यम् । अथवा, इत्तराणि धर्मार्थकामक्षपत्रि-वर्गक्षपाणि फलानि छब्धव्यानि प्राप्तव्यानि यस्या सका शादिति सा तथा, उक्तश्चते ॥ ॐ छभ्येतरायै नम ॥

ळब्धमित्तसुलमा । भक्ति सामान्यविशेषाकारेण द्वि विधा । तत्राद्या आर्तेजिङ्गास्त्रशीर्थिभि यैर्छेब्धा तत्तत्फलो देशेन समयविशेषे विच्छिद्य विच्छिद्य प्राप्ता तेषा सुलमा तत्तत्प्रारब्धानुसारेण फलदानोन्मुलस्वात्मरूपतया सनिहित

त्वात् । द्वितीया भक्तिस्तु ब्रह्मसाक्षात्कारवता पुरुषेण येनैकभ क्तितया लब्धा. 'एकभक्तिविशिष्यते' इति स्मृते . तस्य स लभा, खात्मरूपतया सदा ज्ञायमानत्वात् । 'ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ' इति गीतासु । अथवा, लब्धा प्राप्ता सत्यपि कण्ठ गतचामीकरवत् लब्धभक्तीना सुलभा सुखनानायासेन कष्टेन विना साध्यतया लाभ प्राप्तिर्यस्या सा तथा, 'भक्ला मामभिजानाति ' इति स्मृते ॥ ॐ लब्धभक्तिसलभायै नमः ॥

लाङ्गलायुधा । शेषरूपतया हलायुधेत्यर्थ , 'अनन्त श्चास्मि नागानाम् ' इति श्रीभगवद्वचनात् ॥ ॐ लाइलाय धायै नमः ॥

लग्नचामरहस्तश्रीशारदापरिवीजिता । लजापदसमाराध्या लपटा लक्कलेश्वरी ॥

लप्नचामरहस्तश्रीशारदापरिवीजिता । लग्नै करसबद्धौ धतावित्यर्थ, लग्नौ चामरौ ययोस्तौ ताहशौ हस्तौ ययोस्ते श्रीश्च महालक्ष्मी शारदा च ते ताभ्या वीजिता परिवी जिता। अनादिकाळादारभ्य परिचर्यया वीज्यमानेलर्थ ॥ 🕉 लग्नचामरहस्तश्रीशारदापरिवीजितायै नमः ।।

ळजापदसमाराध्या। ळजानाम अन्त करणधर्म जुगु प्साहेतु गृह्रनसाधनम्, उपलक्षण मनोधर्माणाम्, तस्य पदम् आश्रय , 'काम सकल्पा विचिकित्सा श्रद्धाश्रद्धा वृतिरधृ तिर्ह्वीर्धीर्मीरित्येतत्सर्व मन एव' इति श्रुत । तिस्मन समा राध्या चिन्तनीयेत्यर्थ 'य आत्मिन तिष्ठश्नन्तरो यमयति' 'गुहाहित गह्नरेष्ठ पुराणम्' 'तमात्मस्थ येऽनुपद्मिनत् धीरा ' इत्यादिश्रुतिभ्य । अथवा, लज्जापद जीवचक्रम् , तिस्मन् तदिष्ठिष्ठानानन्दाभिन्यक्तिहेतुत्या बहिर्यागक्रमेण पू जनीयेत्यर्थ ॥ ॐ लज्जापदसमाराध्याये नमः ॥

लपटा। लिमिति पृथ्वीवाचकवीजेन तदुपलक्षित जगल क्ष्यते, पटशब्दन आवारकत्वधर्मवत्तया भविद्या लक्ष्यते, लम जगत पट कारणीभूता भविद्या यस्या सा तथा, 'मायिन तु महेश्वरम्' 'य एको जालवान' इति श्रुते। 'अज्ञानेनावृत ज्ञानम्' इति स्मृतेश्च। अथवा, लम्पटो नाम तन्द्री आलस्यम्, कर्मोपासनाबाहुल्येऽपि प्रतिबन्धकभूयस्त्वे शीव्रतया परमेश्वरस्य फलदानोन्मुखताया राजादिविच्चर-विलिम्बतसेवाफलदानवैमुख्ये तद्वतोपचारात्, लम्पटो यस्या सा तथा। अथवा, लम्पटादीनामन्त करणधर्माणामध्यास-वशेन तद्वविच्लिन्ने वैतन्ये सत्त्वरजस्तम कार्याणामुपल्ब्धे

स्तद्वस्य वा ॥ ॐ लपटायै नमः ॥

छक्कुछेश्वरी । कु पृथिन्युपलिक्षतनगत् लीयते अस्मि निति कुलम्, मायोपाधिकचैतन्यम्, प्रलयाधिष्ठानम् । 'यत्प्रयन्त्यभिमविद्यन्ति' इति श्रुते । लीयमान कुल लकुल निरुपाधिकमित्यर्थ । तच सा ईश्वरी च सा तथा । अथवा, लकुल स्थानविद्येष स्वाधिष्ठान मणिपूरक वा, तस्येश्वरी, विष्णुकद्रात्मिकेत्यथ , मूतसृष्टिश्रुतौ पृथिन्या उदके तस्य तेजिम तस्य परमात्मिन लयश्रवणात् । 'सदायतना सत्प्र तिष्ठा ' इति । तस्येश्वरी विभृतिविद्योषो वा ॥ ॐ लकुले श्वरीं नम्। ॥

लब्धमाना लब्धरसा लब्धसपत्समुन्नति । हींकारिणीच हींकारी हींमध्या हींदिशलामाणि ॥

लब्धमाना। सर्वे प्राणिभि लब्ध मान अध्यस्ताहका र , आभमानात्मकस्तद्वदृद्दकार प्रकीर्त्यते दित स्मरणात्। अध्यासेनाहकाराधिष्ठानेत्यथ । अथवा, भान पूजायाम् दिति स्मरणात् यैथे प्राणिभि विद्यैश्वयेकुल्सौन्दयातिशयादि वशात् पूजा लभ्यते सुखहेतु सा तदन्तर्यामिणा पूर्वमेव लब्धा, पूजादिजन्योपकारस्य सुखादे स्वस्वस्पतया लब्ध- त्वात् । यद्वा मान परिमाण अणुमहद्दीघह्नस्वभेदेन प्रसि द्ध । 'म वा एष महानज आत्मा महान प्रभुवै पुरुष ' 'अणोरणीयान् महता महीयान् ' इत्यादिवेदवाक्यैजेळसूर्या दिवदुपाधिधर्माणामुपहिते गजस्तम्भमत्कुणसर्पादी प्रतीयमा नत्वात्, ळब्ध मान परिमाण उपहितत्या जगत यया सा तथा ॥ ॐ ळब्धमानायै नम ॥

लब्धरसा। 'रसो वै स ' इति श्रुते रसवत् रस्यते सबध्यत इति अत्यन्तप्रीतिविषय आनन्द, स स्वस्वरूप त्वन लब्धो यया सा तथा। शृङ्कारग्सो वा, तद्याज्ञकम क्रलाभरणपुष्पालकारवत्त्वादिति भाव। शुद्धसत्त्वप्रधान-मायोपाधिकतया, 'रखा स्त्रिग्धा स्थिरा हृद्या आहारा सात्त्विकप्रिया ' इति गीतावचनात् नैवेद्यादौ कट्वाम्लल्व णादीना देवादिविषये निषेधा प्रीतिविषयत्वेन मधुररसो लब्धो ययेति वा तथा।। अ लब्धरसायै नम् ॥

छन्धसपत्समुत्रति । छन्धा स्वस्वरूपतया स्वत सि द्धा या सपद सत्यकामत्वादय सिचदानन्दादयो वा ताभि समुन्नति सर्वोत्कृष्टता यस्या सेति तथा। ब्रह्मण मायामात्रापाधिना अभिन्यज्यमाना गुणा कर्मानुद्भृतत्वा दनाकस्मिका सन्त सर्वोत्कृष्टभाव ब्रह्मण ज्ञापयन्ति। 'तमीश्वराणा परम महेश्वर त देवताना परम च दैवत। पतिं पतीना परम पुरस्ताद्विदाम देव मुवनेशमीड्यम् 'सत्यकाम सत्यसकल्प ' 'एष सर्वेश्वर एष सर्वेज्ञ एषो Sन्तर्याम्येष योनि सर्वस्य 'इति ' गतिर्भर्ता प्रमु साक्षी ' इत्यादिश्रुतिस्मृतिशतेभ्य 'एष नित्यो महिमा ब्राह्मणस्य' इति प्रसिद्धनित्योत्कर्षवत्व ब्रह्मस्वरूपमेवेति नात्र विचारणीय किंचिद्स्तीस्रभिप्राय ॥ ॐ लड्धसपत्समुन्नत्यै नमः ॥

हींकारिणी । हींकार हितीयखण्डसमाप्यवयवतया वा च्यवाचकसबन्धन अस्या अस्तीति तथा ॥ ॐ ह्रींका रिण्ये नम ॥

हींकाराद्या। अस हींकारशब्देन तत्कार्यभूता वेदा, तेषामप्यर्थतया कारणतया वा आद्या आदी भवा पूर्वभा वीत्यर्थ । शब्दस्य अर्थविषयत्वेन प्रवृत्ते शक्तिप्रहादौ काव्यादिकृतौ च अर्थज्ञानपूर्वकज्ञाब्दप्रयोगदर्शनादर्थस्य पूर्व भावित्वमुक्तमिति भाव ॥ ॐ हींकाराद्याये नमः ॥

हींमध्या । अस्य बीजस्य जगद्भिन्ननिमित्तोपादानभूत मायाविशिष्टचैतन्यवाचकतया तत्प्रतीकत्वेन तन्निष्ठयावद्भुण वस्व तद्भुपासनातिशयमहिम्नाभिव्यक्यते । अन्यथा मन्त्रपुर श्रयोखिष्टिसिद्धयभावप्रसङ्ग स्यात्। अन्यविहतपूर्वनामान-भिन्यक्तस्वरूपस्यापि शन्दनालस्य एतद्वीजमात्रात्मनैवाङ्क-रितबीजार्थवत्त्वया पूर्वभावित्वमुक्तम् । इदानीमभिन्यका त्मकस्वार्थकत्त्वया विवर्तवादमाश्रिस्य वाचारम्भणाकारेण ना मरूपद्धयवत्त्वमुच्यते। इींकारबीजार्थ तेन शन्देन लक्ष्यते। मध्ये व्यवहारकाले झीं यस्या सा तथा। घटादिषु वस्तुषु सिचदानन्दप्रतीत्या व्यवहारकालेऽपि प्रपश्चकारण ब्रह्मानु-स्यूतत्वया भासमान जगत्कारणमिति सिद्धान्त । अनेनाचे-तनपरिणामारम्भादिवादा निष्प्रमाणत्या युक्त्याद्याभासक त्वेन निरक्ता वेदितव्या ॥ ॐ हींमध्यायै नम् ॥

ह्रीशिखामणि । लाके यथा चूढामणि सर्वाङ्गरिचता भरणापश्चया तद्विजातीयप्रकाशसत्ताद्याश्रयवान् उत्तमाङ्ग-स्थानिकोषे स्थापित महदैश्वयोदि तद्वत पुरुषस्य ङ्गाप यित, तथा सर्वशब्दजालतद्वाच्यार्थभूतचिज्ञडसवन्धरूप-प्रपच्चवाचकातिस्क्षम्हींवणीत्मकश्रीविद्याराजबीजस्य सत्य ङ्गानानन्दात्मकलक्ष्यार्थभूता सती हींबीजजापकाना सर्वार्थ प्रदानेन पारमैश्वर्य व्यक्तयतीति गुणयोगकृतनामेदम् । तथा च हीम शिखामणि परमतात्पर्येण ङ्गापयतीत्वर्थ ॥ अ हींशिखामणये नमः ॥

र्ह्रीकारकुण्डाग्निशिखा हींकारशशिचन्द्रिका। र्ह्रीकारभास्करश्चिहींकाराम्भोदचश्रला॥

हींकारकुण्डामिशिखा। हींकार एव कुण्ड वाच्यवाच कसवन्धेन परब्रह्मावच्छेदकतया आह्वनीयादिसदशम्, त स्यामिशिखा, 'उद्दीप्तेऽमी जुहोति'—इति प्रमाणेन 'आ हवनीये जुहोति'— इति विधिवाक्यावगतहोमाधारताया केवळाह्वनीयस्यायाग्यतया सामिज्वाळख होमाधारताया ब्रायमानायामदृष्टद्वारा स्वर्गसवन्धेन स्वार्थकत्या तच्छा पक्रवेदवाक्यस्यापि पुरुषार्थसबन्धिन स्वार्थकत्या तच्छा पक्रवेदवाक्यस्यापि पुरुषार्थसबन्धिनस्वमाह्वनीयनिष्ठहोमा धिकरणदीप्तामिज्वाळास्वाधारभूतकुण्डसार्थक्यसपादकेवामा ति । तथा स्ववाचकवीजस्यापि 'मन्त्रेहपासीत' इति वि धिगतदेवतोपामनकरणाना मन्त्राणामपि स्ववाचकत्या सा र्थक्यसपादनात्तथोच्यते ॥ ॐ हींकारकुण्डामिशिस्वायै नम् ॥

हीकारशिवन्द्रिका। हींकार एव शशी चन्द्र तस्य स्वरूपाभेदभूतप्रकाशचैतन्य चन्द्रिकापदेनोपमीयते। यथा चन्द्रस्वरूपभूतामृतप्रसारभूता ज्योत्स्ना देवादिसर्वछोकाना सजीवकतयोपकरोति, तथा दृढतरभक्तिपरवशपुरुषधौरेया

दीना हींकारवाच्यार्थतया तद्दिभन्नत्वेऽिप जगद्विवर्तकारण तया सिचदानन्दाधायकत्वेन सजीवयतीति भाव ॥ ॐ हींकारशिचन्द्रिकायै नम ॥

हींकारभास्कररुचि । भास कान्ती करोति प्रसारयति लाकोपकारायेति तथा सूर्यं, तस्य रुचि प्रचण्डभातु । यथा लाके सूर्य वर्षाम्वतिगाढतरस्रवदुदकधारासच्याप्तदि गन्तरासु दिवा विद्यमानोऽपि सूर्य साक्षादयमिति चाक्षुष ज्ञानगाचरो न भवति, तद्भावे शिष्टाना भोजनादिसजीव कञ्यवहाराभावन तदुपायासिद्धयाप्रसन्त्रमनासि भवन्ति, तथा ज्ञानमार्गानधिकारिणा मोक्षमार्गीपायभूताविदितदेवता रूपहींकाराणा जनाना बहुतरपुण्यमहिन्ना महावातनेव मेघा वलौ दूरीकृताया चण्डभातुरिव सुखसाधन गुरुकृपापाङ्गाव ळोकनरूपदीक्षावद्येन प्रतिबन्धकदुरितापगमे परदेवतारूप ह्रींकार पुरश्चर्यया साक्षाद्वाच्यार्थापरोक्षज्ञानहेतुर्भवति । चिरकालनैरन्तर्यभावनाप्रकर्षेण तस्मिन्नभिमुखे मति तल्ल क्ष्यार्थरूपपरमानन्दचित्कला स्वयमेवाभिन्यक्ता सत्यानन्दा नुभवामृतेन सुखयतीति तथोच्यते ॥ ॐ हींकारभास्कर रुचये नमः ॥

हींकाराम्भोद्चश्वला । अम्भासि अमृतानि द्दतीत्य

स्भादा , ह्वींकारोऽपि कामवर्षत्वन तैरुपमीयत । तेषु चश्च ला विशुक्ता विद्यमाना तदिभन्नप्रकाशमाना सती वर्षोद कहारा सस्याद्युत्पादकत्व यथा व्ययनिक तथा ह्यींकारवाच्य तथा तदिभन्नापि तत्स्वरूपविचारणाया शुद्धलक्ष्यार्थस्वरूपा सत्यपि अनिर्वचनीयस्ववाचकमन्त्रप्रकाशितदेवतात्वेन स्वा भीष्टपुरुषार्थप्राप्तिहेतुभूतेत्यभिस्ति ॥ ॐ ह्रींकारास्भोद चश्चलाये नम ॥

हींकारकन्दाङ्करिका हींकारैकपरायणा। हींकारदीर्घिकाहसी हींकारोद्यानकेकिनी।

हींकारकन्दाङ्करिका। हींकार एव कन्दम् दढतरबीज
भाव तस्य अङ्करिका आदिप्रसव नूतनाभिव्यक्तिरित्यर्थ।
यथा छोके अङ्करादिक कन्दादिनिष्ठोत्पादकशक्तिमनभिभू
यैव स्वय स्कन्धशाखापत्रपृष्पफछाद्यात्मना यथा विवर्तमान तत्सामध्येप्रकटनकारण भवति, तथा हींकारम्य वेदैकदेशत्वेन इतरप्रमाणानपेश्वतया स्ववाच्यार्थक्कापनन स्वत प्रा
माण्ये स्थितऽपि तज्जन्यज्ञानविषयतावच्छेदकथमरूपनाना
प्रकारजगत्परिणामहेतुत्वसाधकाषिटतघटनापटीयसीमायोपाधिकत्वेन तदर्थद्वयरूपा सती तन्मात्रप्रमाणवेद्येद्यर्थ ॥ ॐ

हींकारकन्दाङ्करिकायै नम ॥

हींकारैकपरायणा । हींकार एव एक अनितरसाधारण चतुर्विधपुरुषार्थसाधकतया परम् अयन ज्ञापक प्रमाण यस्या सा तथा। अस्य बीजस्य वाच्यार्थों माया, सा निर-धिष्ठाना न सिध्यतीति तदाश्रयत्वविषयत्वाभ्या तद्रहित तेन ज्ञाप्यत इति भाव ॥ ॐ हींकारैकपरायणायै नम् ॥

हींकारदीर्घिकाह्सी । हींकार एव दीर्घिका राजोद्यान वनकी हावापी । ससारकाननसचारिलोकविश्रान्तिकारण त्वेन हींकार तयोपमीयते, 'आराममस्य पश्यन्ति न त पश्यित कश्चन' इति श्रुते । आ समन्ताद्रमलस्मिन इत्या राम अथवा जगत् । तन्नोपासनादिना परमानन्दपापक-तया वा हींकार उपभीयते । तस्मिन हसी स्त्रीहस । यथा लोके सारासारविवेकिहस्या आधारसुवर्णकमलादिमती वापि का महाराजसबन्धिनी विकाप्यते, तद्वद्वान्यार्थेक्ष्यतया प्रका श्माना सती स्वसबन्धिनीजस्य सुखोत्पादकत्वमोक्षहेतुत्व योतयतीलमित्राय ॥ ॐ हींकारदीर्घिकाहस्यै नम ॥

हींकाराद्यानकेिकनी। हींकार एव उद्यानवत् फलानुभा वकत्वात् तथोच्यते तस्य केिकनी मयूरी। यथा लोके बहुषु पक्षिषु आरण्यकेषु सत्स्विप तस्या रूपध्विनिभ्या सुस्तत्या दर्शनश्रवणादिजन्यप्रमोदसाधकत्या उद्यानालक रिष्णुत्वम, तथा द्रीकाररूपदेवताध्वने सिचदानन्दरूपत द्वाच्यार्थस्य च परमपुरुषार्थसाधकत्वेन अविशिष्ठत्वेऽि ब्र द्वाविष्णुकद्वादिमूर्तिषु उद्यानतरुविष्ठकक्षगुल्मादिवदुत्तमनीच देवतिर्थकमनुष्यादिषु च मयूरीव स्वेच्छ्या सर्वव्यापकत्वेन तदात्मरूपतया शरीरिनद्रयप्राणाद्याधारपरमप्रमासपदपरमा नन्दरूपप्रस्मगोचराहवृत्तिव्याप्यतयैतद्वीजप्रकाश्या भवती त्यर्थ ॥ ॐ द्वीकारोद्यानकेिकन्यै नमः ॥

हींकारारण्यहरिणी हींकारावालवस्तरी। हींकारपञ्जरद्यकी हींकाराङ्गणदीपिका॥

हींकारारण्यहरिणी । हीकारवाच्यार्थेकदेशभूतमायावि द्यातत्कार्याणा बन्धरूपतया गहने व्याद्यादीनामिव भयहे तूना सद्भावेन दुष्प्रवेशत्वरूपधर्मसाम्येन हींकारस्य अरण्यो पमितत्वम् । तथा च अरण्यमिव हींकार इति सर्वत्रोपमा नोत्तरपदसमास । तत्रैव सति यथारण्यगतपुरुषस्य शीघ्र दृष्टिपथ गता हरिणी एणी व्याद्याद्यभावनिश्चयेन तद्धिगम फळप्राप्तिसाधनतामवगमयति धीरपुरुषस्य, तथा निरन्तरम क्तिभजनपरप्राणिलोकस्य उपासनापरिपाकमाहिम्रा अपरोक्षी-कृताज्ञाननिष्टित्तिपूर्वक भयापकरणेनानन्द प्रापयतीति तयो पमितेति भाव । 'तमेव विदित्वातिमृत्युमेति ' इति श्रुत ॥ ॐ हींकारारण्यहरिण्ये नम ॥

हींकारावाळवछरी । हींकारमन्त्रवाचकतानिरूपितवा च्यतानामकसबन्धाविच्छन्नपरदेवतास्वरूपत्वन तदुपासना विषयफळदानसमर्था सती आवाळमात्रपरोह्दिष्टुद्धवछर्यो पमीयते। तथा च तत्सबन्धितया हींकार जपादिना आ वाळ इव सर्वदा सरक्षणीय इति तात्पर्यार्थ परिनिष्पन्न इति यावत्॥ ॐ हींकारावाळवछ्यै नम ॥

हींकारपश्चरशुकी । मन्दाधिकारिणामप्युपासनाकारण साधारणपार्वतीप्रतीकतया हींकारस्य बालकादिलालनाविषय त्वधमेपुरस्कारण पश्चरोपमा । तथा च तत्रत्यशुकीव सला पादिना मनुष्यादिचित्तरिक्तती । एव तत्तददृष्टानुसारेण फ-लदात्री सती तयोपमितेति दृष्टन्यम् । हीकार पश्चरमिव तस्य शुकी तत्सार्थक्यकारिणीत्यभिष्राय ॥ ॐ हींकार्प खरशुक्ये नमः ॥

ह्रींकाराङ्गणदीपिका । अङ्गणवत् सर्वसाधारणविश्रान्ति स्थानतया हींकारस्य तदुपमा तस्य दीपिका । यथाङ्गणारो पितदीप बाह्याभ्यन्तरवस्तुजात प्रकाशयन तत्रदालोकाना मन्धकारादिनिवर्तनपूर्वकमभीष्टव्यवहारहेतुत्या सर्वान् क्षा घयति स्वयमपि ते सरक्ष्यते, तथा ह्रींकारबीजार्थश्रवणम नननिदिध्यासनिरन्तराभ्यासादपरोक्षीकृतस्वयप्रकाशानन्द ह्रापा सती स्वसेवकान् सर्वोत्कर्षयतीति तदुपमिता सती तथोच्यते ॥ ॐ हीकाराङ्गणदीपिकायै नम ॥

हींकारकन्दरासिही हींकाराम्भोजभृद्धिका। हींकारसमञ्जरी।

ह्रींकारकन्दरासिंही। पर्वतिश्वामवर्तिगुद्दा कन्दरा द-रीत्यर्थ। वेदमौछिपठितद्दींकारस्य प्राम्यविषयछिप्सुप्राणि प्रवेशयोग्यताविकछतया कन्दरापमा। तन्न यथा सिंही स्वेतरश्चद्रमृगप्रवेशभयहेतुसटादिस्वन्याप्यिचहानुमिता तस्या स्वाश्रयमात्नता धीरस्य तत्परिसरनखनिर्धातमुक्ताफछादि प्राप्तिं च नयति, तथा मन्दभक्तितन्द्रीनुभुक्षादिकछुषित-परिच्छिन्नाभिमानदेवतान्तरप्रतिपादकबीजतया स्वदेवतैक भाव कामितार्थे च प्रापयतीति सिंह्युपमिता सती तथो नयते॥ ॐ हींकारकन्दरासिंही नम ॥

ह्मिराम्भोजसृङ्गिका। ह्मिकारस अष्टैश्वर्यात्मकपुरुषा

र्थसाधकनानाशिकमत्तया नानाप्रकारवर्णान्तरघटितत्वेन परागपरिमल्लादिमत्कमलोपिमतत्विमिति याजनीयम् । कमले
यथा मधुमात्रसारप्राहिणी भृङ्गी रमते सर्वपुष्परसमधुपानल्लामान्येन सर्वसमापि मध्नाधिक्यविविदिषया प्रभूतम
धुवत्त्वेन च तिसम्नेव विशिष्यासिक्तमती, तथा सर्वमन्त्र
बीजवाच्यदेवतात्मना सर्वानुगतापि हीकारस्य विशिष्टगुण
वत्त्वेन सर्वीपादानसगुणब्रह्मप्रतिपादकतया तदीयस्वरूपत
टस्थलक्षणवत्त्वेन तदिभन्नस्वरूपतया सर्वशब्दजालप्रकृतित्वेन च रुद्धा लक्षणया वा तत्सविधनी सती तदुपास
काना तदिधिष्ठानतया च तैलक्ष्यत इति भृद्ग्युपमया व
णितेति तात्पर्यम् ॥ ॐ हीकारामभोजभृद्धिकायै नम् ॥

हींकारसुमनोमाध्वी । हींकारस्य वाञ्छितफळप्रदानसा-धकतथा सुमन सादृश्यम् । अथवा, पुष्पाणि व्यवहारममये बहुसावधानतया व्यवहर्तव्यानि परममार्दवाधिकरणत्वेन बहु मान्यत्वात्, तथा हींकारोऽप्युपासनवेछाया परब्रह्मवाचकत्वेन प्रयत्नपूर्वकमेकाप्रमनसा देवताभिन्नत्वेन ध्यातव्य इति निय मसपादनार्थे पुष्पोपममिति विभावनीयम् । तथा च वा-य्वादिना शुष्काणि पुष्पाणि निर्मधुत्वेन फछान्यजनयित्वा परिपतन्ति फछजनकशक्तेरभावेन, तदितराणि तु तद्वस्वेन तज्जनकानि छोके दृष्टानि, पुष्परसञ्च पृथिवीकारणभूताद्दक तन्मात्रस्वरूपमधुररसात्मकत्वात् पुष्पाणा फळजनकशक्तिज्ञा पको भवति, तथा द्रीकारस्यापि सर्वजनकताशक्याधायकत द्रिष्टानसिचदानन्द्परब्रह्मस्वरूपा सती तन्मन्त्रप्राप्त्या यथोक्तफळहेतुतया तद्रथेरूपेण तद्वृत्तिर्भवतीति माध्वीसमान्धमेवत्त्वमस्या उपपद्यत इति विवेचनीयमिति यावत् ॥ ॐ हींकारसुमनोमाभ्वये नम् ॥

ह्रींकारतरुमकारी। फलार्थिन स्वाह्रहजनान् पतनादि
भय प्रतिबन्धकेभ्यस्तारयित पार प्रापयित फललाभेन स
तोषयतीति तरु । ह्रींकारक कल्पादितरुद्देष्टान्तीकृत ।
प्रेक्षावता सवादिप्रवृत्तिजनकत्वेन शाखोपशाखाग्रगता पुष्प
मक्तरी फलकारणयोग्यता ज्ञापयतीव पुरुषार्थार्थिना अस
शयप्रवर्तकत्वेन प्रत्यक्खरूपा सती गुरूपिदृष्टमन्त्रदेवतात्म
कतया मन्त्रोपासनायामिममुखीकरणेन पुरुषार्थान् प्राप
यतीति मक्तरीसादद्य प्राप्त परदेवताया इति विवेचनी
यम् ॥ ॐ ह्रींकारतरुमञ्जर्ये नम ॥

सकाराख्या ममरसा सकलागमसस्तुता। सर्ववेदान्ततात्पर्यभूमि, सदसदाश्रया।। सकाराख्या । सकारयुक्ता श्रीविद्यानामिका आख्या वाचकशब्द यस्या सा तथा।। ॐ सकाराख्यायै नम ॥

समरसा। सम एक रस मधुरादिरसवद्गुडिपिण्डादा वेकरूपेण कार्ये व्यवस्थितेत्यर्थ । अथवा, ससारदशाया सर्वज्ञत्विकंचिष्क्रत्वादिविशेषणभेदेन भिन्नरसवत् भिन्नस्वभा ववत् प्रतीयमानयोरीश्वरजीवयोर्वेदान्तश्रवणादिना जन्या-खण्डाकारवृत्तिव्याप्या अह ब्रह्मास्मि— इस्यभेदानुभवद्शा-यामेकरूपतया साक्षात्कियते इति सा तथोन्यते, 'रसो वै स 'इति श्रुते, रसशब्दार्थ परब्रह्म सम अभिन्न यस्या सा तथा। तैत्तिरीयोपनिषत्प्रतिपाद्यस्यर्थ ॥ ॐ समरसायै नम ॥

सकलागमसस्तुता। आ समन्तात् गमयन्तीति आगमा ,
सकलपदार्थगोचरसविकल्पकप्रमाजनकवेदा इत्यर्थ । सकलै
रन्यूनानितरेकेणेतिहासपुराणसिहतयावदङ्गोपाङ्गरहस्यादियो
गित्व सकलक्षाब्दार्थ । तै सस्तुता सम्यक् नात पर किचि
दस्तीति निश्चयपूर्वक स्तुता गुणिनिष्ठगुणाभिधानविषयतया
तदुपजीवकेत्यर्थ । सर्वार्थप्रकाशकवेदाना सर्वज्ञत्वेनैद्पर्येण
तदीयस्तुतिविषयतया शुद्धचैतन्यात्मकत्या मोक्षकारणीभू
तज्ञानस्वरूपत्वेन जिज्ञास्येति व्वनितोऽर्थ ॥ ॐ सकला
गमसस्तुतायै नम ॥

सर्ववेदान्ततात्पर्यभूमि । वेदानामन्त अवसान तत्त्वम स्यादिमहावाक्यानि, तेषा तात्पर्यं समन्वय सामानाधिक रण्यमित्यर्थ । तस्य भूमि विषय ज्ञाप्यमिति यावत् । ' उपक्रमापसहारावभ्यासाऽपूर्वता फलम् । अर्थवादोपपत्ती च लिक तात्पर्यनिर्णये 'इति वचनोक्ततात्पर्यनिर्णायकप्रमा णबलेनातीन्द्रियधर्मादिगोचरवाक्यवत् सर्वेषा वेदान्ता नामुपासनाज्ञानविधि विनाकर्मशेषतया अज्ञातज्ञापकत्वेन शसनादेव शास्त्रशब्दवाच्यानामद्वैते ब्रह्मणि गतिसामान्येन कर्मोपासनाकाण्डद्वयार्थोपकार्यत्वेन मोक्षहेतुज्ञानजनकत्वेन पर्यवसानमिति तात्पर्यविषयता अखण्डचैतन्यस्येति सि द्धान्तार्थ इत्यभिसधि । 'सामानाधिकरण्य च विशेषण विशेष्यता । लक्ष्यलक्षणभावश्च पदार्थप्रस्मात्मनाम् ' इति न्यायेन सबन्धत्रयेण अखण्डार्थं वेदान्ता बोधयन्तीति 'तत्तु समन्वयात्' इत्यधिकरणे प्रतिष्ठापितमित्रळमतिवि स्तरेण ॥ ॐ सर्ववेदान्ततात्पर्यभूमये नम. ॥

सदसदाश्रया । अपरोक्षतया सिन्निति प्रतीतिविषयतया व्यविह्यमाण सत्कार्ये रूपादिवत्तया व्यावहारिकसत्ताश्रय पृथिव्यप्तेजोभूतत्रय सिद्देश्यच्यते । असत् सिद्धन्नतया परो श्रज्ञानगोचर वाय्वाकाशादि तत्कार्यं च रूपादिभिन्नगुणाश्र यमुच्यत इत्यर्थ । तयोराश्रया उपादानत्वेन तद्धिष्ठानभूते त्यर्थ । आरोपितस्याधिष्ठानमत्तातिरिक्तसत्ताशून्यतया सत्ता स्फूर्तिप्रदत्वेन सर्वदा तदनुस्यूतेति ध्येयम् ॥ ॐ सदसदा श्रयायै नम् ॥

सकला सचिदानन्दा साध्या सङ्गतिदायिनी। सनकादिमुनिध्येया सदाशिवकुदुम्बिनी॥

सकला । आरोपितकलाभि उपासनार्थं किल्पताभि जाबालिना सत्यकाम प्रत्युक्तवोडशकलायुक्तपुरुषोपासनप्रति पादकच्छान्दोग्यवचनरीत्या कलाशब्दितावयवे सह वर्तते इति सा तथा । चतु षष्टिचन्द्रकलाभ्या वा सहिता । अथवा, कलाशब्द सुलादिकान्तिवचन तथा सहितिति वा ॥ ॐ सकलाये नमः ॥

सिषदानन्दा। सचासौ चिष सिष्दित् सिष्दिश्वासौ आन-न्द्य, कालत्रयाबाध्यत्व सत्त्वम्, स्वेतरप्रकाशाप्रकाश्यत्व चित्त्वम्, परमप्रेमास्पद्त्वमानन्द्त्वम्, 'सत्य ज्ञानमनन्तम्' 'विज्ञानमानन्दम्' 'सदेव सोम्येद्मम् आसीत्' 'प्रज्ञा प्रतिष्ठा प्रज्ञान ब्रह्म' 'आनन्दो ब्रह्मोति व्यजानात्' 'आ नन्द ब्रह्मणो विद्वास विभेति कुत्रश्चन ' इत्यादिश्रुतिभ्य । ते स्वरूप यस्या सा तथीका । वेदान्तशास्त्रोक्तन्रह्मस्वरूप स्क्षणस्त्रितेत्वर्थ ॥ ॐ सिच्चदानन्दायै नमः ॥

साध्या । कर्मोपासनादिभि महावाक्यश्रवणजन्यब्रह्म विद्यात्वेन साधनचतुष्ट्रयसपन्नाधिकारिणा अपरोक्षतया साधितु प्राप्तुमहा, फल्लस्वरूपत्वादित्यर्थ । साध्वीति वा पाठ साधो स्त्री, सन्त्वगुणसपन्नत्वात् साधु , सकल्ल-विद्यापारगत्वे सति सदाचारसपन्न दैवीसपित्तमानित्य थ । तदेकनिष्ठा परमपतिन्नता सती स्त्रीणा पातिन्नत्यसप्रदा यप्रवर्तकेति यावत् ॥ ॐ साध्यायै नमः ॥

सद्गतिदायिनी। समीचीना पुनरावृत्तिरिहता सुखमात्र रूपा गित , गम्यते ज्ञायते प्राप्यते इति वा गित । यत् ज्ञायते तदेव गित , तद्न्यस्याज्ञातत्वात् गितित्वानुपपते । ज्ञाते फले इच्छया तत्साधनेषु पुरुष प्रवर्तते, न त्व ज्ञातफलसाधने— इत्यन्वयच्यितरेकाभ्याम् , 'ब्रह्मविदाप्राति परम' 'ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति' 'ये पूर्व देवा ऋषयश्च तद्विद्व ते तन्मया अमृता वे बभूवु ' इत्यादिश्वत्या च परदेवतास्वरूपमेव मुक्तिस्वरूपतया सद्गति । तदावार-काज्ञानाभिभवेन स्वरूपानन्दमभिव्यक्तयतीति दायिनी । अभेदेऽपि गतिदानयो कर्मकर्तृप्रयाग उपपद्यते। 'तदा

त्मान १ स्वयमकुकत व इत्यान्विद्यथ । सर्ती वा सन्वगु णयुक्ता देवयानादिगतिं वा ददातीति सा तथा ॥ ॐ सद्ग तिदायिन्यै नम ॥

सनकादिमुनिध्येया। मननशीला मुनय, मननशब्दन लक्षणया तत्साक्षात्कारवन्त इत्यथ, ब्रह्मण मानसिकपुत्रा ब्रानवैराग्यादिबहुला मोक्षमागप्रवर्तका, सनक आदि येषा त मुनय सनन्दनसनातनसनत्कुमारप्रमुखा निरै षणा निश्चिन्ता, तैर्ध्येया अत्यादरेण स्वात्माभद्ज्ञानन स वेदा विषयीकृतेत्यर्थ, 'त्व वा अहमस्मि भगवो देवत अह वै त्वमसि' 'क्षत्रज्ञ चापि मा विद्धि' 'आत्मान चेद्धि जानीयादहमस्मीति पूरुष' 'अथ योऽन्या देवतामुपास्त ऽन्याऽसावन्याऽहमस्मीति न स वद यथा पशु' 'मत्यो स मृत्युमाप्नाति य इह नानेव पश्चित देखादिश्रतिस्मृति शतेभ्य ॥ ॐ सनकादिमुनिध्येयाय नम ॥

सदाशिवकुदुम्बिनी । सदाशिव कुदुम्बम् अस्या अस्तीति तथा ॥ अ सदाशिवकुदुम्बिन्ये नम् ॥

सकलाधिष्ठानरूपा सत्यरूपा समाकृति.। सर्वप्रश्वनिर्मात्री समानाधिकवर्जिता॥ सकलाधिष्ठानक्त्या । 'अथात आदेशो नेति नेति' 'नेह नानास्ति किंचन' इत्यादिनिषेधश्रुतिभ्य प्रतिपन्ना । 'सर्व खिल्वद ब्रह्म' इत्यादिवाधाया सामानाधिकरण्य मवगम्यते । कार्यम्य कारणाभेदद्वान बाधा । तद्वित्रता ज्ञानस्य श्रमक्तपत्वात् । तथा च श्रुतिनिषेधस्यावध्यपेक्षाया प्रकृत्यादीनामपि तत्त्वज्ञानेन निवृत्तौ भूतपूर्वगत्या सर्वाधि ष्ठानत्वेन अनुभूयते इति भाव ॥ अ सकलाधिष्ठान-रूपायै नम ॥

सत्यक्षा। सत्य जडानृतपरिन्छिन्नव्यावृत्तत्व सिन्दान-न्द्रूप यस्या सा तथा। परिणामवादमाश्रित्य सत् अपरोक्ष-ज्ञानयोग्यानि पृथिव्यप्तेजासि, त्यतु परोक्षज्ञानविषया नि त्यानुमेया इत्यर्थ , 'सन्न त्यन्नाभवत्' इति श्रुते । सत्य रूप यस्या सा तथा।। ॐ सत्यक्ष्णाये नमः॥

समाकृति । समा अभिन्ना सिन्नदानन्दरूपैकरसा आ कृति मूर्ति स्वरूप यस्या सा तथोक्ता । समा अन्यूना नितिरक्ता यथाशास्त्रप्रमाण मूर्तिर्विष्रहो यस्या सेति वा । समा सदाशिवेन गुणसौन्द्येबळवीर्ययशोगाम्भीर्यधैर्येङ्गि-तादिपरिज्ञानसर्वज्ञत्वादिबहुळधर्मविशेषै मूर्तिर्यस्या सेति वा । चतुर्विधमूत्रशमेषु तक्तन्त्रारब्धानुसारेण समा तत्र तत्र निवासयाग्या मूर्तिर्यस्या मित वा । कर्माध्यक्ष तया तत्तत्फलिवशेषदानेषु समा पक्षपातरिहता मूर्तिर्यस्या सा । समा बाल्यस्थिवरत्वादिभाविकारवर्जिता एक प्रकारा निल्ययौवनशालिनी मूर्तिर्यस्या सा । 'मम सर्वेषु भूतेषु मद्गक्ति लभते पराम ' अङ्गुष्ठमात्र पुरुषोऽन्तरात्मा सदा जनाना हदये मनिविष्ट ' इति स्मृतिश्रुतिभ्यामे-करूपत्वावगमादिलाशय ॥ ॐ समाकृतये नम ॥

सर्वप्रश्विनमात्री। ससारस्थानादितया माक्षस्थायित्वन च भूतभविष्यद्वर्तमानगद्धा सर्वशब्दवान्यत्व प्रपश्चम्य, प्रप बच्चते विस्तार्यते विवर्तत इति प्रपश्च, 'एक बीज बहुधा य करोति' इति श्रुते । तस्य निर्माली निर्माणमभिव्यक्ति तिश्रमित्ततया तत्तत्कर्तृत्वसुपचर्यते, दवदत्त पचतीतिवन ॥ सर्वप्रश्विनमीत्रये नम् ॥

समानाधिकवर्जिता । कुलशिलजातिगुणादिभि तुस्य समान , ते श्रेयानधिक , तेर्वर्जिता । 'न तस्य प्रति-मास्ति' 'विश्वाधिको रुद्रो महार्षि ' इति श्रुते , 'सर्वाधि पत्य कुरुते महात्मा ' इति 'एकमेवाद्वितीयम् ' 'न त्वत्स मोऽस्यभ्यधिक कुतोऽन्यो लोकत्रये ' इत्यादिश्रुतिस्मृति-भ्या चेति भाव । एतदृष्ट्या समाननीय समान पूजनी योऽधिक तहुयेन वर्जिता। 'एकमेवाद्वितीय ब्रह्म ' इत्यादि-श्रुतेरिति वार्थ ॥ ॐ समानाधिकवर्जिताये नमः॥

सर्वोत्तुङ्गा सगहीना सगुणा सकलेश्वरी। ककारिणी काव्यलोला कामेश्वरमनोहरा॥

सर्वोत्तुङ्गा । कार्यापेक्षया कारणस्याधिकत्वात् सर्वा पेक्षया उत्तुङ्गा उन्नता, 'पादोऽस्य विश्वा भूतानि । त्रिपा दस्यामृत दिवि ' इति श्रुते ॥ ॐ सर्वोत्तुङ्गाये नमः ॥

सगहीना। निरवयवत्वेन निष्कारणत्वन वा निर्गुणत्वेन वा निराश्रयत्वेन वा नित्यग्रुद्धबुद्धमुक्तस्वरूपत्वेन सबन्धर हिता वा, 'असगो न हि सज्जते' 'न चास्य कश्चिजानिता न चाधिप' इत्यादिश्रतेरित्याशय ॥ ॐ सगहीनायै नम ॥

सगुणा। समा एकप्रकारा गुणा सत्यकामस्वादय य स्या सा तथा। 'गुणी सर्वविद्य ' 'सत्यकाम सत्यसक-रूप ' इत्यादिश्रुते । त्निमूर्तिस्वरूपतया सत्त्वरजस्तमोगुणै सह वर्तते इति वा तथा।। ॐ सगुणायै नमः।।

सकलेष्टदा । इच्छाविषयभूतानि इष्टानि काम्यानीत्य-र्थ , सकलानि च तानीत्यभेदसमास , अन्यथा जीवादि- वत किसाश्चिद्विषये असामध्येशङ्का स्यात्। एकस्य पदार्थस्य बहुनामिच्छाविषयत्वदर्शनात्, एकत्र कामनायामि तत्स-इभावित्वेन सर्वप्रापकत्वोक्तौ परदेवताया बहुफछप्रदानुत्वेन अत्यन्तिवश्वसनीयतया अतिशयप्रतिमानाचेत्यर्थे । अथवा. परिच्छिन्नपरिमितभाग्यवत्प्राणिन सर्वस्य सर्वत्र इच्छाया मपि, यानि सर्वाणि खबुद्धया शास्त्राविरोधेनेष्टानि एषित-च्यानि वाञ्छितच्यानि, तान्येव प्रयच्छति ददाति, न तद धिकानि, छोकेच्छाया बहुप्रकारत्वेन दुष्पूरणीयत्वादिति भाव । सर्वेषा प्राणिनामिष्टचा इन्यया पूजया विषयीकृता, यक्केन वा समाराधिता तम्य फलप्रदेत्यर्थ । 'अह च स वैयज्ञाना भोक्ता च प्रभुरेव च ' ' एष हाव साधु कर्म का रयति यमेभ्यो लोकेभ्य चन्निनीषति' इति स्मृतिश्रुतिभ्या परमेश्वरार्पणबुद्धथा क्रियमाणस्येव कर्मण शुभफळत्वात मुक्तिहेतुत्वेन, काम्यफलार्थिना जन्ममरणादिबन्धकत्वेन स्व-रपफळतया अनादरणीयत्वादित्यर्थ । अथवा, कळाभि अ-वयवै तरतमभावैरित्यर्थ । ते सहितानि इष्टानि फ-लानि मनुष्यानन्दादिब्रह्मानन्दपर्यन्तानि फलानि आनन्द खरूपाणि ददातीति तथा ॥ ॐ सकलेष्टायै नम ॥

ककारिणी । तृतीयखण्डद्वितीयवर्णेरूप ककारावयव

वाचक अस्या अस्तीति तथा। अ ककारिण्यै नमः !!

कान्यलोला। वास्मीकिवेदन्यासादिकृतेषु कान्येषु लो ला, वान्यलक्ष्यार्थभेदेन तत्त सबद्धेत्यर्थ। अथवा, कवि भि कृतेषु स्तुतिविशेषेषु प्रीतिमतीत्यर्थ।। ॐ कान्यलो लाये नमः।।

कामश्वरमनोहरा। कामेश्वरस्य मन हरतीति तथा। अक कामेश्वरमनोहरायै नम ॥

कामेश्वरप्राणनाडी कामेश्रोत्सद्गवासिनी। कामेश्वरालिद्गिताङ्गी कामेश्वरसुखप्रदा॥

कामेश्वरप्राणनाडी । कामेश्वरस्य प्राणनाडी यथा नाड्या प्राण सचरति सा तथा, जीवनाडीत्यर्थ । 'इडया तु बहि यीति' इति लयखण्डवचनात् । लोके विश्वस्यमाने पशौ हृद्य पुण्डरीकाकार मासखण्डात्मकान्त सुषिराष्ट्रदलोपेतमङ्गुष्ठप रिमाणसुषिरयुताधाभागकणिकामध्य दश्यते, तद्या कणिका या कसरायमाना एकशत नाडीनामङ्करा तद्वेष्टनपुरीतन्नाम कनाडीसुषिरविन्यस्तमूला भवन्ति । तत्र सुषुन्नानामकनाडी मूलाधारादारभ्य ब्रह्मर प्रपर्यन्त गता । तस्या षट् चक्राणि मूलाधारादीनि तत्तन्मातृकावर्णसिहतयोगशास्त्रोक्तदलस्यु

तानि सनद्धानि वर्तन्त। तस्या मूळ पृश्वीदेवता विसतन्तुत नीयसी कुण्डलिन्यधोमुखावरणशक्तिनिद्राति । तस्या दक्षि-णभागे इलानामनाडी भ्रुमध्यपर्यन्त प्रसृता । वामे पिङ्गला तथा। तथा च जाग्रदवस्थाया नेत्रयो दपत्यात्मना श्रुतिप्रतिपादित , म्वप्ने मनउपाधिक , सुषुप्रावज्ञानोपाधि क , जायति स्थूलशरीराभिमानी विश्व इत्युच्यत, स्वप्ने स्-क्माभिमानी तैजस , सुषुप्तौ कारणाभिमानी प्राज्ञ । सुषु-प्तौ कारणात्मना स्थितानि स्थूलस्क्ष्मशरीरजन्यभोगमाधन प्रारब्धकर्मवद्दोन पुरीपद्वारा नाडीमार्नेण तत्तद्दोलकानि प्रवि श्नान्ति इन्द्रियाणि । तद्वपरमधारब्धोद्वोधे आन्दोलिकाया वि द्यमानो राजा गृहान्तरे सोपानमागद्वारा प्रासादे विहत्य त-दविच्छन्नान्त पुरपर्यक्के शयान इव नाडीद्वारा पुरीतत्प्रविदय तदविकन्नहृदयोपाधिक परमात्मान यदा प्रविश्राति तदा सुप्त इत्युच्यते । लिङ्गशरीर कारणात्मना लीयत । तदा प्राणा दिवायव प्रलीनवृत्तय सन्त आयु स्वरूपेण शरीर रक्षान्त । तथा च भाविजाप्रत्स्वप्रभोगानुकूळकर्मानुबन्धप्राणधारण सु-षुप्तौ सोपाधिकचैतन्यस्यैव दृश्यते । तत्सत्तया च नाडीना प्राणसचारयोग्यतापि । एव च सति 'न प्राणेन नापानेन मर्ल्यो जीवति कश्चन । इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेताबुपा-

श्रितौ 'इति श्रुत्या 'जीव प्राणधारणे 'इति धातुपाठा प्राण नाडी शब्दस्य लक्ष्मणया परमात्मैवोन्यते । कामेश्वरस्यैव प्रारब्धकर्मजन्यशरीरमात्राभावेऽपि घृतकाठिन्यन्यायेन मूर्ति मत्तया तदन्तर्यामिसभावनया एतन्नाम । कामेश्वरस्य प्राण नाडी तद्धिष्ठानचैतन्यमिति फलितोऽर्थे ॥ ॐ कामेश्वर प्राणनाड्ये नम ॥

कामशोत्सगवासिनी। कामेशस्य उत्सगे वामाक्के वसती ति तथा। 'अनेकमन्मथाकारकामेशोत्सगवासिनी' इति छितातापनीये॥ अकामेशोत्सगवासिन्ये नमः॥

कामेश्वरालिङ्गिताङ्गी। तेन आछिङ्गितम् अङ्गीकृतम् अङ्ग यद्या सा तथा॥ ॐ कामेश्वरालिङ्गिताङ्ग्यै नम् ॥

कामेश्वरसुखप्रदा। कामेश्वराय सुख प्रददातीति वा। कामेश्वरख यत्सुख ब्रह्मस्वरूपसिच्चतानन्दसाक्षात्कारात्म कम, 'दवो भूत्वा देवानप्येति' इति श्रुत्युक्तन्यायात् स्व कीयभक्ताना कामेश्वराभेदरूप सिचदानन्दघनात्मक मोक्ष ददातीत्यर्थ।। ॐ कामेश्वरसुखभदाये नमः।।

कामेश्वरप्रणयिनी कामेश्वरविलासिनी। कामेश्वरतप सिद्धिः कामेश्वरमन'प्रिया॥ कामेश्वरप्रणियनी । कामेश्वरस्य स्वस्वरूपे परमानन्द्धने या प्रीति तद्विषयभूतेत्वर्थे ॥ ॐ कामेश्वरप्रणियन्यै नम् ॥

कामेश्वरविलासिनी । कामेश्वरस्य विलाम कार्यात्मना विवर्तोऽस्या अस्तीति तथा ॥ ॐ कामेश्वरविलासिन्यै नमः ॥

कामेश्वरतप सिद्धि । कामेश्वरस्य तप जगदालोचना त्मकम , सिध्यत्मगेति सिद्धि , तपस साधनभूतेत्यर्थ । स्त्रीपुरुषात्मना कल्पितभेदनशान जगत्सर्जनसाधनभूतत्यर्थ ॥ अ कामेश्वरतप सिद्धि नमः ॥

कामेश्वरमन प्रिया । मनस प्रिया तथा, निरवधिक-प्रेमास्पदस्यर्थ ॥ ॐ कामेश्वरमन'प्रियाये नम ॥

कामेश्वरप्राणनाथा कामेश्वरविमोहिनी। कामेश्वरब्रह्मविद्या कामेश्वरगृहेश्वरी॥

कामेश्वरप्राणनाथा । कामेश्वरस्य प्राण हिरण्यगभ त नाथयति पालयतीति तथा । कामेश्वर प्राणनाथो वहुभो यस्या सेति वा तथा ॥ ॐ कामेश्वरप्राणनाथायै नम ॥

कामेश्वरविमोहिनी। विमोहयति म्वय भिन्नविग्रहवती

सती आवा दपती—इति द्विप्रकारकज्ञानवन्त करोतीति सा तथा। अभेद्ज्ञानवत तद्विपरीतज्ञानवत्त्व मोह् तत्करोती ति सा तथा। अथवा, मोहो नाम बुद्धेरेकाल्डम्बनतया तद्द-न्याविषयकत्वम् परमेश्वरम्य स्वस्वरूपपरदेवतापरमानन्द् साक्षात्कारेण स्थाणुविशिश्चलतया उपचारेण मोहवत्त्तया तदि तरप्रपञ्चाकारकृत्याद्याश्रयतादर्शनेन मोह्यतीत्युपचारनाम। मोह्यतीवेत्यर्थ। अन्त पुरगत राजान स्वियासक्तमितिव दित्यर्थ॥ ॐ कामेश्वरविमोहिन्ये नमः।।

कामश्वरत्रह्मविद्या । कामेश्वरस्य तत्त्वपदार्थसाक्षात्कार भूतेत्यर्थ , 'य साक्षादपरोक्षाद्वह्म ' इति श्रुते ॥ ॐ कामेश्वरत्रह्मविद्याये नम ॥

कामेश्वरगृहेश्वरी । गृह्यत इति प्रह् सर्वज्ञानम् तस्य ईश्व री विषयाधिष्ठानभूतत्वेन नियामिकेत्यर्थ । अथवा, 'गृहिणी गृहमुन्यते ' इति न्यायात् कामेश्वर गृहेश्वर स्वस्या अ धिपति अस्या अस्तीति सा तथा ॥ कामेश्वरगृहेश्वर्ये नम् ॥

कामेश्वराह्णादकरी कामेश्वरमहेश्वरी। कामेश्वरी कामकोटिनिलया काङ्कितार्थदा॥ कामेश्वराह्णादकरी। आह्वाद तृप्तिजन्यसुख परमेश्वरस्य नित्यतृप्तत्वरूपा शक्ति , परदेवतात्मकतया त करोतीति तथा ॥ ॐ कामेश्वराह्णादकर्ये नम ॥

कामश्वरमहेश्वरी । महती च मा इश्वरी निक्रपाधिकैश्व र्यवती, 'महान्त्रभुवैं पुरुष ' इति श्रुते । कामेश्वरम्य मह दैश्वर्यम् अस्या अस्तीति तथा, भगवतीत्वर्थ । 'ऐश्वर्यस्य सममस्य वीर्यस्य यशस श्रिय । ज्ञानवैराग्ययोश्चेव षण्णा भग इतीरणा 'तमिश्वराणा परम महेश्वरम ' इति श्रुते ॥ ॐ कामेश्वरमहेश्वर्यं नमः ॥

कामेश्वरी । मन्मथापासितकादिर्विद्यारूपेत्यर्थ ॥ ॐ कामेश्वर्ये नमः ॥

कामकोटिनिल्या। षण्णवितपीठेषु मध्य कामकाटि श्रीचक्रमित्यर्थ। निल्य गृह यस्या सा तथा।। ॐ का-मकोटिनिल्यायै नम'।।

काङ्कितार्थदा। काङ्कितान् काङ्काविषयीभ्तान, प्राप्तम जातीयेच्छा काङ्का, तद्गोचरान् पदार्थान् द्दातीति तथा। काङ्किता सती उपास्यदेवता मे प्रसन्ना भूयादितीच्छया चिरकाछोपासिता सती पुरुषार्थान् अप्रार्थयमानस्यापि स्वयमेव द्दातीस्रथे॥ ॐ काङ्कितार्थदायै नम्॥

लकारिणी लब्धरूपा लब्धधीर्लब्धवाब्छिता। लब्धपापमनोदूरा लब्धाहकारदुर्गमा॥

लकारिणी तृतीयखण्डतृतीयवर्णत्वेन वाचकतया अस्या अस्तीति सा तथा ॥ ॐ लकारिण्ये नम् ॥

लब्धरूपा। रूप्यते झाप्यत एभिरिति रूपाणि लक्षणा नि स्वरूपतटस्थभेदेन सगुणनिर्गुणपराणि, लब्धानि यया सा तथा। रूप्यते झाप्यत इति रूपम् अर्थ, उपलक्षण नाम्नो ऽपि, लब्धे नामरूपे यया सा तथा। आदौ स्वय मायोपा धिना शब्दार्थभावमापद्य पश्चात् न्याकरणमकरोदिति भा व ॥ ॐ लब्धरूपायै नम् ॥

लब्धधी । निश्चयात्मिका सविकल्पनामका अन्त कर णवृत्तयो थिय , ता उपाधित्वेन प्रतिविम्बाधिष्ठानत्वेन लब्धा यया मा तथा । वृत्त्याकृढ चैतन्य ज्ञानमिति वा, चैतन्य-व्यामा वृत्तिवेति वेदान्तसिद्धान्त । जडाना विषयाणा प्रहणे ताहशीना वृत्तीना असामध्ये जगदान्ध्यप्रसङ्गेन स्वक्षपचै नन्यमन्त करणासुपहित फलचैतन्यतया प्रकाशयति । तथा च 'ब्रह्मण्यज्ञाननाशाय वृत्तिव्याप्तिरिहेष्यते ' इति न्यायेन लब्धा धी तत्त्वमस्यादिमहावाक्यश्रवणजन्यवृत्तिच्याप्तिर्थया

सत्यर्थ । अथवा, धी शब्दन सर्वज्ञत्यादिक मुन्यते , तत् लब्ध ययेति वा, 'य मर्वज्ञ सर्वविन' इति श्रुत ॥ ॐ लब्ध धिये नम ॥

लन्धवाञ्चिता। वाञ्छाया विषयीभूत वााञ्छतम् इष्टफ लिस्यर्थे । लन्ध पूर्वमव प्राप्त तद्ययेति तथा । आप्तकामेति यावन् ॥ ॐ लन्धवाञ्चितायै नमः ॥

लन्धपापमनोद्रा। पापप्रधानानि च तानि मनासि च पापमनासि लन्धानि पापमनासि यैस्ते सदा पापचिन्तका इत्यर्थ। तथा दूरा अवेग्रेत्यर्थ, 'अन्यत्र धर्मादन्यत्राध मादन्यत्रास्मात्कृताकृतात् इति श्रुते। 'तमेत वेदानुवच नेन बाह्मणा विविदिधन्ति' इति श्रुत्या विहिताना तत्तह्मणा-श्रमधर्माणामीश्वरापणबुद्धचा । ऋयमाणानामात्मज्ञानमाधन तथा श्रूयमाणत्वात् तदन्येषा दु खप्राप्तिसाधनत्वेन पापवा सनाप्रधानत्वेन दुरिधगमेत्यर्थ ॥ ॐ ल्रब्धपापमनोद् राये नमः॥

लब्धाहकारदुर्गमा । अहकारोऽभिमान उपलक्षण त त्कार्याणामासुरसपत्तिविशेषाणाम् । लब्ध अहकार राजस तामसात्मक यैस्त दु खेनाप्यधिकप्रयक्षेन क्रियमाणसाध नकलापेन अधिगन्तु ज्ञातुमशक्या । सत्त्वगुणाभावे देहे निद्रयादौ सुखप्रकाशाव्याप्तौ मन स्थैयोभावेन रजस प्रवर्त कस्य विक्षेपकस्य तमसश्चावरणप्रधानस्य विवेकज्ञानप्रतिब न्धकस्य निद्राळस्यादिसमुद्भवस्य कार्येण जामित्वादिरूपेण श्रेयोमागसाधनानुष्ठाने गुरुवेदयो श्रद्धाक्षये बाह्यविषयस पादनव्यप्र मनि लाभालाभहेतुकहर्षशोकजन्यरागद्वेषपर तन्त्रे अनात्मज्ञासुरसपत्तिमता चित्ते न भातीत्याशय । प्रत्युत जननमरणप्रवाहरूपससारमेवानुभवन्ति, 'तानह द्विषत क्रूरान्' इति भगवद्वचनात् । अतो निरिभमानपुरु षेण स्वाभीष्टलाभाय चित्त मदा चिन्तनीयेत्यर्थ । 'यत्य श्रुद्धसत्त्वा ' इत्यादिप्रमाणेभ्य इति द्रष्टव्यम् ॥ ॐ लब्धा हकारदुर्गमायै नम ॥

लब्धशक्तिर्लब्धदेहा लब्धेश्वर्धसमुत्रति । लब्धवृद्धिर्लब्धलीला लब्धयौवनशालिनी ॥

लब्धशक्ति । लब्धा शक्ति सकलसामध्येहेतुभूता मा यात्मिका यया सा तथा, 'ते ध्यानयोगानुगता अपश्यन् देवात्मशक्ति स्वगुणैर्निगृहाम्' इति श्रुते ।। ॐ लब्धश क्त्ये नम् ॥

लब्धदेहा। लब्ध देह विमह यया सा तथा। स्वे 8 ए үн 18 च्छावलिक्वतमूर्ति घृतकाठिन्यन्यायेन जीवत्वाभावेन कर्मा धीनत्वाभावात । तथा च मति अध्यस्तमायाशके भेदक त्वस्वाभाव्यन 'पतिश्च पत्नी चाभवताम् ' इति श्रुत्या च दपतिमूर्तिमती बभूवेत्यभिशाय ॥ ॐ लड्घदेहाये नम् ॥

ळडधेश्वयसमुन्नति । ऐश्वर्याणा समुन्नति आधिक्य प यवसानिमत्यर्थ , ळड्या ऐश्वर्यसमुन्नति यया सा तथा, 'तमीश्वराणा परम महश्वरम्' इति श्रते 'नान्तोऽस्ति मम दिच्याना विभूतीना परतप' इति स्मृतेश्च । 'सर्वे श्वर एव सर्वज्ञ एषोऽन्तर्याम्येष योनि सर्वस्य' इति श्रुतौ निरुपाधिकमहदैश्वर्यसपत्ते तदुपासकानामगस्त्यादि महर्षीणा दर्शनात् तदीयमहदैश्वर्यस्य निरवधिकत्वमिति किम्र वक्तव्यमिति ज्ञायते इत्यमित्राय ॥ ॐ लड्येश्वर्य-सम्रुन्नत्ये नम ॥

ळच्चवृद्धि । वृद्धिनांम व्याप्ति परिपूर्णतेस्यथ , अव यवोपचयात्मका न, तस्या कर्मजन्यत्वेन विनाशहेतुत्वात् , 'स वा एष महानज आत्मा न वर्धते कमणा' इति श्रुतिवचनात् , 'निष्क्रिय निष्कळम्' इति अवयवमास्ति वेधाच , तथा च ळच्चा वृद्धि सर्वव्यापकता स्वस्वकृपैव सती चपाधिमिर्जन्यैसादाश्रयमूते अभिव्यक्यत । न त्वविद्यमानारोपिता इति निष्कर्षार्थ ॥ ॐ ल्रब्यद्वर्र्ध नम ॥

लब्धलीला । लीला अन्यप्रयोजनार्थव्यापारा स्वहर्ष मात्रहेतुका वा, तत्तत्कालोचितशृद्धारादिनवरसाङ्गीकारसमये तदुचितभङ्गीविशेषा वा लब्धा यया सा तथा॥ ॐ लब्ध लीलायै नमः ॥

लन्धयौवनञालिनी । अस्तित्वजननवर्धनभावविकारा वस्था बाल्यम्, परिणाम अपक्षयो नाज्ञ उत्तरावस्था जरा, दहाभावेन तदुभयनिषेधे अर्थाद्यीवनम् , यौति गन्छतीति युवा हढबळवीर्य , तस्य भाव यौवन तदुभ यनयोऽवस्थाराहित्येनैकस्वरूपता, तल्लब्ध प्राप्त यौवन यया सा तथा, 'अजरोऽमृतोऽभयो ब्रह्म' इति श्रुते सर्वदा एकप्रकारस्वरूपवतीति भाव ॥ ॐ छञ्चयौवनशाछिन्यै नमः ॥

लब्धातिशयसर्वोद्धसौन्दर्धा लब्धविभ्रमा। लब्धरागा लब्धपतिर्लब्धनानागमस्थितिः॥

ळब्धातिशयसर्वाङ्गमौन्दर्या । सुन्दरो रुचिर तस्य भाव सौन्दर्यम् , अवयवाना सर्वेषा सौन्द्येमतिशायि सर्वाङ्गेषु सर्वावयवेषु लब्ध यया सा तथा, यथाद्यास्त्रोक्ता

वयवविन्यासिवशेषत्वन सर्वमनाहरमूर्तिवतीत्यर्थ , 'न तम्य प्रतिमास्ति 'इति श्रुत ॥ ॐ लब्धातिशयसर्वाङ्गसौ न्द्रभीये नम् ॥

लब्धविश्रमा। विश्रमो बालकीडा लब्धा यया सा तथा, मर्वात्मकतया सर्वकर्तृत्वादिति भाव ॥ ॐ लब्ध विश्रमायै नम ॥

छब्धरागा। छब्ध सजातीयो राग काम, 'मोऽका-मयत' इति श्रुत्या जगत्सर्जनस्य कामनापूर्वकत्वप्रतिपाद नात्, छब्धो रागो यया मा तथा इत्यर्थ ॥ ॐ लब्धरा गाँचै नम ॥

लब्धपति । लब्ध स्वेन्लयैव स्वयवरे पति काभेश्वरो यथा सा तथा ॥ ॐ लब्धपतये नम्. ॥

लब्धनानागमिश्यति । आ समतात् नानाप्रकारै कर्मा पासनाज्ञानकाण्डतद्क्कत्वादिभि गमयन्ति स्वार्थान् प्रका शयन्तीत्यागमा वेदा नाना अनेकशाखाप्रभिन्नसामादय तेषा स्थिति परिपालन लब्धा यया सा तथा । नाना गमस्थिति वेदचतुष्ट्योक्तमर्थादा काण्डप्रयविषया लब्धा यया सेति वा । ससारस्यानादित्वेन निरपेक्षप्रमाणभूतान् वेदान् 'सर्वे वदा यहाँक भवन्ति 'इति श्रुते स्वस्वरूपभूतान् महाशस्त्रये सरक्ष्य सर्गादी जायमानहिरण्यगर्भस्यान्यूनानित रेकेण तानेव प्रतिभासयित स्वय दपती भूत्वा तदुक्तधर्मा नजुष्ठाय परेषामप्यजुष्ठापयतीति च। 'वेद्गाको ममैवाको वर्त एव च कर्मणि। यदि ह्यह न वर्तेय जातु कर्मण्यतिन्द्र त । उत्सीदेयुरिमे लोका न क्रुयी कर्म चेदहम् ' इत्यादि भगवद्वचनादिति द्रष्टव्यम् ॥ ॐ स्रब्धनानागम्स्थित्ये नम्।॥

लब्धभोगा लब्धसुखा लब्धहर्षाभिपाजिता। ह्राँकारमूर्तिर्ह्रीकारसौधशृङ्गकपोतिका॥५४॥

लब्धभोगा। भोग सुखमात्रानुभव दु खानुभने उन्य माने जीवाविशेषप्रसङ्गात। लब्ध भोग यया सा तथा। जीववत क्रमिकस्वेष्टपदार्थानुभवानन्तरकालीन सुख न भव ति, स्वस्था आनन्दरूपत्वेन सिद्धस्वरूपत्वात्, साधनभूत-भोगोऽप्येतद्विषये सिद्ध इत्युपचर्यते इति लब्धभोगेत्यु च्यते॥ ॐ लब्धभोगाये नम् ॥

ल्डियसुखा। लड्य सुख अनुकूलवेदनीय स्वस्वरूपभूत सुख तत्माधन च धर्म यया सा तथा ॥ ॐ लब्यसु स्वाये नमः॥ लब्धह्षाभिपृरिता । छब्ध या हुषे तृप्तिनामस्तकचि सोह्यासिवशष मुखप्रसादशरीरपृष्ट्यादिकार्योन्नेय जगत्या स्वाभीष्टपदार्थानुभवादिजन्य सतोष इति प्रसिद्ध , तेनाभि पूरिता अभित समन्तादन्यूनानितग्केणाविन्छन्नरूपतया पूरिता भरिता । तद्विपरीतदु खाद्यनुत्पादेन तन्मात्रसमाश्रया नित्यप्रसन्नमुखीत्यर्थ ॥ ॐ छब्धह्षाभिपृरितायै नमः ॥

ह्यंकारमूर्ति । वाच्यवाचकताभेदसबन्धेन ह्यंकार मूर्ति विग्रहो यस्या सा तथा ॥ ॐ ह्रीकारमृत्यें नग ॥

ह्रींकारसौधशृङ्गकपोतिका । सुधामय मौधम , सुधा-विकार अट्टालिकेत्यर्थ , तस्य शृङ्ग शिखर चन्द्रशालादि-भिन्युपरिभाग , निकपाधिकविश्रान्तिजन्यसुखानुभवहेतु तथा द्रींकारस्य सौधोपमा , तत्र हकारस्य श्रेतवर्णतया श्रृटालिकसाटश्यम , रेफस्य लोहितक्तपतथा इष्टकादिकृता घोभिन्युपमा , हकारोपरि ईकारस्य शृङ्गोपमा , कर्ध्वगत्व-साम्यात् , तदुपरितनिबन्दु सर्वप्रकातभूतशब्दार्थात्मक-तथा तदवयवत्वेन विचित्रस्वक्तपोऽपि सूक्ष्मतया अपवरक-गतकपोतकान्तेव जागरूक दृश्यत इति तदर्थत्वेन परद वतोपमानशब्देनाभिधीयत इति भाव ॥ ॐ द्रींकारसौध-मृङ्गकपोतिकाये नमः ॥

ह्रींकारदुग्धाब्धिसुधा ह्रींकारकमलेन्दिरा। ह्रींकारमणिदीपाचिह्रींकारतस्वारिका॥

ह्र्गंकारदुग्धाविधसुधा । दोहाझिष्पन्न दुग्धम् । स्तनग तस्य पयस स्वीयतापादनहस्तिक्रयाविशेषो दोह । उपल क्षण चोषणादीनाम् , तथा च प्रदीपालकार सिद्ध , अनन्तो दक्तप्रसारितिनन्नभूप्रदेश अव्धिकच्यते । आप धीय ते अस्मिन्निति तथा । तस्मिन् मजीवकत्व धमे । डिम्भक सजीवने स्तन्यादौ दर्शनात् । ह्र्गंकारस्यापि हकारयुक्तत्या श्वेतवर्णत्वादमृतहेतोश्च तत्साहश्यम् । तस्य सुधेव सुधा तद्भिच्यक्तत्वाविशेषात्तत्सेवकाना नित्यत्वे सित बहुविधम हिमशालितया दर्शनादिति भाव ॥ ॐ ह्र्गंकारदुग्धाविध सुधाये नमः ॥

हींकारकमलेन्दिरा । हींकारबीजस्य विचित्रवर्णतया पर मत्रीतिविषयतया च कमलेपमा । तम्य वाच्यार्थतया तदु परितनत्वेन सर्वेपुरुषार्थप्रदातृत्वाच कमलकाब्देनाभिधीयते । तस्या पद्मालयत्वात् हींकारकमलस्य इन्दिरा तदधीनब्रह्म-विद्येत्यर्थ ॥ ॐ हींकारकमलेन्दिराये नमः ॥

ह्याँकारमणिदीपार्चि । आधिवैविकागुपद्रवानिभभूतत्वे

सित चिरकाछ।वस्थायित्व मणिदीपसान्द्रयम् ह्रीकारस्य । तस्य प्रकाश अनितरसाधारणमहातिशयवन्त्वेन अनर्धत्व मावेद्यति । तदुपासकस्य निरवधिकमहत्त्वापादकह्रींकार वान्यतया तत्प्रकाशकत्यर्थ । तथा च निरन्तरनमोऽपाकर जेन स्वेष्टपदार्थापादनेन च सुख्यतीति फलितोऽर्थ ॥ ॐ ह्रीकारमणिटीपाचिषे नम ॥

द्वींकारतस्वारिका । तारयति फलार्थिन स्वास्त्वान् पतनादे रक्षतीति तरु , तस्य शारिका पिङ्गतुण्डनेत्रचरणा शारिका अभ्यासातिशयेन मनुष्यभाषायामपि भाषते । भूतभविष्यद्वर्तमानलोकयात्रापरिज्ञात्री सती शुभाशुभफल प्राप्तिं च स्वभाषया बद्ति । अस्य बीजस्य वाच्यार्थतया तत्सवन्धिनी सती वेदवाचा सवै प्रकाशयतीत्यर्थ ।। अर्थ हींकारतस्वारिकाये नम ।।

हींकारपेटकमणिहींकारादकीविम्बिता। हींकारकोक्चासिलता हींकारास्थाननर्नकी॥

ह्रींकारपेटकमणि । गृह्नसाधनतया ह्रींकार पेटकेन दृष्टान्तीिकयते । तस्य मणि वैद्धर्येमित्यर्थे । यथा हीरा दिमणि पेटकावी गापितोऽपि स्वकान्त्या बाह्याभ्यन्तर तस्य प्रकाशयितरपेटकेभ्य त व्यावर्तयति, तथेदमिप बीज स्ववाचकतयेतरवर्णेभ्य निरितशयमिहिन्ना भेदयतीति भाव ॥ ॐ हींकारपेटकमणये नमः॥

ह्रींकारादर्शविम्बिता। अस्य वीजस्य इतरप्रमाणानपेक्ष वेदान्तर्गततया निर्दोषत्वादादशसाम्यम्। तस्मिन् विम्बिता प्रतिबिम्बिता, मायाप्रतिबिम्बचैतन्यस्यैव जगत्कारणतया सर्वत्र द्रपेणे मुखमिव प्रतिफल्लतीति तात्पर्यार्थे ॥ ॐ ह्रींकारादर्शविम्बितायै नमः॥

ह्रींकारकोशासिलता । ह्रींकार एव कोश तस्यासिलता अतिवीर्घसङ्गिमत्यथ । सर्ववैर्यादिजनयदु खितवर्तकत्वमसि लताया इव परदेवताया अपि । तथात्रेन बहि प्रकटनायो ग्यतामादृश्येन आच्छादकापेक्षया ह्रींकारस्य वाचकशब्द तथा अर्थावारकत्वौपम्यादिसकोशतुल्यता । तथा च ह्रींकार काशे विद्यमाना असिलतेव दु खिनवारकत्वे सित भक्ताभय करीति भाव । सर्वेषामायुधिवशेषाणाम् असिपदगुपलक्ष णम् । 'महद्भय वज्रमुद्यतम्' 'भीषास्माद्वात पवते' इत्या दिश्रते ॥ ॐ ह्रींकारकोशासिलताये नमः ॥

ह्रींकारास्थाननतकी । ह्रींकार एव आस्थान सभामण्डप मर्वाश्रयत्वान् । तस्य नतकी नटनसबन्धभूसयोगचरणवि न्यासोपलक्षिततालानुसारिहस्ताद्यङ्गचेष्टा नर्तनम्, तत्कर्जी नर्तकी । ह्रींकारवाच्यार्थतया मायादिसबन्धासबन्धनिमित्त कविचित्रतरकार्योत्पादनव्यापारानुकारिवकार्यविकारिस्वरूप वत्तया द्रष्टृलोकमनोष्टित्तिभेदेन तीव्रमन्दमन्दगरप्रीतिरूपभ क्तिविषयतयाभिव्यक्तानिभव्यक्तेष्टकलसाधनतया न्वकीयपु-ण्यादितारतम्येन बुद्धिशुद्धिभेदात्प्रतिभातीत्यर्थ ॥ ॐ हीं कारास्थाननर्तक्यै नम् ॥

ह्रींकारग्रुक्तिकामुक्तामणिहींकारबाधिता । ह्रींकारमयसौवर्णस्तम्भविद्वमपुलिका ॥

ह्रींकारशुक्तिकामुक्तामणि । ह्रींकार एव शुक्तिका नील पृष्ठित्रिकोणाकारा, तस्या मुक्तिकेव मुक्ताफलामवाभिन्यज्य-माना— यथा स्वातीमहानश्रक्त सर्वदेशेषु मधसघात्पतज्ञल विन्दु शुक्तिकान्त पतित समुद्रदेशिवशेषे मुक्ताकारेण परिणमते, तथा मक्त्वरजस्तमोगुणात्मकह्रीबीजावच्लेदेन म नोहरवाचामगोचरसुन्दरतरपरदेवतामूर्या मर्वगतमपि चै-तन्य विशिष्याभिन्यज्यते । तथा च मौक्तिकार्थिना शुक्त्यु पाद्यन्तत् परदेवतासाक्षात्कारेप्सूना ह्रींकारोपाद्यानमाव इयकमिति भाव ॥ ॐ ह्रींकारशुक्तिकाभुक्तामणये नमः॥

हींकारबोधिता । सिद्धे पदार्थे इन्द्रियादिसबन्धे सति स्वत एव ज्ञानोत्पत्तिदर्शनाम् ज्ञाने विधिरपेक्षित , क्रियाफ-छत्वाभावात् । तर्हि नित्यापरोक्षधर्मोदिज्ञानवत् शुद्धश्रद्धा-भेद वेदैकदेशहींकारेणैव बोध्यते, अज्ञातज्ञापकत्वेन वदस्य स्वत प्रामाण्या + युपगमात्, परचैतन्यस्य च ज्ञायमानस्य परमानन्द्रूपतया पुरुषार्थरूपत्वात् । अत ह्वींकारेणैव मू ळमन्त्रात्मना बोधिता ज्ञापिता। हकाररेफेकाराणा व्यस्तत्व दशाया भिन्नभिन्नार्थकाना मेलने हींकारात्मना परिणामे सिबदानन्दस्वरूपश्रीत्रिपुरसुन्दर्या तदर्थत्वेन अद्वैतस्वरूप तया प्रतिभानात् । 'नान्योऽवोऽस्ति द्रष्टा' 'इद सर्वे यदयमात्मा ' ' एक एव तु भूतात्मा भूते भूते व्यवस्थित । एकधा बहुधा चैव दृश्यते जलचन्द्रवत् ' इत्यादिश्रुते । ' आत्मा वा अरे दृष्टव्य ' 'तद्विजिज्ञासस्व ' ' आत्मान पदयेत्' इत्यादिछिङ्छोट्तव्यप्रत्ययानामईतार्थकतया न वि धित्वमिति सिद्धान्त ॥ ॐ हींकारबोधितायै नमः ॥

हींकारमयसौवर्णस्तम्भविद्रुमपुत्रिका । पिङ्गलेष्ट्रध्वीरेणु सुवर्णमित्युच्यते । अनुच्छिद्यमानद्रवत्वस्य नैमित्तिकत्वेऽपि तैजसान्तर प्रदीपप्रभादाववर्शनात् । पदार्थान्तरस्रयोगे रज तादिवद्तितेज सयोगात् भस्मभावापत्तेश्च हरिमणौ छोह्छे

रूयत्वाभाववत्त्वेऽपि पार्थिवत्ववद्त्र पार्थिवत्वे बाधाभावात् । द्रवत्वस्याद्कस्वभावत्वन तत्कायपृथिव्यामपि उपलम्भोपप त्तेश्च । तद्विकार , सौवणश्चासौ स्तम्भश्च । सौवर्णस्तम्भस्य नवरत्नमण्डपभारवाहित्वे सति तद्भिन्नत्वेन तद्छकारभूतत्व स्येव गाधर्म्यस्य ह्रींकारेऽपि जगदाश्रयत्वे मति तत्कारणत्वे सति तदन्तर्भूतत्वे सति परभानन्दजनकत्वस्य सत्त्वेन ह्यांका रमय इत्यभेदोपचार प्रदीपाळकारचोतनार्थ इति ज्ञातन्यम्। हींकारे उपमेये मयगब्देनोपमानाभेदकरूपनात् । तस्मिन्व चित्रपिङ्गप्रधानरूपे तत्सबन्धितया विद्वमपुत्रिकेव प्रतीय माना विद्वुमन प्रवालन कृता पुत्रिका सालभिक्तका । मौव र्णस्तम्भशब्द उपलक्षण भित्त्यादीनाम् , प्रायस्त्वदर्शनात् तदु पादान स्वत मनोज्ञस्य स्तम्भस्यातिशयदर्शनीयतायै। दुर्छ भतरप्रवालपुत्रिका स्तम्भमण्टप तत्स्वामिन तहश च प्रकृ ष्टीकरोति तथा श्रीपरदेवतापि रूढ्यैतद्वीजाथतया तदव च्छित्रा सती तदादीन सर्वोन भूषयति सफलीकरातीत्यथ ॥ 🥉 ह्रींकारमयसौवर्णस्तम्भविद्वमपुत्रिकायै नमः ॥

ह्रीकारवेदोपनिषद्भीकाराध्वरदक्षिणा। ह्रीकारनन्दनारामनवकल्पकवछरी॥ ८७॥

हींकारवेदोपनिषत् । वेद्यन्ते ज्ञायन्ते सर्वे पदार्था अनेनेति वेद । जास्येकवचनम् । हींकार एव वद । ज्ञापकत्वाविशेषान् । तस्य उपनिषद्धेदान्तभाग लक्ष्यार्थी वा, तत् ब्रह्मोपनिषत्परमिति श्रुत । कर्मोपासनाज्ञानका-ण्डभेदेन चत्वाराऽपि वेदा क्षिप्रकारा । 'तमेत वदानुव चनेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति ' इति वाक्येन ज्ञानसाधनतया कर्मोपासनयो विनियुक्तत्वात्, 'अन्धतम प्रविशनित ये Sविद्यासुपासते । ततो भूय इत्र ते तमो य उ विश्वाया रता ' इति श्रुद्या तदुभयो ससारफळकत्वेन निन्दितत्वाच, 'आत्मान चेद्विजानीयादयमस्मीति पुरुष । किमिच्छन् क स्य कामाय शरीरमनुसञ्बरेत् ' 'आत्मकाम आप्तकाम ' इत्यादिश्रुतिभ्य अद्वैतज्ञानोत्पादकवेदभागस्योपनिषच्छब्द वान्यस्य मोक्षफलकत्वेन फलप्रतिपादनात्तदुभयप्रतिपादक वदभागापेक्षया श्रेष्ठत्वम् , लाके साधनापेक्षया फलस्य श्रष्ठत्व नात्तमत्वप्रसिद्धे । तथा च पूर्वकाण्डद्वयार्थस्य जन्यतया तत्प्रतिपादकवेदभागस्योपनिषच्छेषत्ववत् हींकारस्यापि पर-देवताप्रकाशकत्वेन तच्छेषत्वात्तस्या प्राधान्यमुक्तमिति द्रष्ट व्यम् । वेदान्तेषूपनिषच्छब्न तज्जन्यतारूपशक्यसबन्धेन प्र वर्तते । मुख्यया वृत्त्या तु ब्रह्मविद्यायामेव । तथा हि—उप

शब्द समीपदेशार्थक । ब्रह्मण्यध्यस्तमायासमीपदेशक
तत्पदार्थप्रतिबिम्बतमिवद्योपाधिकचैत-य जीवशब्दवाच्यसुप
शब्दार्थ स्रक्षणया प्रतिपायते । नि शब्द षद् इति पदस्य
विशेषणम् । सन् इति पद् सदनगत्यवसादनेषु मवति ।
तथा च उपशब्दवाच्यो जीव अविद्या निहत्य त्यक्त्वा
ब्रह्मस्वरूपेण निषीदति वर्तत इति उपनिषदित्येकोऽर्थ ।
जीव ब्रह्मस्वरूपेण अवसीदति परिसमाप्रोतीति तृतीयोऽथ ।
यसुपनिषच्छब्दस्य ब्रह्मविद्यावाचकत्वेन प्रसिद्धस्य तद्वाच
कवेदमागे स्रक्षणवत्त्वेऽप्युपनिषच्छब्दवाच्यो भवति । तथा
च ह्रींकार एव वेद तस्य उपानषद्रधानमूता ब्रह्मविद्ये
त्यर्थ । ॐ ह्रींकारवेदोपनिषदे नम् ॥

हींकाराध्वरदक्षिणा। हींकार एव अध्वर यज्ञ तस्य दक्षिणा समाप्तिसाधनम्, दक्षिणाया दत्ताया यज्ञसमाप्ति दर्शनात् । हींकारस्यापि जप यजनात्मकतया अध्वान राति गच्छतीत्यध्वर मार्गसाधक इत्यर्थ । दक्षिणापद फळवाचि ऋत्विग्व्यापाराणा दक्षिणाफळत्वदर्शनात् । हीं काराध्वरस्य हींकारजपयज्ञस्य दक्षिणा फळसाधनीभूतपुरु षार्थरूपा । अथवा हींकाराध्वरस्य दक्षिणा पत्नी, । मखस्य दक्षिणा पत्नी 'इति वचनान्।' ज्ञानयक्षेन तेनाहमिष्ट स्या मिति मे मिति 'इति भगवद्वचनात्। दींकारलक्ष्यार्थक्षान-मेव हींकाराध्वर हींकारज्ञानयज्ञ, 'प्रधान दक्षिणा मखे' इति वचनात् दक्षिणावत्फलभूतत्वेन प्रधानभूतेति वा। दे वतोइशेन द्रव्यत्यागा याग इत्युच्यते। त्यक्तद्रव्यस्य अग्री प्रक्षेपा होम। ऋत्विगुदेशन वद्यामथिवभागो दक्षिणा। अ-र्थिभ्य वेदिबिहेर्देशेऽर्थविभागो दानमिति तेषा भेद ॥ ॐ हींकाराध्वरदक्षिणायै नम ॥

हींकारनन्दनारामनवकल्पकवछरी। नन्दयत्यानन्दयती
ति नन्दन स चासौ आरामश्च तथा। देवेन्द्रोद्यान विचि
त्रस्वरूपतया विजातीयार्थकत्वात्। हींकार एव नन्दना
राम सुस्वकर्तृबिश्रामभूमि, तस्य नवा नृतना अतिकोमछे
त्यथ । कल्पयतीति कल्पका कल्पका च सा वह्नरी चेति
तथा । देवोद्याने विद्यमानाना वृक्षगुल्मछतातृणादीनाम्
एतह्नोकातिशायिपुष्पफछादिमन्त्वेऽपि न सर्वोत्तमताप्रसिदि । कल्पवल्ल्यास्तु यथाकमे यथासेवसुपासकना सर्वार्थप्रदानशक्तिमन्त्वेन सर्वोत्कृष्टता। तथा ब्रह्मविष्णुकृद्राणा
तद्वाचकवर्णभेदानाम् अन्योन्यसबन्धतया एकत्र प्रतीयमा
नत्वेन चिरजीवित्वफछादिप्रदानेन आनन्दकतया ससारता

पशामकत्वेन च ह्राँकारस्य नन्त्रनापमा । तत्र सर्वाथप्रदा स्त्वेन कामेश्वरालिङ्कितकोमलतरसुन्दरमृत्या विशिष्टपुरुषा र्थचतुष्ट्यकल्पनन सगुणिनर्गुणोपासकाना तद्दवतात्मना प्रा धान्येन समष्टिक्षपतया सादद्येन नवकल्पकवल्पतियुन्यत इति भाव ॥ ॐ ह्रीकार्नन्दनारामनवकल्पकवल्ल्ये नम ॥

ह्रींकारहिमवद्गद्गा ह्रींकाराणीवकौस्तुभा। ह्रींकारमन्त्रसर्वस्वा ह्रींकारपरसौख्यदा॥

ह्मिंकारहिमवद्गङ्गा । हिमान्यस्मिन् सन्तीति हिमवान्
शीतलपर्वतराज । ह्रींकारस्य अमृतादसाधकतया शीत
लता बोध्या । तस्माद्गङ्गोव पावनी सर्वपुरुषार्थप्रदा
मन्त्रद्वतात्मनाभिन्यक्तेत्यर्थ ।। ॐ ह्रींकारहिमवद्गङ्गायै
नषः ।।

हींकाराणिवकीस्तुभा । कौस्तुभ क्षीराव्धिजनमसु चतु देशरत्नेषु यथा श्रेष्ठ सर्वाधिकप्रकाशादिगुणतया, तथा पर देवतापि अपारमहिमापिरिच्छिन्नहींकारमन्त्रवेदात्वेन तिन्न क्पना सती 'अत्राय पुरुष स्वय ज्योति ' इति श्रुते स्वय प्रकाशतया विद्योतत इसर्थ । अत्र कौस्तुभहृद्यस्य छक्ष्मी

पतित्वसर्वदेवोत्तमत्वसकळसुन्दरतमत्वगुणा इव विष्णो ह्याँ कारार्णविवद्योतमानहींकारदेवतोपासकस्यापि नारायणाभेदेन श्रीकान्तत्वादिधर्मो स्वत एव मिध्यन्तीति कौस्तुभपदन ध्व नितमिति द्रष्टव्यम ॥ ॐ हींकारार्णवकौस्तुभाये नम ॥

ह्रींकारमन्त्रसर्वस्वा । सर्वाणि च तानि स्वानि च धना नि अणिमाद्यष्टेश्वर्यजनकत्वादीनि तानि तथा । ह्रींकारघटि ता द्वींकारो वा तेषा सर्वस्वा सक्छसपत् सर्वार्थसाधकश किरित्यर्थ ॥ ॐ ह्रीकारमन्त्रसर्वस्वायै नमः ॥

हींकारपरसौख्यदा । हींकारपरा हींकारमन्त्रजपपरा हींकारघटितश्रीविद्याजपपरा वा । तेषा सौख्य चतुर्विधपुर षार्थप्राप्तिजन्यानन्द तह्दातीति तथा । हींकाराणा न्यष्टि रूपण वाच्यार्थना त्रिमूर्तीना पर सौख्य सामरस्यसुख एकी भावानन्द ददातीति वार्थ । 'यत्र नान्यत्पश्यति नान्य च्छूणोति नान्यद्विजानाति स भूमा । यत्रान्यत्पश्यत्यन्य च्छूणोत्यन्यद्विजानाति तद्द्पम्' 'नाल्पे सुखमस्ति' इति, 'आनन्द ब्रह्मणो विद्वान् न विभेति कुतश्चन' इति 'यदा ह्यवेष एतस्मित्रहृश्चेऽनात्म्येऽनिकक्तेऽनिल्यनेऽभय प्रतिष्ठा विन्दते । अथ सोऽभय गतो भवति', 'विज्ञानमानन्द ब्रह्म रातिदातु परायणम्' इत्यादिबहुश्रुतिभ्य अखण्डसिद्या नन्दब्रह्मस्वरूपतया सैव फल भवति, अन्यक्वानादन्यफल प्राप्तेरयोगात् । 'ब्रह्म वद ब्रह्मैव भवति' 'तरित शोकमा त्मिवत्', 'येन मामुपयान्ति ते । तषामह समुद्धर्ता मृत्यु ससारसागरात्' 'ब्रह्मैव सन ब्रह्माप्यति' इत्यादिश्रितिस्यृ तिज्ञतेभ्य स्वस्क्रपप्राप्तरेव पुरुषार्थस्य प्रदातृत्व सिद्धम् ॥ ॐ हींकारपरसौरूयदायै नम् ॥

> इति श्रीमत्परमहसपरिवाजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगव त्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमञ्छकरभगवत कृतौ श्रीछिलतात्रिशतीभाष्यम् सपूर्णम् ॥

इस्रेव ते मयाख्यात देव्या नामशतत्र्रथम् । रहस्यातिरहस्यत्वाद्गोपनीय त्वया मुने ॥ शिववणीनि नामानि श्रीदेव्या कथितानि हि । शक्यक्षराणि नामानि कामेशकथितानि च ॥ डभयाक्षरनामानि द्युभाभ्या कथितानि वै । तद्व्यैप्रीथित स्तोत्रमेतस्य सहश किम्र ॥ ३ ॥ नानेन सहश स्तोत्र श्रीदेवीप्रीतिद्यकम् । लोकत्रयेऽपि कल्याण सभवेत्रात्र सशय ॥ इति हयमुखगीत स्तोत्रराज निशम्य प्रगलिनकलुषोऽभूचित्तपर्याप्तिमेत्य। निजगुरुमथ नत्वा कुम्भजन्मा तदुक्त पुनरिषकरहस्य ज्ञातुमेव जगाद॥ ५॥

अश्वानन महाभाग रहस्यमि मे वद ।
शिववणीनि कान्यत्र शक्तिवणीनि कानि हि ॥
उभयोरि वणीनि कानि वा वद देशिक ।
इति पृष्ट कुम्भजेन हयग्रीवोऽवदत्पुनः ॥ ७ ॥
तव गोष्य किमस्तीह साक्षाद्म्यानुशामनात ।
इद त्वितरहस्य ने वक्ष्यामि शृणु कुम्भज ॥
णनिव्ञानमात्रेण श्रीविद्या सिद्धिदा भवेत् ।
कत्वय हब्रय चैव शैवो भागः प्रकीर्तितः ॥ ९ ॥
शाक्त्यक्षराणि शेषाणि हींकार उभयात्मकः ।

एव विभागमञ्जात्वा ये विद्याजपञ्जालिन ॥

न तेषां सिद्धिदा विद्या कल्पकाटिशतैरपि। चतुर्भि शिवचकैश्र शक्तिचकैश्र पश्रभि ॥

नवचकैश्च ससिद्ध श्रीचक शिवयार्वेषु । त्रिकोणमष्टकोण च दशकोणद्वरा तथा ॥ १२॥

चतुर्दशार चैतानि शक्तिचक्राणि पश्च च। बिन्दुश्चाष्टदल पद्म पद्म पोडशपतकम् ॥ १३॥

चतुरश्र च चत्वारि शिवचकाण्यनुक्रमात्। त्रिकाणे बैन्दव श्लिष्ट अष्टारेष्टदलाम्बुजम्॥

द्शारयो षाडशार भूगृह भुवनाश्रके। शैवानामपि शाक्ताना चक्राणा च परस्परम्॥

अविनाभावसवन्ध यो जानाति स चक्रवित् । त्रिकोणरूपिणी शक्तिर्विन्दुरूपपर शिव ॥

अविनाभावसबन्ध तस्माद्धिन्दुन्त्रिकोणयो । एव विभागमज्ञात्वा श्रीचक यः समर्चेयेत् ॥ न तत्फलमवामोति ललिताम्बा न तुष्यति । ये च जानन्ति लोकऽस्मिन्श्रीविद्याचक्रवेदिनः॥

मामान्यवेदिन सर्वे विद्योषज्ञोऽतिदुर्रुभ'। स्वयविद्याविद्योषज्ञो विद्योषज्ञ समर्चयेत्॥१९॥

तस्मै देय तनो ग्राह्ममदाक्तस्तस्य दापयेत्। अन्धनमः प्रविद्यान्ति येऽविद्या ससुपासते ॥

इति श्रुतिरपाहैतानविद्योपासकान्पुन । विद्यान्योपासकानेव निन्दत्यारुणिकी श्रुति ॥

अश्रुता सश्रुतासश्च यज्वानो येऽप्ययज्वनः। स्वर्थन्तो नापेक्षन्ते इन्द्रमग्निं च ये विदुः॥

सिकता इव मयन्ति रिहमभि समुदीरिताः। अस्माल्लोकाद्मुष्माचेत्याह चारण्यकश्चृतिः॥

यस्य नो पश्चिम जन्म यदि वा ज्ञाकर स्वयम्। तेनैव लभ्यते विद्या श्रीमत्पश्चद्द्याक्षरी॥ इति मन्त्रेषु बहुधा विद्याया महिमोच्यते । माक्षेकहेतुविद्या तु श्रीविद्या नात्र सदायः॥

न जिल्पादिज्ञानयुक्ते विष्ठच्छव्द प्रयुज्यते । माक्षेकहेतुवित्रा मा श्रीविचैव न सञ्चय ॥

तसाहिद्याविदेवात्र विद्वान्विद्वानितीर्थते । स्वय विद्याविदे दद्यान्ह्यापयत्तद्गुणानसुधी ॥

स्वयविद्यारहस्यज्ञो विद्यामाहात्म्यवेद्यपि । विद्याविद् नार्चयेचेत्को वा त पूजयेज्जनः॥२८॥

प्रसङ्गादिदमुक्त त प्रकृत श्रृणु कुम्भज। य कीर्नयत्मकुद्भक्त्या दिव्यनामशतत्रयम्॥

तस्य पुण्यमह वक्ष्ये श्रृणु त्व कुम्भसभव। रहस्यनाममाहस्रपाठे यत्फलमीरितम् ॥ ३०॥

तत्फल कोटिगुणितमेकनामलपाद्भवेत्। कामेश्वरीकामेशाभ्या कृत नामशतत्र्रयम्॥ नान्येन तुलयेदेतत्स्तोत्रेणान्यकृतेन च । श्रिय परम्परा यस्य भावि वा चोत्तरोत्तरम् ॥ तेनैव लभ्यते चैतत्पश्चाच्छ्रेय परीक्षयेत् ।

या स्वय शिवयोर्वेकपद्माभ्या परिनिःसृता। नित्य षोडशसख्याकान्विपानादौ तु भोजयेत्॥

अस्या नाम्ना त्रिशत्यास्तु महिमा केन वर्ण्यते ॥

अभ्यक्तास्तिलतैलेन स्नातानुष्णेन वारिणा। अभ्यच्ये गन्धपुष्पाचै कामेश्वर्यादिनामभिः॥

सूपापूपै शर्कराचै पायमै फलसयुतै । विद्याविदो विशेषेण भोजयेत्षोडश द्विजान् ॥

एव निलार्चन कुर्यादादौ ब्राह्मणभोजनम् । त्रिशतीनामभि पश्चाद्वाह्मणान्त्रमशोऽर्चयेत्॥

तैलाभ्यङ्गादिक दत्वा विभवे सति भक्तित । शुक्कप्रतिपदारभ्य पौणेमास्यवधि कमात्॥ दिवसे दिवसे विप्रा भोज्या विज्ञातिसख्यया। दञ्जाभि पश्चभिवीपि त्रिभिरेकेन वा दिनै ॥

र्त्रिश्चात्षष्टि शतविष्रा सभोज्यास्त्रिशत ऋयात् एव य' कुरुते भक्तया जन्ममध्ये सकुन्नर ॥

तस्यैव सफल जन्म मुक्तिस्तस्य करे स्थिरा। रहस्यनामसाहस्रभोजनेऽप्येवमेव हि॥ ४१॥

आदौ नित्यबर्लि कुर्योत्पश्चाद्राह्मणभोजनम् । रहस्यनामभाइस्रमहिमा यो मयोदितः॥ ४२॥

सक्रीकराणुरत्रैकनाम्नो महिमवारिघेः। वाग्देवीरचिने नामसाहस्रे यद्यदीरितम्॥४३॥

तत्फल कोटिगुणित नाम्नोऽप्येकस्य कीर्तनात्। एतद्न्यैर्जपै स्तोत्रैरर्चनैर्यत्फल भवेत्॥ ४४॥

तत्फल कोटिगुणित भवेन्नामदातत्रयात्। बाग्देवीरचिनास्तोत्रे नाहक्यो महिमा यदि॥ साक्षात्कामेशकामेशिकृतेऽस्मिन्गृश्चतामिति । मकृत्सकीर्तनादेव नाम्नामस्मिञ्जातत्रये ॥४६॥

भवेचित्तस्य पर्याप्तिन्यूनमन्यानपेक्षिणी। न ज्ञातव्यमितोऽप्यन्यन्न जसव्य च कुम्भज॥

यद्यत्साध्यतम कार्य तत्तद्रथिमिद जपेत्। तत्तत्फलमवामोति पश्चात्कार्य परीक्षयेत्॥

ये ये प्रयोगास्तन्त्रेषु तैस्तैर्यत्माध्यते फलम् । तत्सर्व सिध्यति क्षिप्र नामविद्यानकीर्तनात् ॥

आयुष्कर पुष्ठिकर पुत्रद वरुयकारकम्। विद्याप्रद कीर्तिकर सुकवित्वप्रदायकम्॥५०॥

सर्वसपत्प्रद सर्वभोगद सर्वसौख्यदम् । सर्वाभीष्ठपद चैव देव्या नामशतत्रयम् ॥५१॥

एतज्जपपरो भूयान्नान्यदिच्छेत्कदाचन । एतत्कीननसतुष्टा श्रीदेवी ललिताम्बिका॥

भक्तस्य यद्यदिष्ठ खान्तन्तरपूरयते धुवम्। तसात्क्रम्भोद्भव मुने कीर्तय त्वमिद सदा॥ नापर किंचिदपि ते बोद्धव्य नावशिष्यते। इति ते कथित स्तोल ललिताप्रीतिदायकम् ॥ नाविद्यावेदिने ब्र्यान्नाभक्ताय कदाचन। न शठाय न दुष्टाय नाविश्वासाय कर्हिचित्।। यो ब्रुयाञ्चिश्चातीं नाम्ना तस्यानधीं महान्भवत् । इत्याज्ञा शाकरी पाक्ता तस्माद्गोप्यमिद त्वया॥ लिलापेरितनैव मयोक्त स्तालमुक्तमम्। रहस्यनामसाहस्रादिष गोप्यमिद् मुने ॥ ५७ ॥ एवमुक्त्या इयग्रीव कुम्भज तापसोत्तमम्। स्तोबेणानन ललितां स्तुत्वा विपुरसुन्दरीम् ॥ आनन्दलहरीमग्रमानसः ममवर्ततः ॥ ५९ ॥

इति श्रीलिलतात्रिशतीस्तोत्र सपूर्णम् ॥



॥ श्री ॥

॥ नामानुक्रमणिका ॥

	वृष्ठम्		पृष्ठम्
ईकाररूपा	999	इश्वरवल्लभा	984
ईक्षणसृष्टाण्डकोटि	994	ईश्वराघीङ्गशरीरा	996
ईक्षित्री	198	ईश्वरोत्सगीनलया	190
ईडिता	294	इषात्स्मतानना	996
ईतिबाधाविनाशिनी	१९७	इहाविर्राहता	986
ईहगित्यविनिर्देश्या	994	एकप्राभवशालिनी	990
ईप्सितार्थप्रदायिनी	989	एकभाक्तमदर्चिता	1/1
ईशताण्डवसाक्षिणी	990	एकभोगा	9/4
ईशशक्ति	186	एकरसा	१८६
ईशाधिदेवता	198	एकवीरादिससे च्या	960
ईशानादिब्रह्ममयी	993	एकाक्षरी	१७५
ई ।शत्री	999	एकाग्रचित्तनिध्याता	1/2
ईशित्वाच ष्टसिद्धिदा	983	एकातपत्रसाम्राज्यप्रदा	164
ईश्वरत्वविधायिनी	993	एकानन्दाचदाकृति	909
ईश्वरप्रेरणकरी	१९६	एकानेकाक्षराकृति	१७७

३०२ लिखतात्रिशती

	पृष्ठम्		वृष्ठम्
एगान्तप्राजता	166	क्रशालिप्राणनायिका	२२४
एकाररूपा	१७५	कमनीया	169
एकैश्वर्यप्रदायिना	8/8	कमलाक्षा	989
एजदनेकजगदीश्वरी	9/9	कम्बुकण्ठा	२२६
एतत्तवित्यानि र्दे श्या	906	क्स्रियहा	१७४
एधमानप्रभा	911	करानिर्जितप छवा	२२६
एन कुटविनाशिना	974	करभारु	२२३
एलासुगा धचिकुरा	178	करणामृतसागरा	१७०
एवमित्यागमाबोध्या	9/0	कर्प्रवीरीमौरभ्यकछोलि	9 9 2
एषणार्राइताहता	968	कर्मपलप्रदा	904
कजलाचना	903	कमाादनाक्षिणी	908
कदर्पंजनकापाङ्गवीक्षणा	909	कलानाथमुखी	२२३
कदर्पावद्या	909	कलावनी	988
ककाररूपा	988	कलालापा	२२६
ककाराथा	२२	कलिदाषहरा	903
ककारिणी	२६४	कल्पवछासमभुजा	२२७
कचाजताम्बुदा	२२३	कल्मषञ्जी	900
कटाक्षस्या दक्षरणा	२२३	कल्याणगुणशालिनी	१६७
कठिनस्तनमण्डला	२२२	कल्याणरौलनिलया	१६८
कदम्बकाननावासा	909	कल्याणा	186
कदम्बकुसुमप्रिया	909	कल्या	२२२

	नामानुक	मणिका ।	३०३
	वृष्ठम्		पृष्ठम्
कस्त्रीतिलकाञ्चिता	२२८	कामश्वरालिङ्गिताङ्गी	२६७
कारूक्षितार्थदा	२७०	कामश्वराह्मादकरी	२६९
कान्ता	२२५	कामेश्वरी	२७०
का तिधूतजपापि	२२६	कारियत्रा	908
कामकाटिनिलया	२७	कारण्यविग्रहा	२२४
कामसजीवनी	२२५	नालह त्री	२२१
कामितार्थदा	४२१	का यलोला	ہ ور ل
कामेगी	२२ १	लपटा	२४२
कामेशोत्सगवासिनी	२६७	लकाररूपा	996
कामेश्वरगृहेश्वरा	५६ ९	लकारार्या	२३६
कामेश्वरतप सिद्धि	२६/	लकारिणी	१७१
कामेश्वरप्रणयिनी	२६८	लकुलेश्वरी	५४३
कामेश्वरप्राणनाडी	३६५	लक्षकाम्यण्डनायिका	२०१
कामेश्वरप्राणनाथा	र६८	लक्षणागम्या	२०२
कामेश्वरब्रह्मवित्रा	२६९	लक्षणोञ्ज्वलदि न्याङ्गी	400
कामश्वरमनाहरा	२६५	लक्ष्मणाग्रजपृजिता	२४०
कामेश्वरमन प्रिया	२६८	लक्ष्मीवाणीनिषविता	986
कामेश्वरमहेश्वरी	२७०	लक्ष्याथा	२०१
कामेश्वरविमोहिनी	२६८	लमचामरहस्तश्रीशार०	२४१
कामेश्वरविलासिनी	२६८	लघुसिद्धिदा	२३९
कामेश्वरसुखप्रदा	२६७	लङ्घयेतरामा	२३८

३०४ लखितात्रिश्ती

	वृष्ठम्		व्रष्टम्
लंबाह्या	408	ल घराकि	२७३
लजापदसमाराध्या	२४२	ल घसपत्समुन्नात	488
लतातनु	ی ر	ल धसुखा	२७७
लतापूज्या	५३ ६	लब्धहर्षाभिपूरिता	२७८
ल धकामा	२०२	लब्धातिशयसर्वोङ्गसौ द	र्या २७०
स्टब्स्	२७३	ल•धाहकारदुर्गमा	२७२
ल-धर्घी	५७१	लब्धेश्वर्यसमुन्नति	२७४
ल धनानागमस्थिति	२७६	लम्या	₹ ₹
लब्धपति	२७६	लम्येतरा	२४०
लब्धपापमनोद्ररा	२७२	लम्बिमुक्तालताञ्चिता	२ ३
लब्धमितसुलभा	280	लम्बोदरप्रस्	२०४
लब्धभोगा	२७७	लयवर्जिता	२ ४
लब्धमाना	483	लयस्थित्युद्भवश्वरी	२ ३ ६
लब्धयौबनशालिनी	२७७	ललनारूपा	909
लब्धरसा	288	लल तिकालसत्माला	२०
लब्धरागा	२७६	ललाटनयनार्चिता	२००
लब्धरूपा	२७१	ललामराजदलिका	२०३
लन्धलीला	ન્ હધ	लिता	१९८
लब्धवाञ्चिता	२७२	लसद्दाडिमपाटला	999
ल•धविभ्रमा	२७६	लाकिनी	999
लब्धवृद्धि	२७४	लाक्षारसस्वर्णा भा	२३९

	नामानु	३०५	
	पृष्ठम्		पृष्ठम्
लाङ्गलायुघा	२४१	समानाधिक नर्जिता	२६२
लामालामविवर्जिता	२३८	सर्वकर्ली	२१६
लावण्यशालिनी	256	सर्वगता	289
लास्यदर्शनसतुष्टा	२३७	सर्वज्ञा	294
सगहीना	२६३	सर्वेप्रपञ्चनिमात्रा	२६२
सकला	२५८	_	२१६
सक्लागमसस्तुता	२५६	सर्वभूषणभूषिता	२२०
सकलाधिष्ठानरूपा	२६१	सर्वमङ्गला	294
सकलेष्टदा	२६३	सर्वमाता	299
सकाररूपा	२१५	सर्वविमोहिना	296
सकाराख्या	२५५	सर्ववेदा ततात्पयभूमि	२५७
सगुणा	२६३	सर्वसाक्षिणी	२१७
सम्बदान दा	२५८	सर्वसौ ८यदात्री	216
सत्यरूपा	२६१	सर्वेह त्रा	२१६
सदसदाश्रया	२५७	सर्वाङ्गसु दरी	२१७
सदाशिवकुटुम्बिनी	२६०	सर्वात्मिका	२१७
सद्गतिदायिनी	२५९	सर्वाधारा	२१८
सनकादिमुनिध्येया	२६०	सर्वानवद्या	२१७
सनातना	२१६	सर्वारुणा	२१९
समरसा	२५६	सर्वावगुणवर्जिता	299
समाकृति	२६१	सर्वेशी	२१५

३०६ छितात्रिशती-

	पृष्ठम्		पृष्ठम्
सर्वोत्तुङ्गा	२६३	हरिब्रह्मे द्रविदता	299
साध्या	२५९	इरिसोदरी	२३४
इसग ति	२२८	हर्यक्षवाहना	292
इसम त्रार्थरूपिणी	२३३	हर्यश्वाद्यमरार्चिता	२१४
हसवाहना	२१२	हर्षप्रदा	२३२
हकाररूपा	299	हर्षिणी	२३४
हकारार्था	२२८	इलधुक्पूजिता	२११
इठात्कारहतासुरा	२३१	ह ल्यवर्जिता	२३१
इतदानवा	293	हस्रीसलास्यसतुष्टा	२३३
हत्यादिपापशमनी	293	इविभों क्री	२३२
हयमेधसमर्चिता	२१२	हस्तिकुम्भोत्तु ङ ्गकुचा	२१३
इयारूढासेविता ड्घि	२१२	हस्तिकात्तिप्रियाङ्गना	२१३
हय्यङ्गवीनहृदया	२३५	हाकिनी	२३१
हरप्रिया	299	हाटकाभरणोज्ज्वला	२२९
हराराध्या	298	हादिविद्या	२१४
इ रिकेशसखी	२१४	हानिवृद्धि विवर्जिता	२३५
हरिगोपारुणाशुका	२३६	हानोपादाननिर् ध क्ता	238
हरिणेक्षणा	299	हारहारिकुचाभोगा	२३०
इरित्पतिसमाराध्या	२३१	हार्दसतमसापहा	२३३
हरिदश्चादिसेविता	२१३	हालामदालसा	२१४
हरिद्राकुङ्कमादिग्धा	२१४	हाहाहूहूमुखस्तुत्या	२३५

	नामनुक्रमणिका ।		₩0\$	
	पृष्ठम्		वृष्ठम्	
र्री	२१०	ह्रीकारभास्कररुचि	२४८	
ह्रींकारकमले दिरा	२७९	ह्रींकारमणिदीपार्चि	२७०	
ह्रीकारक दरासिंही	२५३	ह्रींकारम त्रसर्वस्वा	२८९	
हींकारक दा ड ़ुरिका	२४९	ह्रींकारमन्त्रा	२०६	
हींकारकुण्डामिदिाखा	२४७	ह्रीकारमयसौवर्णस्तम्भवि ०	२८३	
र्ट्रीकारकोशासिलता	२८१	ड्रींकारमूर्ति	२७८	
र्हींकारचिन्त्या <u>व</u> ्रींकारचिन्त्या	२१०	द्रीकाररू पा	२०५	
र्ह्गिकारजपसुप्रीता	२०७	ट्रींकारलक्षणा	२०६	
ट्रींकारतरुमञ्जरी	२५५	ह्रीकारवाच्या	२०९	
र् ह्रींकारत च्यारिका	२८०	ह्यंकारवेदोपानेषत्	२८५	
्र ह्रीकारदीर्घिकाहसी	२५०	ह्रींकारवेद्या	२०९	
ह्रीकारदुग्घािघसुघा	२७९	ह्याँकारश शिच द्रिका	२४७	
 ह्रींकारन दनारामनवक ब	२८७	हींकारशुक्तिकामुक्तामणि	२८२	
ह्रीकारनिलया	२०५	ह्रांकारसुमनामाध्वी	२५४	
हीं कारप खर शुकी	२५२	र ह्राकारसौधशृङ्ककपोतिका	२७८	
ह्यांकारपरसौरयदा	२८९	्र ह्रीकारहिमवद्ग ङ्गा	266	
^ ह्रीकारपूज्या	२०९	र् ह्रीकाराङ्गणदीपिका	२५२	
्र ह्रींकारपीठिका	२०९	र् ह्रीकारादर्शविम्बिता	२८१	
ू ह्रींकारपेटकमणि	२८०	 ध्रीकाराचा	२४५	
्र ह्रीकारबीजा	२०५	्र ह्रांकाराध्वरदक्षिणा	२८६	
्र ह्रीकारवोधिता	२८३	र्ह्मकारार्णवकौ स्तु भा	266	

३०८

लखितात्रिशती

	वृष्ठम्		गृष्टम्
<u>हींकाराम्मोजमृङ्गिका</u>	२५३	ह्रापदप्रिया	२०७
हींकाराम्भोदचञ्चला	२४८	ह्रीपदामिधा	२०८
ह्यकारारण्यहरिणी	२५१	ह्रीपदाराध्या	201
ह्रींकारावालवछरी	२५२	ह्रींमती	२०७
ह्मितारास्थाननर्तकी	२८१	ह्रीमध्या	२४५
ड्रांकारि णी	२४५	हींविभूषणा	२०७
ड्रॉकॉरेकपरायणा	२५०	ह्रींशरीरिणी	२१०
ह्रांकारोद्यानकेकिनी	२५०	हींशिखामणि	२४६
ह्रांगभी	२०८	ह्रीं शीला	२०८

